वर्ष 28 | फाल्गुन-चैत्र | मार्च-2023 | अंक 3 (मासिक) | प्रकाशन उज्जैन
आर.एन.आई. नं. 0048570/29/30/1982
पोस्ट मालवा डिवीजन पी.आर.एन.नं.एम.डी. 08/2021-2023
मूल्य 10/- रुपये
मासिक प्रकाशन

आगमोद्धारक

प्रकाशन हर माह की 6 तारीख को

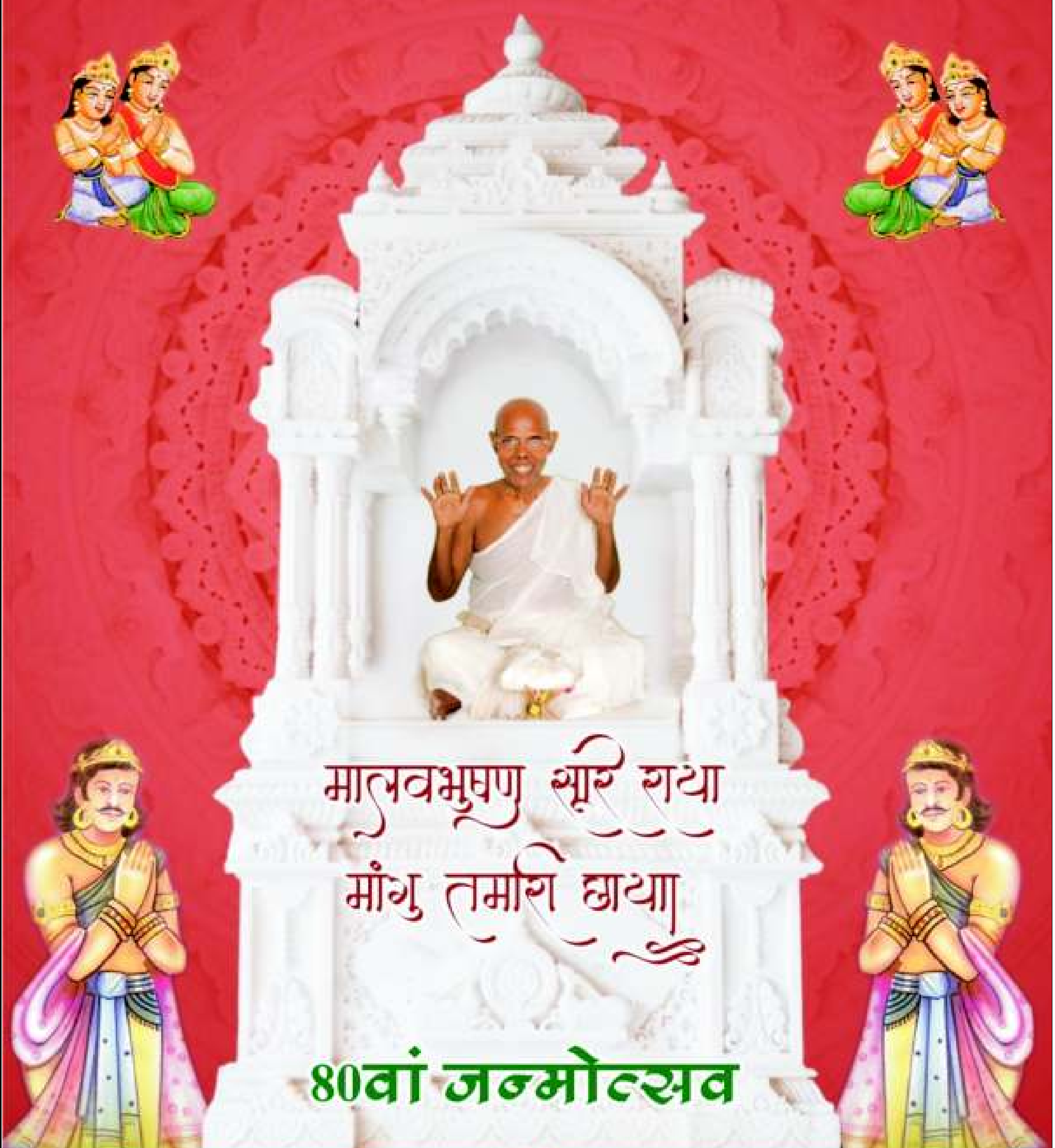

आगमोद्धारक

नमो नाणस्स नमो नमः

श्री अभ्युदय फ़ाउण्डेशन
उज्जैन का जैन हिन्दी मासिक

प्रधान सम्पादक
डॉ.सुभाष जैन, उज्जैन

सम्पादकीय कार्यालय
डॉ.सुभाष जैन
46, सखीपुरा, उज्जैन-456001 (म.प्र.)
मोबा. नं. 94250-91012, 8770884897
1-E-mail-Subash_3333@yahoo.co.in
2-E-mail-i.am.Subhashjain@gmail.com

इन्दौर कार्यालय
प्रफुल्लकुमार जैन "पप्पू"
1073, सुदामानगर, फूटीकोठी रोड़
इन्दौर-452009 (म.प्र.)
5057087, 5057067
मोबा. नं.-98260-10089

सदस्यता

आगमोद्धारक के सदस्य बनने वाले श्रीमानों से निवेदन है कि सदस्य के लिये शुल्क राशि बैंक ड्राफ्ट/चैक/M.O. से श्री सिद्धसेन दिवाकर चेरिटेबल ट्रस्ट, उज्जैन के नाम से सम्पादकीय पते पर भिजवाये। अन्य नाम से सदस्यता राशि स्वीकार नहीं की जायेगी। - **डॉ.सुभाष जैन**

(विद्या) माता की तरह रक्षा करती है, पिता की तरह हितकारी कार्यों में नियोजित करती है, पत्नी की तरह कष्टों का निवारण करके आनंद प्रदान करती है, लक्ष्मी का विस्तार करती है और सभी दिशाओं में कीर्तिमान बनाती है। इस प्रकार कल्पलता की तरह विद्या क्या-क्या नहीं करती (अर्थात सब कुछ प्रदान करती हैं)।

दिव्य आर्शीवाददाता
प.पू.मालव भूषण आचार्य श्री नवरत्नसागर सूरीश्वरजी म.सा.

मार्गदर्शक एवं प्रेरक
परम पूज्य आचार्य श्री विश्वरत्नसागर सूरीश्वरजी म.सा.

श्री अभ्युदय फाउण्डेशन, उज्जैन
अध्यक्ष- भाई श्री प्रफुल्लजी जवेरी, मुंबई (महा.)

शाश्वत संदेश

जहा सुणी पूइकण्णी, णिक्कसिज्जइ सव्वसो।
एवं दुस्सीस-पडिणीए, मुहरी णिक्कसिज्जइ॥

जैसे सड़े हुए कानों वाली कुतिया सब जगह से दुत्कारी जाती है, निकाली जाती है, उसी तरह दुःशील-दुश्चरित्र तथा गुरुजनों के, ज्ञानियों के प्रतिकूल आचरण करने वाला और वाचाल (तथाकथित) साधक सब जगह तिरस्कृत होता है, निकाला जाता है। - **उत्तरा. सूत्र**, 1.4

पाथेय

मैंने उन लोगों के उल्लास का अनुभव किया जो, हे परम स्वामी ! तुम्हें पूर्ण समर्पित है और उनका हर्षोल्लास नहीं है बाह्य अवस्थाओं पर निर्भर अपितु उनकी सत्ता में वह उल्लास स्वतः निहित है। तुम्हारे परमोच्च विधान के प्रति एक सच्चा आत्मसमपर्ण लाना है समस्त परिस्थितियों में एक परिष्कार एवं परिवर्तन सदा एक ही सद्वस्तु एक ही तथ्य चरम सत्य है और वह है तुम्हारे पवित्र नियमों का प्राकट्य एवं प्रसारण जो सर्व पदार्थों में, व्यक्तियों और उनके स्वभाव की क्रियाओं में बहुविध ढंग से अभिव्यक्त होकर लाता है एक समीकरण ! अथवा तुम्हारे द्वारा निर्धारित उन लक्ष्यों की उपलब्धि हेतु उन्हें करता है प्रेरित एवं अग्रसर, जो इस वर्तमान भौतिक जगत में उन्हें सौंपे गए हैं।

शुल्क सोपान

स्तम्भ	11,511/- रुपये
आजीवन	1000/- रुपये
पांच वर्षीय सदस्य	301/- रुपये
एक वर्षीय सदस्य	80/- रुपये
एक प्रति	10/- रुपये

नोट- आगमोद्धारक में प्रकाशित रचनाओं से सम्पादक का सहमत होना आवश्यक नहीं है।

वर्ष-28 फाल्गुन-चैत्र मार्च 2023 अंक-3

विषय सूची

1- शाश्वत संदेश, पाथेय 3

2- विषय सूची 4

3- गुरुदेव उच्चारण नहीं आचरण का दस्तावेज है- (सम्पादकीय)- डॉ.सुभाष जैन 5

4- सांच को आंच नहीं- साध्वी युगल निधिकृपा 6

5- पाप की सजा भारी-प.पू.आचार्य श्रीअरुणविजयजी म.सा. 7-8

6- चलता फिरता भगवान- डॉ. सुभाष जैन, नवरत्न का नाम आवेगा, राग भी जब तारक बनता है.... हे प्रभु...! 9-10

7- पूज्यपाद मालवोद्धारक आचार्य श्री चन्द्रसागर सूरीश्वरजी महाराजा 11-12

8- ऐसे अनेक नवरत्न इस धरा पर पैदा हो- डॉ. सुभाष जैन, नवरत्न मनस्वी तुम्हें नमन...!, संसार स्वार्थी है ?, शांति 13-14

9- क्यों निभ नहीं पा रहे है आज संबंध, मन करा सकता स्वर्ग-नरक की यात्रा, परित्राण 15-16

10-उपासना सफल होती है जीवन-साधना से, स्वार्थ और परमार्थ 17-18

11-कैसे करें समय-प्रबंधन ? बुद्धि-विलास धर्म नहीं-सत्यनारायण गोयनका 19-20

12-सहयोग-सद्भाव का एक अनूठा उदाहरण, अध्यात्म न्यायी राजा है.... 21-22

13-चारित्र से युक्त तप ही निर्जरा रुप है-शांतिलाल सगरावत, अनावश्यक न बोलें...! 23

14-प्रभु श्री पार्श्वनाथ दर्पण है- डॉ. सुभाष जैन 24

15-पंन्यास प्रवर श्री अभ्युदयसागरजी महाराज 25

16-भगवान श्री आदिनाथ का जीवन परिचय 26

17-आईए लोगस्स को जाने...! 27

18-लोभ, बेटों का दुःख, इक्कीस का दुःख.... - एस.सी.कटारिया 28

19-वर्गपहेली- 334 - जयंतीलाल जैन 29

20-ज्ञान गंगोत्री- 334-आ.प्रवर श्री मृदुरत्नसागरजी म.सा. 30

21-शासन-समाचार 31-41

22-हमारे तीज त्यौहार, सादर आमंत्रण, सारे देश में आगमोद्धारक, 42

संपादकीय

गुरुदेव उच्चारण नहीं आचरण का दस्तावेज है

कुछ पल जीवन में ऐसे आते है जिन्हें सिर्फ जिया जा सकता है। अनुकूल किया जा सकता है, उनको शब्दों में व्यक्त करना मुश्किल है। गुरुदेव पूज्यपाद आचार्य भगवंत श्री नवरत्नसागर सूरीजी म.सा. के सानिध्य का जो लाभ जीवन में मिला उसकी सुखद अनुभूति मैं आज भी जब करता हूं तो हाथों में रोंवाटें खड़े हो जाते है, लगता है पूज्यश्री मेरे आसपास ही कहीं है। गुरुदेव की अनुभूति मैं आज भी चित्र और चरित्र दोनों में देख पा रहा हूं, मैंने जीवन में गुरुदेव का आंखों से चित्र और मन से चित्त का अनुभव कर और पूज्यश्री के चरित्र से जीवन पवित्र कैसे किया जा सकता है समझा है? गुरुदेव के चित्र को रोज देखकर अनुभव होता है कि- गुरुदेव का सानिध्य आर्शीवाद आज भी सतत् मिल रहा है। गुरुदेव के नाम का उच्चारण करते, नारे लगाते गुरु भक्तों को देखता हूं तो मुझे यह अनुभव होता है कि **गुरुदेव उच्चारण नहीं आचरण का दस्तावेज है**। इसलिये वे आज भी आर्शीवाद बरसा रहे है पूज्यश्री किसी एक के नहीं थे वे सबके थे, सबके प्रति उनके हृदय में वात्सल्य भरा था। पूज्यश्री के वात्सल्य, प्रेम श्रद्धा और समर्पण से सीख लेकर हम भी अपने जीवन को वात्सल्य का मंदिर बना सकते हैं।

पथ देखत पथरा गई अंखियां गुरुदेव के जाने से लगता है कि एक पूरा युग बीत गया, आज भी लगता है कि पूज्यश्री हमारे बीच ही है, कहीं नहीं गए है, आपश्री का इंतजार व्यर्थ नहीं है, वे अब अनुभूति की ओर यादों की विरासत बन गये है। वे वीतरागी निष्प्रह, निर्मोही गंगा के पवित्र पानी के समान बहते है, पानी के समान रमते योगी गुरुदेव भौतिक रुप से चाहे हमारे बीच नहीं है किन्तु उनका आध्यात्मिक दिव्य स्वरुप आज भी हमारी यादों का खजाना भरकर हमें आर्शीवाद प्रदान कर रहा है। पूज्य गुरुदेव का पुण्य स्मरण करते हुए उनकी बात करुं तो तप के और ज्ञान के आलोक से दमकता प्रशस्त तलाट दर्पण सा चमकदार चेहरा तांबायी रंग, सम्मोहित करने वाली गहरी आंखें और रत्नत्रायी की अपूर्व आभा से हृदय के अन्तःस्तल को प्रकाशित कर देनेवाली दृष्टि ! सचमुच गुरुदेव मेरे लिए इस सृष्टि की अनुपम कृति थे। पूज्यश्री की दीर्घ साधना, अध्ययन, आत्मज्ञान और आत्मा का ध्यान रत्नत्रय और आगम सम्मत् 36 गुणों का निरतिचार, निर्दोष निःशंक पालन, धर्म प्रभावना सभी कुछ तो अनुपम उत्कृष्ट लाह्य और श्रद्धास्पद् था और हमेशा ही रहेगा।

अध्यात्म सरोवर के मानस हंस मालवा के संत शिरोमणि पूज्यपाद गुरुदेव आचार्य भगवंत श्री नवरत्नसागर सूरीजी म.सा.के बारे में पाठकों की जानकारी में और विश्वास में यह तथ्य भली भांति स्पष्ट है कि -पूज्यश्री एक मात्र ऐसे जैनाचार्य है जिनके परिचय में उनका कोई शिष्य पहले से नहीं था और नही आपश्री ने कभी उनसे दीक्षा लेने को कहा सभी शिष्य स्वतः पूज्यश्री के सम्पर्क में आये और पूज्यश्री के होकर रह गये। पूज्यश्री ने अपनी पहली नजर में अनोखी परामनो वैज्ञानिक अतः शक्ति से, हृदयवेधी दृष्टि से जांच परख कर परिजनों की सहमति से दीक्षा प्रदान की और महान शिल्पी ने सभी को चमकदार रत्न के रुप में जिनशासन को अनमोल भेंट दी, आज सभी शिष्य गुरुदेव की विरासत को सहजते हुए शासन प्रभावना की मिसाल बन गये है।

पूज्यश्री हमारे युग के श्रेष्ठ बिरले जैनाचार्यो में से एक विशिष्ट संत थे, वे आज कालीतीत होकर भी भक्तों के हृदय में विराजमान है और हमेशा रहेंगे, अध्यात्म की गहरी साधना से आपश्री ने अपने जीवन को संवरने के साथ अनेक भक्तों के जीवन में भी खुशहाली लाने का काम किया फिर भी पूज्यश्री यही कहत थे कि-मैं कुछ नहीं करता है, मैंने कुछ नहीं किया है। वे पीड़ितों का परित्राण करनेवाले थे। पूज्यपादश्री दृष्टि में दिव्यता के दर्शन की क्षमता थी आपश्री की साधना संतत्व की निष्काम व निःस्प्ही वीतरागी भावनाओं से भरी हुई थी, पूज्यश्री की करुणामयी आंखों में संसारी प्राणियों को दुःखों से दूर करने की वेदना थी पूज्यश्री के भाव दया से भरे रहते थे। कितने ही लोगों की अनेक तरह से गुप्त रुप से आपश्री ने सहायता कर उनके दु:खों को दूर करने का प्रयास किया था।

धर्म और मानवता के सच्चे प्रहरी कालजयी आचार्य प्रवरश्री को जन्म दिन पर स्मरण करते हुए आंखें भर आई है, पूज्यश्री की अनेक यादें स्मरण में जाग्रत हो उठी है। आपश्री को स्मरण करते हुए आपके पाद पदों में अपने विनय भाव को अर्पित करते हुए सादर भावांजलि।

यादों का एक हुजुम मेरे आसपास है।
मैं गुजरे वाकयात का ऐसाहनमंद हूं॥

-डॉ.सुभाष जैन

सौ बातों की एक बात से उद्वृत् :-

सांच को आंच नहीं

✻ साध्वी-युगल निधि-कृपा

काशी से थोड़ी दूरी पर एक गांव था जिसमें अधिकांश घर बुनकरों के थे। इसी गांव में सतपाल नामक एक बुनकर रहता था जो बहुत आस्तिक वृत्ति का था। वह मानता था, भगवान ही सब कुछ करता है, इन्सान तो उसके हाथों की कठपुतली है। कबीरपंथ होने से उसके जीवन का सिद्धांत था- **''सांई इतना दीजिए, जामे कुटुम्ब समाय। मैं भी भूखा ना रहूं, साधु न भूखा जाए॥''**

सतपाल का जैसा नाम था वैसे ही उसमें गुण थे। वह अपना व्यापार बहुत ही सच्चाई के साथ करता था। उसने अपने जीवन में न किसी के साथ छल-कपट किया न कभी किसी को ठगा था। यूं भी वह आवश्यक से अधिक धन को मूल्य नहीं देता था। वह कम्बल तैयार करके काशी में जाकर बेच आता था और उसकी जितनी कमाई होती थी उससे अपने कुटुम्ब का गुजर-बसर करता था। उसने जीवन में कभी कुछ संग्रह नहीं किया फिर भी उसके पास किसी प्रकार का अभाव नहीं था। एक बार वह अपने बनाए हुए दो कम्बल काशी में किसी बजाज के हाथ बेचकर आया। बजाज बड़े-बड़े तिलक-छापे लगाया करता था लेकिन वह **''मन मैला और तन उजला''** के अनुसार व्यवहार में सच्चा नहीं था। बजाज ने सतपाल से कम्बल रखवा लिए और कहा- **''दो-चार दिन के बाद आकर अपना हिसाब कर लेना।''** सतपाल ने सहज भाव से उसकी बात स्वीकार कर ली। सतपाल के जाने के बाद बजाज ने सतपाल को भोला जानकर उसे ठगने की योजना बना ली। लोगों को ठगना बजाज के बाएं हाथ का खेल था। कहते हैं, हर बुराई का अन्त होता है और एक दिन पाप का घड़ा अवश्य फूटता है।

दो-तीन दिन के बाद जब सतपाल बजाज के पास पैसे मांगने गया तब बजाज ने कहा- ***''मेरी दुकान में कल रात आग लग गई थी और तुम्हारे कम्बल भी उस आग में स्वाहा हो गये इसलिए मैं पैसे कहां से दे सकता हूं ? यदि तुम्हें मेरी बात पर विश्वास न हो तो बाजार के दूसरे दुकानदारों से पूछ सकते हो।''***

सतपाल ने दृढ़तापूर्वक कहा- ''श्रीमान ! मैं सच्चाई से व्यापार करता हूं। मैंने जीवन में कभी किसी के साथ छल-कपट नहीं किया इसलिये मुझे पक्का भरोसा है मेरे बनाए हए कम्बल कभी भी आग में नहीं जल सकते।''

बजाज ने झुंझलाकर कहा- **''कम्बल तो कम्बल है, आग यह नहीं जानती कि यह सतपाल के कम्बल है अतः इसे नहीं जलाना और यह बजाज का है तो इसे जलाना है। ''**इस तरह अपनी सच्चाई की धमकी देकर तुम मुझे झूठा बनाना चाहते हो।'' दोनों अपनी-अपनी बात पर अड़े हुए थे। जब उनका वाद-विवाद उग्र रुप धारण करने लगा तब लोगों की भीड़ एकत्रित हो गई। भीड़ में से कुछ लोगों ने बजाज की तरफदारी लेते हुए कहा- **''हां, इनकी दुकान में आग लग गई थी यह हमने अपनी आंखों से देखा है।''**

सतपाल ने अपनी सत्यनिष्ठा का दावा ऊंची आवाज में दोहराते हुए कहा- ''दुकान में चाहे आग लगी हो किन्तु सत्य को आग नहीं जला सकती। यदि आप लोग नहीं मानते तो मेरे कंधे पर यह कम्बल पड़ा है, इसे आप जलाकर देख लीजिए। अगर यह जल जाए तो मैं मान लूंगा मेरे दूसरे कंबल जो बजाज की दुकान पर थे वे जल गए होंगे।''

यह सुनकर एक बार बजाज थोड़ा सकपकाया लेकिन कुछ हिम्मत बटोरकर उसने कहा- ''ठीक है किन्तु ऐसे नहीं, पहले इस कम्बल को मिट्टी के तेल में भिगोना पड़ेगा फिर इसे आग लगाई जाएगी क्योंकि मेरी दुकान में भी मिट्टी का तेल पड़ा था, उससे भीगकर ही तुम्हारे कम्बल जले हैं। सतपाल ने फौरन कहा- ''मुझे इसमें कतई एतराज नहीं है।'' कहते है कम्बल को मिट्टी के तेल में खूब अच्छी तरह से भिगोकर जमीन पर डाला गया और उसमें आग लगा दी गई। भीड़ के सारे लोग फटी-आंखों से देख रहे थे। सबको पता था मिट्टी के तेल से कम्बल जलने ही वाला है किन्तु सबने उस दिन एक अद्भूत नजारा देखा। तेल जल गया, आग बुझ गई और कम्बल ज्यों का त्यों बेदाग है। झूठ जल गया, सत्य सिर उंचा किए सामने खड़ा है जो सत्य है वह न जलता है न गलता है। सत्यवादी बुनकर की जीत हुई। बजाज ने सिर नीचा करके कहा - ''मेरी दुकान में आग लग गई थी यह बात सच है किन्तु इस बुनकर के कम्बल उस समय मेरी दुकान में नहीं थे, वे मेरे घर पर पडे थे अतः वे जले नहीं है।'' ऐसा कहकर उसने सतपाल को दो कम्बलों की कीमत चुका दी और उस दिन से बजाज भी सत्य के मार्ग पर चलने लगा। भीड़ में खड़े सभी लोगों की जुबान पर एक ही बात उभर रही थी-**''सांच को आंच नहीं।''**

पाप की सजा भारी...!

***प.पू.आचार्यश्री अरूणविजयजी म.सा.**

गतांक से आगे...!

सजा या फल देने वाला ईश्वर नहीं है:-

पाप हम करें और पाप का फल देनेवाला ईश्वर मानें ? नहीं ! यह भी उचित नहीं है। ईश्वर एक मात्र परम विशुद्ध स्वरुप में आराध्य है। हमारी कर्म निर्जरा में आलंबन मात्र है। वह हमारे किये हुए पापों को माफ करने वाला भी नहीं है और पाप का फल देनेवाला या सजा देनेवाला भी नहीं है। आप पाप करें और वो क्यों माफी दें ? अच्छा मानो कि माफ करता है- तो ईश्वर का स्वरुप कैसा होगा ? उदाहरणार्थ एक मनुष्य ने किसी का खून किया है और वह ईश्वर की उपासना करके प्रार्थना करें और कहे कि- हे भगवान ! मुझे क्षमा करना ! और मान लो ईश्वर उसका अपराध माफ कर दें तो खूनी के लिए तो ईश्वर अच्छा सिद्ध होगा। परन्तु जो बेचारा मर गया है उसके लिए ईश्वर कैसा सिद्ध होगा ? वह मरने वाला भी दूसरे जन्म में जाकर ईश्वर को प्रार्थना करके यह कहे कि- हे भगवन् ! आप मेरे हत्यारे को कृपया माफ मत करना, मैं उसे मार कर बदला लेना चाहता हूं और आप माफ करने वाले ही है तो आज मैं भी उसे माफ कर आता हूं अतः मुझे जो भी हत्या का पाप लगे उसे आप माफ कर देना। अब ईश्वर क्या उत्तर देंगे ? और इस तरह लोगों में यदि एक गलत धारणा फैल गई कि- कैसा भी खून करो, कैसा भी पाप करो लेकिन ईश्वर के दरबार में जाकर माफी मांग लेंगे। बहुत ही याचना करके प्रार्थना करते हुए रोते-रोते ईश्वर के चरणों में लेट जाएंगे। ईश्वर तो वैसे भी दयालु करुणालु ही है। अतः वह हमारे ऊपर दया कर ही देगा हमें माफ कर देगा और हम छूटकर आ जाएंगे क्या ऐसी मान्यता या धारणा सही है ? आजकल ऐसी धारणा या मान्यता के अनुसार कई लोग चर्च में, मस्जिद में, मंदिरों में जाते है और अपने पापों की माफी मांगते हुए ईश्वर के चरणों में प्रार्थना करते हैं। याचना करते है। चलो तो तो फिर पाप का मार्ग खुल्ला हो गया। फिर तो सजा का प्रश्न ही नहीं रहा ? तो पाप का भय जैसा कुछ भी रहेगा ही नहीं ? फिर तो सभी हंसी-खुशी से खुल्ला-खुल्ला पाप करेंगे। इसका अर्थ तो यह हुआ कि ईश्वर भी पापीयों को हत्यारों को प्रोत्साहन देनेवाला सिद्ध हुआ। अतः पापीयों को खुल्ला रास्ता मिल गया। तो फिर लोग रोज पाप करेंगे और रोज ईश्वर के पास चर्च-मस्जिद और मंदिर में जाकर क्षमा मांग लेंगे। बस हो गया। और मंदिर में जाने की आवश्यकता ही कहां है। कहा ही है कि ईश्वर तो घट-घट व्यापी है। सर्वत्र रहता है। तो फिर मंदिर जाने का सवाल ही कहां है ? जहां कहीं भी माफी मांग लेंगे। बस हो गया। तो फिर कोई भी मनुष्य पाप करने से डरेगा ही नहीं। रुकेगा ही नहीं और पाप का प्रमाण सीमातीत बढ़ जाएगा इसलिए यह सारी मान्यता मिथ्या मान्यता है। गलत मान्यता है। मनुष्य के द्वारा खड़ी की हुई भ्रम जाल है।

उसी तरह पाप करके पाप की सजा-फल देने वाला भी ईश्वर को ही मानना यह भी भ्रम जाल है। क्यों भाई क्या हुआ ? जबकि आपने ईश्वर को क्षमा देनेवाला-माफ करने वाला है तो फिर पाप का फल देने वाला मानने की आवश्यकता ही क्यों पड़ी ? क्या ईश्वर ने सभी को माफ नहीं किया इसलिए ? तो क्यों सबको माफ नहीं किया ? क्योंकि ईश्वर तो दया का सागर है ? करुणालु है ? तो फिर सभी को क्यों माफ नहीं किया ? तो क्या ईश्वर पक्षपात भी करता है ? अरे ! जो पक्षपात करता है वह स्वार्थी कहलाता है ? तो क्या ईश्वर को पक्षपाती स्वार्थी मानेंगे ? एक को तो माफ करता है और एक को माफ नहीं करता है और सजा देता है ? तो यह स्वार्थवृत्ति और पक्षपात वृत्ति तो मानव वृत्ति है। मनुष्य का स्वभाव है और यदि वही ईश्वर का भी स्वभाव रहा तो ईश्वर और मनुष्य में क्या अन्तर रहा ? तो मनुष्य मनुष्य ही क्यों कहलाता है ? तो कल से मनुष्य को भी ईश्वर कहना प्रारंभ कीजिए। उसी तरह ईश्वर को स्वार्थी-पक्षपाती मनुष्य कहना प्रारंभ कीजिए तो फिर मनुष्य को ही ईश्वर मानना पड़ेगा और चूंकि मनुष्य ही प्रत्यक्ष दिखाई देता है जबकि ईश्वर तो प्रत्यक्ष दिखाई भी नहीं देता है तो ईश्वर को मानने की क्या आवश्यकता रही ? जबकि समान गुण-दोष और समस्त्रभाव है तो मनुष्य को ही ईश्वर माना जाय। इस तरह तो ईश्वर की सत्ता ही उड़ जाएगी। ईश्वर का अस्तित्व ही नहीं रहेगा ! और आज का मनुष्य कैसा है ? कितने पापों की बदबू उसके जीवन में से आ रही है। कितने ही हीन कक्षा के पाप कर रहा है ? और ऐसे मनुष्य को ईश्वर मानें तो फिर ईश्वर का स्वरुप ही पापी का हो जाएगा ? और वही पापी सिद्ध हुआ तो फिर दूसरे के पाप को कैसे माफ करने वाला कोई अन्य ईश्वर मानना पड़ेगा, उसके फिर कोई अन्य, उसके लिए फिर कोई अन्य, इस अनवस्था

दोष आने पर आपको अनन्त ईश्वर की कल्पना करनी पड़ेगी और जितने मनुष्य उतने ईश्वर यदि मानने जाओगे तो अनेकेश्वर की कल्पना माननी पड़ेगी। और यह अनेक ईश्वर की कल्पना मानने जाओगे तो एक ही ईश्वर है यह आपका पक्ष उड़जाएगा और अनेक ईश्वर की कल्पना मानने जाओगे तो मुण्डे-मुण्डे मतिर्भिन्ना के मत से किसी सिद्धांत का धर्म का कोई निश्चित एक स्वरुप भी नहीं रहेगा।

इसी तरह यदि आप ईश्वर को माफ न करनेवाला मानो, नहीं.... नहीं.... ईश्वर पाप की क्षमा नहीं देता है, माफ नहीं करता है ऐसा मानोगे तो व्यवहार में से ईश्वर की मान्यता ही उड़ जाएगी। लोक व्यवहार में ईश्वर की उपासना ही उड़ जाएगी और या यदि आप ईश्वर को सिर्फ पाप का फल-सजा देनेवाला मानोगे तो ईश्वर के उपर दयालु-करुणालु नहीं है, क्रूर है ऐसा आरोप आएगा। इससे तो ईश्वर का स्वरुप और भी विकृत हो जाएगा। ईश्वर पाप की सजा देनेवाला है ऐसा मानने पर कीचड़ को उठाकर अन्यत्र फेंकने वाले के पाप एक बार तो कीचड़ से गंदे हो ही जाएंगे। वैसे ही किसी पापी को सजा देने जाते संभव है कि ईश्वर को भी डांट-फटकार, मारपीट करने जाते समय कषाय करना पड़े, अध्यवसाय बिगड़े, लेश्या के बिगड़ने पर कई पाप दोष लगेंगे और इन पापों के लगने से यदि ईश्वर ही पाप से भारी हो जाय तो फिर क्या होगा? और ईश्वर रोज के कितनों के पाप की सजा दें? और लाखों-करोड़ों को यदि रोज पाप का फल सजा देता ही जाय तो ईश्वर को रोज का कितना पाप लगा? जैसे पोलिस या जेलर किसी अपराधी चोर को कोड़े मारे, हंटर-चाबूक मारे या घोड़ागाड़ी चलानेवाला जैसे घोड़ेको चाबूक मारता है तो क्या मारने के निमित्त क्रूरता नहीं बढ़ेगी? गुस्सा नहीं आएगा? अध्यावसाय और लेश्या विकृत-अशुभ नहीं होगी? और होगी तो इससे ईश्वर को कितना पाप लगेगा? और इतने पाप से यदि ईश्वर भारी होगा तो उनके पापों की सजा-फल कौन देगा? फिर आप दूसरे ईश्वर को फल देने वाले के रुप में कल्पना करके मानोगे तो फिर ईश्वर को फल देनेवाले के रुप में कल्पना करके मानोगे तो फिर उनको भी पाप लगने पर और तीसरे ईश्वर को मानना पड़ेगा, उन तीसरे ईश्वर को भी फल देनेवाला कोई चौथे के लिए कोई पांचवां.... और इस तरह सौ, हजार, लाख, करोड़.... असंख्य और अनन्त ईश्वर की भी कल्पना करनी पड़ेगी। इस तरह तो सारा ईश्वर का स्वरुप ही चौपट हो जाएगा। कोई निश्चित शुद्ध स्तवन ही नहीं रहेगा। तो फिर हम किसकी उपासना करेंगे? फिर ऐसे पाप से भारी होनेवाले ईश्वर की उपासना करने का मन ही नहीं होगा? बात भी सही है क्यों ऐसे पाप से भारी हुए ईश्वर की उपासना क्यों करें? तो फिर पाप से भारी संसार में लाखों मनुष्य है। उन्हीं की उपासना क्यों न कर लें? इस तरह पुनः मनुष्य को ही ईश्वर मानने की आपत्ति आएगी। फिर वही बात ईश्वर के अस्तित्व पर आपत्ति आएगी और ईश्वर का स्वरुप ही कुछ भी नहीं रहेगा और ऐसा स्वरुप मानोगे तो परमाधामी को भी ईश्वर के रुप में ही मानना पड़ेगा। क्योंकि वह परमाधामी सब को उनके पाप की सजा देने वाला होता है। तो फिर परमाधामी ही ईश्वर के रुप से सिद्ध हो जाएगा। लेकिन पुनः वही तर्क सब लगाइए। परमाधामी को भी पाप तो लगता ही है। तो फिर उसे उसके पाप की सजा देने वाला किसको मानोगे? क्या दूसरे परमाधामी को? नहीं? क्योंकि परमाधामी मरकर पुनः परमाधामी नहीं बनता है और पुनः तुरन्त नरक में नहीं आता है। तो वह तो अडगोलिक मनुष्य बनकर समुद्री किनारे पर उत्पन्न होता है। और मच्छीमार उन्हें पकड़कर घठ्ठी में गेहूं की तरह पीसते हैं। तो क्या परमाधामी को उसके पाप की सजा देने वाला मच्छीमार है ऐसा मानोगे? तो फिर मच्छीमार को कौन सजा देगा? उसके पाप का फल देने वाला किसको मानोगे? फिर आप कहोगे कि- ईश्वर को और ईश्वर का पाप लगने पर सजा देनेवाला कौन तो पुनः परमाधामी को? इस तरह तो परमाधामी को ईश्वर मानने की आपत्ति खड़ी होगी और परमाधामी का तो रुप-स्वरुप-दृश्य ही कैसा होता है वह तो नरक पृथ्वीयों में रहता है फिर वैकुण्ठ की सत्ता उड़जाएगी। इस तरह अनेक दोषों से ईश्वर का स्वरुप दूषित हो जाएगी। अतः सबसे अच्छा निर्दोष पक्ष यह है कि ईश्वर को हमारे पापों की माफी देनेवाला न मानकर ''कर्मसत्ता'' को ही मानें तो ही ये सब दोष टल जाएंगे। कोई आपत्ति नहीं रहेगी। **(आगे और भी है...!)**

❊ पटरियों पर तेज गति से भागता हुआ इंजन पीछे धुंआ छोड़ता हुआ चला जा रहा था। मैंने उससे पूछा- तुम इतना धुंआ क्यों छोड़ते चले जाते हो। तीखी आवाज में इंजन ने मेरी ओर देखते हुए कहा- जीवन की प्रगति और इसका परिष्कार करने के लिए विकृतियों का बहिष्कार कर छोड़ना जरुरी है।

◎ चलता फिरता भगवान ◎

* डॉ. सुभाष जैन

यह घटना मुझे सूरत में आचार्यश्री के चातुर्मास के समय ज्ञात हुई थी। शायद किसी फ्लेट में आचार्यश्री एक धार्मिक कार्यक्रम के लिये पधारे थे वह ***उस समय मुनिश्री मृदुरत्नसागरजी*** भी विराजमान थे। मैं भी वहां उपस्थित था। दोपहर में मैं जहां आचार्यश्री ठहरे हुए थे वहां पहुंचा ही था कि मुनिश्री मृदुरत्न सागरजी ने बुलवाया और बोले- ***सुभाषभाई ! देखो सामने जो नवयुवक खड़ा है उसके परिचय प्राप्त करो वह जैनेत्तर नवयुवक है और उससे मिलना आपके लिये उपयोगी रहेगा।*** मैंने कहा- कैसे ? तो मुनिश्री ने कहा- वह आचार्यश्री के प्रति वह बहुत श्रद्धा रखता है उसका अनुभव प्राप्त करो। मैं तत्काल उसके पास गया और अपना परिचय देते हुए मैंने बात का सिलसिला आगे बढ़ाया तो वह नवयुवक भी खुल गया। हम एक ओर कोने में दरी पर जाकर बैठ गये तब उसने बताया कि- ***मैं इन महात्मा को नहीं जानता था,*** उन दिनों मेरी आर्थिक स्थिति व्यापार में घाटा हो जाने से अत्यंत ही खराब थी ***सुबह को खाने की व्यवस्था हो जाये तो शाम की चिंता से मन भारी हो जाता था ऐसी घोर संकट वाली जिंदगी जी रहा था*** उधार मांगने वालों एवं तिरस्कार और अपमान करने वाली नजरों से बचने के लिये मैंने आत्महत्या का विचार बना लिया था उन्हीं दिनों में मेरे एक जैन गुजराती मित्र ने मेरा बहुत हौंसला बढ़ाया। एक दिन वह आया और बोला- देख मैं तेरी परेशानी को जानता हूं ***मैं भी दुःखी हूं पर तेरी मदद करने इतनी शक्ति मेरी नहीं है*** कि तेरी मदद कर सकुं आज जैन उपाश्रय में हमारे जैन साधुजी आये है एक बार तू उनसे मिल लें तो वह बोला- ***मैं उनसे मिलकर क्या करुंगा वे मुझे क्या देंगे ?*** तो मित्र बोला- ***तू चल तो सही, कम से कम तेरे बैचेन मन को कुछ देर शांति तो मिल ही जायेगी,*** आखिर दोनों मित्र उपाश्रय में पधारे आचार्य भगवंत श्री नवरत्नसागर सूरीजी महाराज के पास आये। दोनों ने वंदन किया। आचार्यश्री बोले- ***कहो भय्या कैसे आये हो ?*** तब जैन मित्र ने अपने मित्र की सभी परेशानियों से आचार्यश्री को अवगत कराया तो आचार्यश्री बोले- अरे भाई ! इसमें मैं क्या कर सकता हूं ? ***यह तो सब कर्मों का खेल है।*** तब जैन मित्र और उसका साथी बोला- नहीं साहेबजी आप सब कुछ कर सकते है। ***आपका आर्शीवाद मेरी जीवन नैय्या पार लगा सकता है ।*** आचार्यश्री को लगा इसकी परेशानी सही है। इसको सांत्वना की आवश्यकता है यह सोच आचार्यश्री ने उसे कुछ देर समझाया और बोले- ***मेरे पास देने को तो कुछ है नहीं पर आपकी आत्म शांति के लिये मैं आपको महामंत्र दे रहा हूं*** अगर आज से आप प्रतिदिन एक घंटा नियमित जाप करेंगे तो अच्छा रहेगा। युवक को और क्या चाहिये था। बोला- ***साहेबजी वैसे ही फुर्सत में हूं, करने को कुछ है नहीं।*** आपके कहे अनुसार मनभाव से एक घंटा रोज जाप करुंगा। बस अगले ही दिन से उसने जाप आरंभ कर दिया अभी दो-तीन दिन ही बीते थे कि जैसे चमत्कार हो गया, वह युवक सुबह जापकर घर में बैठा था कि उसका पुराना पार्टनर आया। वह युवक यह देख आश्चर्य चकित रह गया कि यह घर क्यों आया है। पार्टनर ने आते ही उस युवक से कहा- देख भाई ! मुझे तेरी परेशानी का पता चला है तो मैं आया हूं ***तुझे मुझ पर गुस्सा तो आ रहा होगा पर मैं भी क्या करुं तेरी स्थिति देखकर आया हूं।*** यह कुछ रुपये है तू अपना कुछ काम शुरु कर ले ***रुपये तेरी इच्छा हो तब लौटा देना ।*** युवक की आंखों से आंसु की धारा बह निकली वह बोला- ***भाई तूने मुझे मरने से बचा लिया है।*** दोनों ने अपने गिले शिकवे दूर किये। अगले दिन से उसने अपना कुछ कार्य आरंभ किया और देखते-देखते उसके हालत बदल गये ***अब जाप में उसकी श्रध्दाभक्ति और बढ़ गई थी।*** वह रोज ही आचार्य भगवंत को याद करता था, उस दिन जब वह मुझ से मिला था तब तो वह बहुत ही स्थिर हो गया था ***सब कुछ जम गया था पैसा भी जमा हो गया था अब बाजार में वह एक इज्जतदार पैसा वाला व्यापारी माना जाता था।*** वह मुझसे बोला- मैं गुरुदेव के दर्शन करने आया था और आप मिल गये। वह युवक भावविभोर

होकर बातें कर रहा था आगे बोला- ***सुभाष भाई ! मैंने भगवान के बारे में बहुत सुना है पर जीवित भगवान मैंने नहीं देखे है, हां स्थान-स्थान पर विभिन्न मूर्तियां देखी है, घरों में कैलेण्डर आदि देखे है जिन से मुझे पता चला कि ये राम है, ये कृष्ण है, ये हनुमान है, ये महावीर है, पर मैंने जिंदा चलता-फिरता भगवान देखा है तो वह आचार्यश्री में देखा है उन्हें देखकर मुझे लगता है कि भगवान होता है। मेरे लिये तो यही भगवान है।*** मैं तो इन्हें ही भगवान मानता हूं। उसके यह उद्‌गार सुन मैं भी आनंद से भर गया। ***ऐसे करुणा सागर थे हमारे आचार्य भगवंत।***

नवरत्न का नाम आवेगा

देखा है हमने नवरत्न को
हमने नहीं देखा ईश्वर को,
चंद्र, जिसमें समा गया,
हमने देखा है उस सागर को,
मोक्ष महल का वासी वो
इस धरा पर यायावर है
हमारी श्रद्धा, मेरे विश्वास
का नाम नवरत्नसागर है!!
मेरा मान हो तुम सम्मान हो तुम
शब्द तुम, मेरी आवाज ही तुम
अहसास तुम हो आभास भी तुम्हीं
मेरे अरमानों का आकाश भी तुम
इस युग का सौभाग्य है कि
गुरूवर इसमें जन्में
हमारा यह भाग्य की गुरूवर के
युग में हम जन्में
कलयुग में भी सतयुग गुरूवर से
जाना जावेगा।
कभी महावीर की श्रेणी में गुरूवर
का नाम आयेगा।
जब तक सबके अधरों पर करूणा
का पैगाम आयेगा।
तब-तब हम सबके मुख पर नवरत्न
का नाम आवेगा।

राग भी जब तारक बनता है....

राग का तो हमारे यहां निषेध है, तो फिर सब जीवों के प्रति स्नेह भाव कैसे हो सकता है ? जहां बिंदु का भी निषेध होता है वहां सागर का सुतराम् निषेध होगा ही। एक जीव के प्रति किया हुआ स्नेह अगर मारता है तो सब जीवों के साथ किया हुआ स्नेह कैसे तार सकता है ? जहर की एक बूंद भी अगर घातक बनती है तो जहर का समूह जीवन-प्रद बन जाय यह तर्क कोई किस तरह मान सकेगा ? ऐसे तर्क हमारे मन में पैदा हो सकते हैं, किन्तु रुपांतर का नियम अगर समझ लेंगे तो क्षण में सबका समाधान हो जायेगा।

जहर जरुर मारक है, किन्तु कुशल वेद उस जहर का रुपांतर करके जब दवाई बनाता है, तब वह दवाई जीवन-प्रद बन जाती है, जहर अमृत बन जाता है। इसे रुपांतर कहते हैं। दूध दस्त करता है, किन्तु दूध का ही रुपांतर दहीं-छांछ दस्त बंद करते हैं। यह रुपांतर है।

एक जीव का स्नेह डूबाता है, किन्तु सर्व जीवों का स्नेह तारता है। यह रुपांतर है। व्यक्तिगत स्नेह राग है, समष्टिगत स्नेह मैत्री है।

व्यक्तिगत स्नेह तो स्वार्थ है। किसी भी व्यक्ति या वस्तु को हम इसलिये चाहते हैं कि उस द्वारा हमारी स्वार्थपूर्ति या अहंपुष्टि होती है। जब स्वार्थपूर्ति या अहंपुष्टिपर चोट लगती है तब उसी वक्त हम उस व्यक्ति या वस्तु के साथ नाता तोड़ देते हैं। ऐसा स्नेह कैसे तार सकता है ?

हमें स्नेह का रुपांतर करना है, व्यक्तिगत प्रेम को विशाल बनाकर विश्वव्यापी बनाना है। स्व से कुटुंब पर, कुटुंब से गांव पर, गांव से देश पर और देश से सारे विश्व पर स्नेह फैलाना है। ज्यों-ज्यों स्नेह का व्याप बढ़ता जायेगा त्यों-त्यों धार्मिकता बढ़ती जायेगी । बाकी, स्वप्रेम तो कौन नहीं करता। बाघिन भी अपने बच्चे को प्रेम करती ही है न ?

गाय माता क्यों कहीं जाती है ? अपने बच्चे को दूध पिलाती है, इसलिये नहीं, किन्तु दूसरों को भी दूध देती है, इसलिये।

हे प्रभु ! तू अंधकार में दीया है ! तू गरीब का धन है ! तू भूखों का अन्न है ! तू प्यासे का पानी है ! तू अंधे की छड़ी है ! तू थके हुए की सवारी है ! तू दुःख में धैर्य है ! तू विरह में मिलन है ! तू जगत् का सर्वस्व है !

◉ पूज्यपाद मालवोध्दारक ◉
आचार्य श्री चन्द्रसागर सूरीश्वरजी महाराजा

पुष्प स्वयं सुन्दर है। उसे सुन्दरता का बाना पहनाने की आवश्यकता नहीं होती। पुष्प के सौंदर्य का वर्णन करना नहीं पड़ता, न ही उसकी याद में स्मृतिधाम बनाने होते हैं। फूल से प्रसारित सुवास ही उसका जीवन और दर्शन बन जाती है। उसे चाह नहीं होती कि कोई उसके पास आये और उसकी तथा उसकी महक की प्रशंसा करें। फूल की सुवास को संग्रहीत करने के लिये कलम कॉपी या केमरा सक्षम नहीं है। जैन शासन में ऐसा कई विभूतियों का उद्भव हुआ है, जिनकी साधुता की सुवास आज भी सर्वत्र फैली रही है। मालवोद्धारक पूज्य आचार्यदेव श्री चन्द्रसागर सूरीश्वरजी म. उन्हीं पुष्पों में से एक है, जिसकी सुवास पर जन साधारण सश्रद्धा सभक्ति दीवाने हैं।

वि.संवत् 1950 कार्तिक शुक्ला 11 के दिन अहमदाबाद (दोशीवाड़ा की पोल) में श्री जेसिंगभाई की धर्मपत्नी सौ.प्रधानदेवी की रत्नकुक्षी से अवतरित इस बालक का नाम चिमनलाल रखा गया। आर्य संस्कृति और धर्म संस्कृति के अनुरूप चिमनभाई का जीवन माता-पिता के सात्विक संस्कारों से सुन्दर और सुदृढ़ बना। बचपन से ही धार्मिक शिक्षा के प्रति आकृष्ट चिमनभाई दूज के चांद की भांति वृद्धिगत होते हुए **पूज्य आचार्य श्री विजयनीति सूरीश्वरजी म. के सम्पर्क में आए।** फ्लतः वे धर्म क्रियाओं में तत्वज्ञ आराधक के रूप में प्रसिद्ध हुए। धर्मक्रिया, तप और जप से जुड़े चिमनभाई के अन्तस्थल में संयम जीवन का बीजारोपण कब हो गया यह तो उन्हें भी ज्ञात नहीं हुआ। किंतु **युवा वय में माता-पिता के आग्रहवश उन्हें विवश होकर लग्नग्रंथि में आबद्ध होना पड़ा। आपकी जीवन संगिनी थी सौ. फूलकुंवर देवी।** संसारी जीवन व्यतीत करते हुए आप नियमित रूप से प्रतिक्रमण, पूजा, प्रवचन, श्रवण, आयंबिल आदि के माध्यम से अपने लक्ष्य से जुड़े रहे। आपकी आँखों में परमात्मा का शासन और रजोहरण (ओघा) ही तैरता रहता था। संयम प्राप्ति के लिये आपने अनेकविध अभिग्रह धारण किये।

व्यवसायार्थ बम्बई में बसकर आपने अपनी धार्मिक प्रवृत्तियां जारी रखी और संसारी अवस्था में ही अपनी तेजस्वी मुखमुद्रा तथा प्रभावशाली वक्तृत्व से सैकड़ों आत्माओं को धर्मानुरागी बनाया। पायधुनी स्थित श्री गोड़ी पार्श्वनाथ मंदिर में आप अपने कल्याण मित्रों का नेतृत्व करते हुए धार्मिक क्रियाओं के माध्यम से सभी को सरोबार कर देते थे। **आपने अनेक आत्माओं को वर्धमान तप की आराधना से जोड़कर स्वपुरूषार्थ से बम्बई कुभार टुकड़ा में आयम्बिल शाला की स्थापना की और सिद्धचक्र आराधक समिति का गठन किया। इस समिति द्वारा आज भी प्रतिवर्ष स्थान-स्थान पर हजारों आरधकों को ओली की आराधना करवायी जाती है।**

चिमनलाल पूज्य आगमोद्धारकसूरीजी की श्रुत समर्थता तथा संयम साधना से बहुत प्रभावित थे। परिणाम स्वरूप दृढ़ वैराग्य को धारण कर संसार रूपी कीचड से निकलने के लिये तड़फ्ने लगे। **परन्तु धर्मपत्नी फूलकुंवरदेवी की प्रबल मोहदशा एवं बाधक मनोवृत्ति मार्ग विरोध बनती रही। पत्नी एवं साले के भय से पूज्य आचार्य श्री विजयनीति सूरीजी म.आदि भी चिमनभाई को दीक्षित करने का साहस जुटा नहीं सके।**

एकदा कल्याण मित्रों के साथ पौषध व्रत करते समय चिमनभाई के मधुरकंठ सरस्वती प्रस्फूटित हुई। भावातिरेक में एकाग्र होकर वे स्तवन गा रहे थे 'मने संसार सेरी विसरी रे लो...।'

तब एक मित्र ने सहसा कटाक्ष किया। चिमनभाई! वास्तव में आपको संसार के प्रति सच्चा वैराग्य उत्पन्न हो गया है? घबराइए मत, हम भी तुम्हारे साथ है।

बस, अक्लमंद को तो इशारा ही काफि था। चिमनभाई ने सजाग हो, सभी को संयम स्वीकार हेतु अभिग्रह प्रदान कर उन्हें प्रोत्साहित करना आरंभ कर दिया।

अपने मित्रवर श्री हीराभाई के दीक्षा प्रसंग पर आपकी अहमदाबाद में पूज्य आगमोद्धारकसूरीजी से भेंट हुई। आचार्यश्री ने कहा- पटवा! तम सबको दीक्षा के लिये प्रेरित करते हो, लेकिन स्वयं कब ले रहे हो?

साहब! मैं तो तैयार हूं, आप पूज्य की देरी है, प्रत्युत्तर में चिमनभाई ने विनम्र हो अपनी विषम परिस्थिति से पूज्यश्री को अवगत किया।

किन्तु सागरजी म. इस कार्य में माहिर जो ठहरे। उन्होंने चिमनभाई को हरी झंडी दिखा दी। निर्दिष्ट समयानुसार बम्बई में पूज्य आचार्य श्री विजय लब्धिसूरीजी म. के श्रीमुख से अट्ठमतप का प्रत्याख्यान स्वीकार कर आपश्री अहमदाबाद आए और वि. संवत् 1984 जेठ कृष्णा 6 के शुभ दिन पूज्य आचार्यश्री सागरानंदसूरीजी

म. के चरणों में दीक्षित हो मुनिश्री चन्द्रसागरजी बन गये। दीक्षा के समाचार वायुवेग से सर्वत्र प्रसारित हो गये। विरोध की आंधी अवश्य उठी किन्तु सागरजी म. की कुशलता से अल्पावधि में ही सब कुछ शान्त हो गया।

बम्बई समाचार मिलते ही डायाभाई, हीराभाई, शनाभाई, मूलचन्द भाई हठीसिंगभाई आदि ने भी अपने बिस्तर-बोरियाँ समेटने शुरू कर दिये और पूज्य सागरजी म. के सानिध्य में संयम स्वीकार कर मुनिश्री चन्द्रसागरजी के क्रमशः मुनिश्री देवेन्द्रसागरजी म., मुनिश्री हीरसागरजी, मुनिश्री सुबोधसागरजी मुनिश्री धर्मसागरजी, मुनिश्री हंससागरजी म. आदि नाम से शिष्य बन गये।

ज्ञानी गुरूदेव के सानिध्य में मुनिश्री चन्द्रसागरजी म. ज्ञानध्यान की प्रवृत्ति में आकंठ डूब गये और अल्पसमय में ही व्याकरण शास्त्र में पारंगत हो, आपश्री ने 'आनंद बोधिनी' टीका का सर्जन किया। आपकी विद्वता वाग्पटुता, प्रतिमा, स्थुलकाया, बुलंद आवाज तथा तप-त्याग, संयममय ओजस्वी साधना के बल पर अनेकानेक धर्म कार्य सम्पन्न होने लगे।

आगमोद्धारक पूज्य आचार्यश्री के वरदहस्त आपको पालीताना में वि. संवत 1996 अगहन शुक्ला 5 के दिन गणिपद, अगहन शुक्ला 9 के शुभ दिन पंन्यासपद और आचार्यपद प्रदान का शुभ मुहूर्त वि.सं. २००७ के महासुद-१३ को सोमवार ता. १९-२-५१ के शुभ दिन सुरत में पूज्य आगमोद्धारकाचार्यश्रीजी की भावनानुसार गच्छाधिपति पूज्य आचार्य श्री माणिक्यसागरसूरीजी ने आचार्य पद अर्पण किया।

आपश्री ने श्रीपाल मयणासुन्दरी द्वारा की गई नवपद आराधना भूमि उज्जैन में श्री सिद्धचक्राराधना तीर्थ की स्थापना कर श्री केशरियाजी की संदेह प्रमाण प्रतिमा का निर्माण करवाकर सोत्साह उनकी अंजनशलाका करवायी और वहां जीर्ण-शीर्ण पाँच जिन मंदिरों का जीर्णोद्धार कर प्रतिष्ठा करवायी। आपश्री की पुनीत प्रेरणा से मालवा में अनेक स्थलों पर जीर्णोद्धार प्रतिष्ठाएं तथा आयंबिलशाला, पाठशाला, उपाश्रय आदि की स्थापना हुई। प्रभासपाटन तीर्थ की अंजनशलाका-प्रतिष्ठा भी आपके सानिध्य में सम्पन्न हुई थी।

आपश्री ने पूज्य आगमोद्धारक गुरूदेवश्री के प्रवचनों द्वारा जैन धर्म का प्रचार-प्रसार करने हेतु सिद्धचक्र मासिक का प्रकाशन आरंभ किया। साथ ही आगम आदि अनेक ग्रंथों का सम्पादन कर तथा नवीन रचना कर मुद्रित करवाई।

गुजरात, सौराष्ट्र, मध्यप्रदेश, बिहार, बंगाल, महाराष्ट्र, आपश्री का विचरण क्षेत्र रहा है। जहां आपकी स्मृति आज भी कायम है।

अनेकविध शासन प्रभावना के कार्यों में अहर्निश रात होने के उपरांत भी आपने 70 वर्धमान तप की ओली, 108 नवपदजी की शाश्वती ओली, ज्ञानपंचमी, पोषदसमी, वर्षीतप आदि की तपाराधना की।

आपश्री के स्वशिष्यों की संख्या 14 थी। वर्तमान में आपके लगभग 80-85 शिष्य-प्रशिष्य अनेकविध कार्यों के माध्यम से शासन की प्रभावना कर रहे हैं।

वि.संवत् 2019 चैत्र बिदी 6 के दिन सुरत में 84 लाख जीवराशि के साथ क्षमापना कर 'अब मोहे ऐसी आय बनी' स्तवन श्रवण करते हुए, आपश्री का समाधिपूर्वक अवस्था में सूरत में देहावसान हुआ।

आगमोद्धारक की सदस्यता एवं श्रुतभक्ति में दान देने के लिये ऑन लाईन बैंक की जानकारी

महोदय,

आगमोद्धारक की सदस्यता प्राप्त करने के लिये सदस्यता शुल्क एवं श्रुतभक्ति दान आप ऑन लाईन जमा कर सकते है। आपकी धनराशि भेजने के लिये:-

बैंक का नाम:- इण्डियन ओवरसीज बैंक, शाखा नईसड़क उज्जैन (म.प्र.)

खाता:- श्री सिद्धसेन दिवाकर चेरिटेबल ट्रस्ट, 46, सखीपुरा, उज्जैन (म.प्र.)

खाता क्रं.:- 068002000001425   IFSC Code:- IOBA0000680

ऐसे अनेक नवरत्न इस धरा पर पैदा हो

* डॉ.सुभाष जैन

प्रत्येक देशकाल में कुछ महान व्यक्तित्व ऐसे होते है जो अपने जीवन कृतित्व एवं धर्म प्रभावना को समर्पित महान कार्यों से युगों-युगों के लिये अपनी एक विशिष्ट पहचान निर्मित कर लेते है। परम पूज्यपाद आचार्य देवेश वर्धमान तपोनिष्ठ मालव भूषण गुरूदेव श्री नवरत्नसागर सूरीश्वरजी महाराजा ने विश्व कल्याणकारी जिन शासन के मानसपटल पर अपने अनुकरणीय आध्यात्मिक वैभव और गुणप्रसार की एक स्थायी छवि उत्कीर्ण कर ली है, मानव भव में इस धरा पर अवतरित हुए जीव के जीवन और व्यक्तित्व के सकारात्मक और नकारात्मक दोनों ही प्रकार के पहलू होते है। सकारात्मक भाव की प्रधानता के कारण नकारात्मक पहलू का प्रभाव न्यूनतम हो जाता है जिनके जीवन में नकारात्मक भाव नहीं होता है वही पुण्यात्मा महान और महर्षि के रूप में लाखों-लाख लोगों के भक्तों के हृदय पर राज करता है, पूज्यपाद आचार्य गुरूदेव श्री नवरत्नसागर सूरीजी महाराजा का जीवन चरित्र भी कुछ ऐसा ही है कि उनकी महान आत्मा आज सबके लिये वंदनीय, अभिनंदनीय, बनकर जैन जगत में गौरवपूर्ण स्थान को प्राप्त हो गई है।

पूज्यपाद गुरूदेवश्री का अंतर्मन, अंतस अंतःकरण और ब्राह्य स्वरूप सब कुछ एक-एक जैसा, कहीं दुराव नहीं, कहीं छुपाव नहीं। उनके लिये राष्ट्रसंत जैसी उपाधियां भी छोटी और गौण हो जाती है, पूज्यश्री के खुले चरित्र और व्यक्तित्व के सामने सभी पद उपाधियां बहुत बौनी दिखाई देने लगती है। किन शब्दों में आपके चमत्कारी जीवन को विश्लेषित करूं? कैसे उसकी व्याख्या करूं? क्योंकि शब्दों में वह सामर्थ नहीं लगता कि वे ऐसे महातपस्वी महर्षि के जीवन गुणों को गा सके उसकी विवेचना कर सके।

मुझे जैसे आकिंचन्य को जबसे गुरूदेव के निकट आने का सौभाग्य मिला है तब से लेकर आज तक गुरूदेव से प्राप्त सानिध्य और आर्शीवाद को मैं अपने जीवन का सर्वाधिक अनमोल और अविस्मरणीय समय मानता हूं, वास्तव में वह मेरे जीवन की अमूल्य धरोहर है। मैंने अनेक-अनेक प्रसंग में पूज्यपाद गुरूदेवश्री के महान वैभव से परिपूर्ण जीवन में मानवीय और दैवीय स्वरूपों को देखने का सौभाग्य प्राप्त कर अपने जीवन को धन्य पाया है। **अहमदाबाद में जन्म लेकर मुंबई को कार्य क्षेत्र बनानेवाले और संत जीवन में मालवा का उद्धार करनेवाली महान आत्मा आचार्य देवेश श्री चन्द्रसागरसूरीजी महाराजा** का शिष्यत्व एवं जिनसे संत जीवन की समस्त परिभाषा सीखी तथाा पूज्य पंन्यास प्रवर श्री अभ्युदयसागरजी म.सा. के सानिध्य में रहकर आपश्री ने जैनत्व की श्रवण चर्या को अंगीकार कर उसे अपने जीवन का साध्य बनाया, इसी बात का ध्यान पूज्यश्री अपने आचार व्यवहार में रखते हुए अपने शिष्यों और अनुयायियों का भी यह ध्यान रखते थे कि वे इससे कहीं विमुख न हो जाये। अनेक बार अत्यन्त भावुक होकर अपने भक्तों के लिये वे कई ऐसे कार्य भी करते थे जिसकी भनक किसी को भी नहीं होने देते यहां तक कि अपने शिष्यों को भी नही होती थी गुरूदेव के इस करूणाभाव का अनुभव कर भक्त अत्यन्त ही द्रवित हो जाता है और अपने आप को धन्य मानता है कि ऐसे गुरूवर का उपकार मैं कैसे चुकाऊंगा?

गुरूदेव का अंतःकरण बहुत ही सुंदर रहा है, बाह्य स्वरूप भी पूज्यश्री का सुन्दर रहा है वे जब अपने श्री मुख पर स्मित मुस्कान लाते थे तो आपका चेहरा देखने काबिल होता था लगता था कि वे अपने जीवन का माधुर्य हम सबके लिये लुटा रहे है। यही कारण है कि कोई एक बार आपश्री के दर्शन पाता था तो आपके व्यक्तित्व पर मोहित हो जाते थे और आपके व्यक्तित्व की ओर खिंचा चला जाता था। आपके आर्शीवाद में विशेष शक्ति थी, चमत्कार देखने को मिलते है, यह मात्र बड़े बुढ़ों से सुनी मात्र बात नहीं है बल्कि मैंने स्वयं और अन्यों के मुख सुना भी है और प्रत्यक्ष देखा भी है। कई लोग अपने दुःख कठिनाईयां, परेशानियां के साथ आपके पास आते थे और चाहते है कि उनका काम हो जाये, कई तो पहली बार आते थे और सब कुछ पा लेने की इच्छा रखते यह भी नहीं देखते थे कि गुरूदेव अपनी संत क्रिया में जाप में या कुछ विशिष्ट श्लोक, स्रोत पढ़ने में लगे वे तो चाहते थे कि तुरन्त ही उनको वासक्षेप कर दिया जाये, वे सिर्फ वासक्षेप के लिये ही आते है न तो गुरूदेव से बात करते थे और न ही अपना परिचय देते थे , आप ही बतलाये कैसे लाभ होगा? पूज्यश्री के दर्शन-वंदन ही तारनेवाले होते थे कभी आप उनके साथ कुछ देर बैठते, कुछ चर्चा करतें या वे कभी कुछ बोल रहे होते तो सुनते, तो लगता था आप बहुत कुछ पा जायेंगे। पूज्यश्री एक ऐसे सच्चे वीतराग साधक थे जो मोह और व्यामोह

से कोसों दूर थे, आपश्री सबके लिये सहज, सरल रूप से उपलब्ध रहते थे, वे निस्पृतः संत थे, वीतरागता की साधना करके मोक्ष को पाना ही जीवन का उद्‌देश्य लेकर चल रहे थे। अन्तरंग की जाग्रत चेतना और आत्म साधना के बल पर आपश्री 190 वीं ओली की आराधना के साथ घंटों चलनेवाले जाप, श्रीसंघ के कार्य, शिष्य परिवार की कुशलक्षेम, भक्तों के मन को सुनना यह सब करना किसी देवीय व्यक्तित्व के लिये ही संभव था।

आपश्री जैसे गुरूदेव के लिये स्याही कम और कागज छोटे पड़ जायेंगे जब हम उनके व्यक्त्वि का विश्लेषण करेंगे तो,मैंने तो आपश्री को बहुत निकट से देखा, परखा है, मैं तो चाहता हूं, कि अब ऐसे अनेक नवरत्न इस धरा पर पैदा हो और उन सबके सम्पर्क में हम आये। पूज्यश्री के जन्म दिन पर आपके चरणों में अनंत नमन-वंदन। आप देह छोडकर जाने कि बाद भी हमारे साथ ही है ।

पूज्यपाद गुरूदेव..........
मैं शब्द तुम अर्थ -तुम बिना मैं व्यर्थ।।

नवरत्न मनस्वी तुम्हें नमन....

आज मानवता धन्य हुई है।
देकर तुम्हें जनम है,
हे गुरुवर तुम्हें इस युग का, मन भरा नमन है,
तुमने वैभव छोड़ा सदा,
संयम का साथ निभाया,
तेजवंत तुम सरस्वती की करते नित्य रहे पूजा,
निज वाणी से चरण पखारे तुमसा और नहीं दूजा।
हे धर्म सूर्य तुमको नमन,
नवरत्न मनस्वी तुम्हें नमन,
चुम्बक सा आकर्षक चारित्र तेजोमय मुद्रा तुम्हें नमन।

संसार स्वार्थी है ?

संसारीओं की ममता कहां तक ?
स्वार्थी हो वहां तक।
फूलों में से रस चूसने के बाद भँवरे उड़ जाते हैं।
सरोवर का पाणी सूखाने के बाद हंस उड़ जाते हैं।
वृक्षों में फल-फूल पत्ते गये तो पंक्षी उड़ जाते हैं।
स्वामी के पास से सत्ता गई तो सेवक भाग जाते है।
ऐसा स्वार्थी है यह संसार !

''संसार स्वार्थी है''- ऐसा जब हम सुनते है तब ज्यादातर हम दूसरों के लिए ही ऐसा विचार करते है कि उसने मुझे धोखा दिया, उसने मेरे साथ छलना की ! सचमुच दुनिया स्वार्थी है, लेकिन हम कभी ऐसा विचार नहीं करते हैं कि अगर दुनिया स्वार्थी है तो मैं भी स्वार्थी नहीं क्या ? मैं भी दुनिया से जुड़ा हुआ ही हूं ना ? दुनिया अगर वस्त्र है तो मैं उसका तंतु हूं। दुनिया अगर फूल है तो मैं उसकी पंखुड़ी हूं। दुनिया अगर इमारत है तो मैं उसी की एक ईट हू ? दुनिया अगर सूर्य है तो मैं उसी की किरण हूं। दुनिया अगर समुद्र है तो मैं उसी का एक बिंदु हूं। मैं इससे अलग कैसे हो सकता हूं ?

''संसार स्वार्थी है'' ऐसा कहकर आक्रोश करनेवाले हम कभी आत्म-निरीक्षण करते नहीं कि हे जीव ! क्या तूने कभी किसी के साथ छलना नहीं की ? स्वार्थ पूरा होने के बाद, किसी को छोड़ा नहीं ? काम पूरा होने के बाद किसी को धक्का मारा नहीं ? अगर तूने ऐसा किया हो तो ''संसार स्वार्थी है'' ऐसा कहकर संसार को गाली देना का तुझे कोई अधिकार नहीं ।

जिस मनुष्य को संसार नहीं, लेकिन स्वार्थ खतरनाक लगता है, ऐसा मनुष्य स्वार्थ में से निकलकर परमार्थ के मार्ग को पकड़ता है। वह संसार को कोशेगा नहीं, लेकिन कहेगा : हम इस से बच जाय। आकाश को छपरे से नहीं बांध सकते किन्तु हम छाता लगा सकते हैं। धरती को हम चमड़े से ढक नहीं सकते, लेकिन पांव में जूते लगा सकते हैं। अगर हम परमार्थ का काम शुरु करेंगे तो दुनिया परम-अर्थ से भरी हुई लगेगी।

शांति:- *श्मशान में भी शांति तो होती है, परन्तु उस शांति का कोई मूल्य नहीं है। शांति तो मन में होनी चाहिये। मानवीय मन के भीतर रही तृष्णाएं जितनी शांत होगी उतना ही मन शांत बनेगा। अशांति का जन्म तृष्णा में से होता है। शांति, बाजार में पैसे से खरीदने की वस्तु नहीं है, इच्छाओं को कम करते जाएँ, शांति समीप आती जाएगी। बाहर की दुनिया में घूमने से शांति मिलेगी, वह शांति तो क्षणिक है। ऐसी शांति का कोई अर्थ नहीं है। अपनी निंदा को सुनकर भी जो शांत रह सकता है, उसकी शांति सच्ची है।*

◎ क्यों निभ नहीं पा रहे हैं आज संबंध ◎

संबंध एवं सामंजस्य का संकट गहराया है। ऐसा संकट न तो कभी सुना गया था और न ही देखा गया था, परन्तु हम जिस दौर से गुजर रहे है, उसमें यदि कोई सबसे अधिक टूटे-बिखरे हैं तो वे हैं संबंधों के संवेदनशील धागे। इसके पश्चात दूसरा जो संकट आ खड़ा हुआ है, वह सामंजस्य न स्थापित कर पाने का हैं। संबंध और सामंजस्य के सुमेल से जितना सुकून एवं मिठास मिलती है, उतना ही उसके टूटन-विखंडन से कसक एवं खटास मिलती है। वर्तमान समय में हमें इसकी पीड़ा एवं चुभन से रुबरु होना पड़ रहा है क्योंकि हमारे संबंध बिखरे है एवं सामंजस्य बिगड़ा है।

संबंध एवं सामंजस्य में कुछ तल पर समानता है तो कहीं दोनों दो छोर पर खड़े नजर आते हैं। संबंधों की बनावट एवं बुनावट संवेदनाओं के सूक्ष्म तारों से होती हैं। संबंध भावनाओं के तल पर विनिर्मित होते हैं, जबकि सामंजस्य के लिए बौद्धिक कुशलता की आवश्यकता पड़ती है जिससे सामंजस्य करना है, उसकी मनःस्थिति एवं परिस्थिति को जानना एवं समझना पड़ता है। यह तालमेल जितना अधिक होगा, उतना अधिक निभेगा। एक भावनाओं के तल पर खड़ा है तो दूसरा बुद्धि के तल पर, परन्तु दोनों ही नितांत आवश्यक हैं। दोनों के बिना जीवन बड़ा ही असहज एवं शुष्क हो जाता है।

संबंध एवं सामंजस्य के बीच गहरा संबंध भी है। संबंध जहां गहरा होता है, तालमेल वहां पर स्वतः ही हो जाता है। जिसे हम हृदय में स्थान देते हैं, जिसके प्रति चाहत अटूट एवं अगाध होती है, उसके साथ बिताए कठिनतम पल भी सुकून भरे होते हैं। उसके साथ हम किसी भी परिस्थिति में, हर कष्ट-कठिनाईयों को सहते हुए सजगता के संग तालमेल बना लेते हैं क्योंकि संबंधों की गहराई में भावनाओं का प्रवाह तीव्र होता है और उस प्रवाह में हम बस बहते चले जाते हैं। भावनाओं में बहते जाना एक आनंद की सृष्टि करता है। ऐसे में हमें कोई शिकायत नहीं रहती है तथा सामंजस्य स्वतः निभने लगता है।

परिवार में बहुत लोग होते हैं। ये लोग चूंकि हमारे अपने होते हैं, इनके साथ हमारे संबंध बड़े ही संवेदनशील होते हैं, अतः इनके साथ सामंजस्य बड़ी आसानी के साथ निभ जाता है, परन्तु अनजान एवं अजनबियों के बीच इसे निभा पाना इतना सहज नहीं हो पाता है, क्योंकि हम इन्हें अपना नहीं मानते हैं और इनके साथ हमारे दिलों के तार नहीं जुड़े होते हैं। जब ये तार जुड़ जाते है तो ये भी हमारे सगे-संबंधी जैसे लगने लगते हैं और इनके साथ भी सुमेल एवं तालमेल बन जाता है। सामंजस्य के लिए संबंध एक प्रेरणा का काम करता है।

सामंजस्य में संबंध का होना और न होना कई बातों पर निर्भर करता है। सामंजस्य में यदि संबंध हो तो यह ठीक से निभता है और यदि यह न भी हो, तो भी सामंजस्य का निर्वाह लंबे समय तक किया जा सकता है। यात्रा में यात्री एक साथ प्रेमपूर्वक बैठकर यात्रा पूरी कर लेते हैं। यहां संबंध नहीं होता है, फिर भी सामंजस्य निभ जाता है, हालांकि यह कम समय के लिए होता है। वर्तमान समय व्यवसाय एवं नौकरी का है। परिवार के साथ किसी अनजान स्थान पर सामंजस्य करना पड़ता है। कुछ दिनों के पश्चात व्यक्ति जहां रहता है, उनके बीच न केवल तालमेल बिठा लेता है बल्कि एक नया संबंध भी विकसित कर लेता हैं। इस प्रकार तबादला होता रहता है और फिर से वही स्थिति बनती जाती है।

वस्तुतः इन्सान एक सामाजिक प्राणी है। उसे समाज में रहना सुकूनदायक लगता है। अतः वह जहां भी होता है, अपने अनुरुप पहले तालमेल बिठाता है और यह तालमेल जितना घनिष्ठ होता जाता है, वह एक नए संबंध के रुप में सामने आ जाता है। सामंजस्य की अंतिम परिणति संबंधों की मिठास के रुप में परिलक्षित होती है। समाज में संबंधों का विकास सामंजस्य के आधार पर होता है, जिसमें भावनाएं प्रमुख भूमिका निभाती हैं। यह संबंध और सामंजस्य का सूत्र है, परन्तु वर्तमान समय में इसका संकट गहराया है। आखिर क्यों हम किसी के साथ तालमेल नहीं बना पाते, क्यों हमारे संबंध ताश के पत्ते के समान उड़-बिखर जाते हैं। वह कौन सा कारण है, जिससे ऐसा संकट आ खड़ा हुआ है।

संबंध एवं सामंजस्य के निर्वाह के लिए जिस सबसे बड़ी चीज की जरुरत है, वह है अनपेक्षा, सहनशीलता एवं त्याग। यदि अपेक्षा न्यून हो, सहनशीलता एवं त्याग की भावना अधिक हो तो वहां लंबे समय तक संबंध निर्बाध गति से निभते चले जाएँगे। अपेक्षाओं के भार से संबंध दब जाते हैं और सामंजस्य टूट जाता है। जितनी अधिक अपेक्षा होगी

संबंध के सूत्र इतने ही तीव्रता से टूटेंगे-बिखरेंगे क्योंकि संबंध अपेक्षाओं के भार को उठा पाने में अक्षम एवं असमर्थ होते हैं। आज हम किसी के लिए कुछ करते है तो उसके बदले उससे कई गुना अपेक्षा कर बैठते हैं। अपेक्षा के बिना तो हमें किसी के लिए कुछ करना ही नहीं आता है। जब हमारी बारी आती है तो हम अपने किए कार्य की पूरी सूची उसे थमा देते हैं- **''देख, तेरे लिए मैंने अब तक इतना-इतना किया है और तुम्हें इसके बदले इतना करना चाहिए।''** और यदि ऐसा नहीं हो पाता है, वह व्यक्ति हमारी अंतहीन अपेक्षाओं में खरा नहीं उतरता है तो बस, मनमुटाव का दौर चल पड़ता है और इसका अंत संबंधों की टूटन से उत्पन्न चुभन देकर जाता है। टूटे संबंधों के टुकड़े लगातार हमारे दिल में चुभन पैदा करते रहते हैं और दिल छलनी होता जाता है। अपेक्षा के भार से न तो सामंजस्य बन सकता है और न कोई संबंध निभ सकता है। सहनशीलता एवं त्याग इनमें नूतन प्राण भरते हैं परन्तु इन दोनों का अभाव भी उनमें खूब बिखराव पैदा करता हैं। हम क्यों किसी को सुनें और क्यों बिना मतलब किसी के लिए कुछ करें। हां, हम किसी को जरुर बहुत कुछ खरीखरी सुना भले दें और कोई यह सब सुनकर भी हमारे लिए बहुत कुछ करता रहे, तब तो हम साथ निभाएँ। यही मानसिकता वर्तमान संकट का कारण है। इसी मानसिकता से हमने अपनों को खोया है और इसी के कारण हम किसी से भी निभा नहीं पाते हैं। इससे हम उपहास एवं उपेक्षा के पात्र बनते हैं। लोग हमें देखना पसंद नहीं करते हैं, हमसे दूर भागते हैं। अतः इसे दूर करना चाहिए।

संबंधों की प्रगाढ़ता अपेक्षाहीन भावनाओं में पनपती है, सहनशीलता में निखरती है। संबंध एवं सामंजस्य, दोनों के लिए न्यूनतम अपेक्षा अपेक्षित है और अधिकतम सहनशीलता एवं निस्वार्थपरता की आवश्यकता है। यदि यह बात होगी तो संबंध अनजान-अजनबियों में भी अपनों से गहरे होंगे एवं हम किसी के साथ भी दीर्घकाल तक प्रेमपूर्वक तालमेल बना सकते हैं। हम इन सूत्रों का परिपालन कर वर्तमान संकट को दूर कर अपने जीवन में मिठास का रस घोल सकते हैं। यही है स्वस्थ संबंधों एवं सामंजस्य का राज।

परित्राण:- *दुनिया के तमाम लोगों के जीवन में एक ऐसा वक्त आता है, जब उसे अपने पूरे अतीत की परिक्रमा करने की इच्छा होती है। आदमी को अतीत की तभी याद आती है जब उसका भविष्य छोटा होने लगता है। कम उम्र में आदमी के लिए अतीत कोई अहमियत नहीं रखता है। उस समय उसके लिए भविष्य ही सब कुछ होता है। तब उस कम उम्र के दौरान वह सब कुछ प्राप्त करने की कामना करता है। सुख, समृद्धि, सौभाग्य की कामना करता है। उसकी इन दुर्लभ कामनाओं के बीच शक्तिशाली प्रत्याशा जुड़ी रहती है। ऐसी प्रत्याशा जो उसे तमाम बाध-विघ्नों को पार करने की सीख देती है। यही वजह है कि दुनिया के तमाम लोगों का जीवन प्रत्याशा और प्रत्यय का समन्वय है।*

मन करा सकता स्वर्ग-नरक की यात्रा

जीवन की अंतिम सांस में जैसे भाव होते हैं आगामी जन्म में वैसा ही प्रतिफल प्राप्त होता है। ....मन नरक की यात्रा भी करा सकता है और स्वर्ग की भी। मन की अशुभ प्रवृत्तियां नरक का कारण है, वहीं शुभ प्रवृत्तियां स्वर्ग का। मन सर्वशक्तिमान है। इसे दबाया नहीं जा सकता, इसे समझाया जा सकता है। मन का स्वभाव विपरीत की कामना करना है। कश्मीर में रहनेवाला कन्याकुमारी में जाकर समुद्र की लहरें देखना चाहता है। कन्याकुमारी में रहनेवाला कश्मीर में जाकर केसर की सुगंध लेना चाहता है। पुरुष मन को स्त्री का आकर्षण और स्त्री मन को पुरुष का आकर्षण, यही मन की विचित्र गतिविधि है।

मन का संबंध शरीर के हर तन्तु के साथ जुड़ा है, पर तभी तक जब तक शरीर का आत्मा से संबंध है। इसलिए मन, शरीर में तभी तक रहता है, जब तक शरीर मुर्दा न हो जाए। जन्म से लेकर मृत्यु तक मन की महत्ता को नजर अंदाज नहीं किया जा सकता। मन को समग्रतया साधने के लिये हम मन एवं उसके भीतरी-बाहरी परिवेश को समझने की चेष्टा करें। अगर मन को उचित दशा दी जाये, तो यह वह कार्य भी कर सकता है जो मुक्ति में सहायक हो।

मन का स्थान कहां है ? यह प्रश्न काफी पेचीदा है। कुछ लोग इसे मस्तिष्क में मानते हैं, कुछ लोग इसका केन्द्र बिन्दु हृदय में मानते हैं। यद्यपि यह बात सही है कि मन की वृत्तियों से सर्वाधिक मस्तिष्क ही प्रभावित होता है परन्तु उसकी तरंगे सम्पूर्ण शरीर में प्रवाहित होती है।

उपासना सफल होती है जीवन-साधना से

आत्मोत्कर्ष का लक्ष्य प्राप्त करने के लिये दो कार्य करने पड़ते हैं- एक उपासना दूसरा साधना। उपासना में भजन-पूजन के संदर्भ में किए जाने वाले जप, ध्यान, प्राणायाम, भक्ति आदि क्रिया-कृत्यों को करते हैं। साधना जीवनयापन की चिंतन एवं कर्मपरम पद्धति है। उपासना उच्च स्तरीय कक्षा का योगाभ्यास कहलाती है और साधना अपने परिष्कृत स्वरुप में तपश्चर्या कहलाती है। दोनों के समन्वय से ही जीवन-लक्ष्य को प्राप्त करने का, पूर्णता तक पहुंचने का संकल्प पूरा होता है, यही ईश्वर प्राप्ति हैं।

उपासना-अंतरंग को परिष्कृत करने के लिए और साधना-बहिरंग को सुव्यवस्थित बनाने के लिए है। लक्ष्य तक पहुंचने की यात्रा इन्हीं दो कदमों को अनवरतक्रम से उठाते रहने पर सम्पन्न होती है। उपासना का प्रतिफल है- सुसंस्कारिता। साधना का प्रयोजन है- शालीनता। इन्हीं दोनों को संस्कृति एवं सभ्यता कहते हैं। जीवन संपदा का स्तर उठाने और उसका श्रेष्ठतम सदुपयोग करने से ही मनुष्य व्यक्तित्ववान बनता है। इसी विकास क्रम पर चलते हुए मनुष्य अगली सीढ़ियां प्राप्त करता है। महामानव, ऋषि, देवदूत यहां तक की परमात्मा बनने का सौभाग्य इसी मार्ग की मंजिल हैं।

उपासना किसी के सामने गिड़गिड़ाना या वैभव संपत्ति का उपहार-अनुदान सहज ही प्राप्त करने का ताना-बाना नहीं है। देवता न चापलूसी से प्रसन्न होते हैं और न रिश्वत लेने में उन्हें कोई रुचि है। उनका अनुग्रह बादलों की तरह अनवरत बरसता है, जिसके पास जितना पात्र है, उसे उतना अनुदान मिलता है। आत्मपरिष्कार ही साधना का उद्देश्य है। इस प्रयास में जिसे जितनी सफलता मिलती है, वह उतना ही बड़ा संत होता है। आत्मकल्याण और लोक-कल्याण में समर्थ अति महत्वपूर्ण क्षमता ऐसे ही लोगों को उपलब्ध होती हैं। पेड़ों के आकर्षण से बादल बरसते हैं। चुंबक के खिंचाव से लोह-कण खिंचते चले आते हैं। फूल खिलता है तो उस पर मधुमक्खियां, तितलियों और भ्रमरों के झुंड मँडराते हैं। विकसित व्यक्ति को अंतरंग से संतोष बहिरंग से सहयोग और अंतरिक्ष से वरदान बरसने का लाभ मिलता है। दैवी अनुग्रह उपलब्ध करने का एक ही मार्ग है- आत्मपरिष्कार। उपासना और साधना के दोनों ही प्रयोग मिलकर इसी एक उद्देश्य की पूर्ति करते हैं। ब्रह्मविद्या का तत्व दर्शन और धर्मानुष्ठानों का साधना प्रकरण इसी एक उद्देश्य की पूर्ति के लिए मनीषियों द्वारा सृजा गया है।

उपासना में नवकार मंत्र का अवलंबन सर्वश्रेष्ठ है। इस महामंत्र में सन्निहित 68 अक्षरों में उन सभी शिक्षाओं, प्रेरणाओं एवं सिद्धांतों का समावेश है, जिनको अपनाकर व्यक्तिगत सुख-शांति और समाजगत प्रगति-समृद्धि के द्वार खुल सकते हैं। इन अक्षरों का गुंथन ऐसी विशेषताओं के साथ हुआ है कि उनके जप-पाठ से व्यक्ति के अंतराल की प्रस्तुत विशेषताएं जाग्रत होती है। उनके सामान्य जप-ध्यान और असामान्य अनुष्ठान-पुरशचरण प्रक्रिया में ऐसा आत्मबल जाग्रत होता है, जिसके द्वारा आत्मिक विभूतियों और सांसारिक सफलताओं को प्रचुर परिणाम में उपलब्ध कर सकना संभव होता है। उपासना का विधान अन्यत्र बताया गया है। उतना न बन पड़े तो रास्ता चलने या बिस्तर पर पड़े हुए भी मौन मानसिक जप एवं ध्यान हो सकता है। न्यूनतम 108 मंत्र जप लेने से भी आत्म शांति मिल सकती है।

साधना का तात्पर्य है- अनगढ़ जीवन को सुगढ़ बनाना। जंगली जानवरों को उपयोगी एवं पालतू और जंगली झाड़ियों को सुरम्य उद्यान के रुप में विकसित करने के लिए जो उपाय अपनाने पड़ते हैं, लगभग वही कुसंस्कारी व्यक्तित्व को संस्कारवान, शालीन बनाने के लिए भी कार्यान्वित करने होते हैं- यही साधना है।

भगवान का अनुग्रह सर्वप्रथम उदात्त चिंतन के रुप में प्रकट होता है। पीछे उसकी परिणति आदर्शवादी गतिविधियों के रुप में होती है इसके उपरांत उपासना का कल्पवृक्ष ऋद्धि-सिद्धियों के मधुर फल देने लगता है जिसके अंतरंग आत्म परिष्कार और आत्मविकास की स्फुरणा जितनी उत्कृष्ट जितनी अगम्य होती है, समझना चाहिये कि उसके ऊपर उतनी ही मात्रा में भगवान का सघन अनुग्रह बरस रहा है।

ईश्वर का अनुग्रह, पूर्णता का लक्ष्य प्राप्त करने के लिए एक मात्र उपाय साधना है। इसे परम पुरुषार्थ माना गया है। अपने कुसंस्कारों से निरंतर लड़ते रहना, जीवन क्षेत्र में सत्प्रवृत्तियों की फसल उगाना, पशुता को देवत्व में परिणत कर देना- यही है साधना का स्वरुप। विभिन्न पूजा-उपचारों के द्वारा मनन, चिंतन, स्वाध्याय, सत्संग जैसे विचार-मंथनों

द्वारा आत्मसोधन की जो प्रक्रिया चलती है, उसी को देखते हुए यह जाना जा सकता है कि साधना में कितनी प्रगति हुई, साधक को सिद्धि कितनी मिली ! बिना आत्मशोधन के भक्ति निरर्थक हो जाती है। अपवाद रुप में किसी की कोई दैवी अनुग्रह मिल भी जाए तो उसका परिणाम अंततः परिणाम शुभ ही होगा यह नही कह सकते है। फलित तो परमात्मा की साधना ही होती है।

जीवन कल्पवृक्ष है, उसकी साधना सही रीति से की जा सके तो वहीं अपने अमृत फलों से साधक को कल्पवृक्ष बना देता है। ईश्वर ने श्रम, समय, बुद्धि, प्रतिभा जैसी दिव्य संपदाएं हर व्यक्ति को प्रचुर परिणाम में दी है। इनका सदुपयोग ही उस बुद्धिमत्ता का परिचायक है। मानवीय निर्माण की आवश्यकता नितांत स्वल्प है, उपार्जन की क्षमता असीम है। ऐसी दशा में किसी के अभावग्रस्त या पिछड़े रहने का कोई कारण नहीं। दरिद्रता और दुर्गति तो आंतरिक पिछड़ेपन की ही प्रतिक्रिया है। साधना द्वारा अपने दृष्टिकोण स्वभाव और व्यवहार में सुधार किया जाता है।

मनः स्थिति में परिवर्तन आते ही परिस्थिति बदलने लगती है। आंख की पुतली ही दृश्य जगत का परिचय कराती है। कान की झिल्ली में भरी सामर्थ्य से ही संसार में संव्याप्त शब्द-संपदा से लाभान्वित होने का अवसर मिलता है। अपना मस्तिष्क ही इस विश्व-वसुधा में बिखरे हुए वैभव को पहचानने और चुनने का सौभाग्य प्रदान करता है। इंद्रियशक्ति की प्रखरता से ही अनेकानेक रसास्वादनों का सुख मिलता है। आंख, कान, मस्तिष्क एवं इंद्रिय तंतु यदि विकृत हो उठें तो इस संसार में निराशा और निस्तब्धता के अतिरिक्त और कुछ भी शेष न रहेगा। आत्मसत्ता का स्तर ही संसार के पदार्थों या प्राणियों को उपयोगी-अनुपयोगी बनाता रहता है। समस्याओं की उत्पत्ति भी भीतर से ही होती है और उनका समाधान भी अपनी ही अनुपयुक्ताओं के समाधान होने पर संभव होता है। जड़े जमीन में रहती हैं, पेड़ ऊपर दिखता है। व्यक्ति की आंतरिक स्थिति ही वाह्य परिस्थितियों की संरचना करती है। बाहरी सुविधा सफलता प्राप्त करने के लिए तद्नुरुप विशिष्टताएं अपने ही व्यक्तित्व में उत्पन्न करनी पड़ती है, इसी दूरदर्शी पराक्रम को साधना कहते हैं। अपना प्रसुप्त अंतरंग ही सर्वसिद्धिदाता, देवता है, उसी को जगाने, प्रखर बनाने के लिए पूजा-उपचारों की विधि-व्यवस्था शास्त्रकारों ने बनाई है। जो तथ्य को समझते हैं, भक्ति-पूजन के साथ जुड़े रहस्यों को ढूंढ़ते हैं और अपनी कुसंस्कारिता को परास्त करने का पराक्रम करते हैं, वे ही सच्चे साधक हैं। साधनात्मक उपचारों में सन्निहित आत्मनिर्माण के मर्म को जो जान लेते हैं, उसके लिए बिना हारे संघर्ष और शिक्षण का अभ्यास करते हैं, वे अपने आपको सर्कस के सिंह की तरह मनस्वी और कमाऊ बना लेते हैं। साधना-उपक्रमों के साथ जुड़े हुए इस दिशा-निर्धारण को जो समझते हैं और बिना हारे अनवरत प्रयास करते हैं, उन्हें सिद्धपुरुष होने का अवसर निश्चित रुप से मिलता है। साधना से सिद्धि का सिद्धांत अकाट्य है। प्रयास के साथ जुड़ी हुई उपलब्धि का प्रमाण, परिचय हर साधक कभी भी कहीं भी प्राप्त कर सकता है।

स्वार्थ और परमार्थ

मनुष्य जन्म की सफलता इसी में है कि-वह सिर्फ अपने ही स्वार्थ के लिये नहीं जीये। अगर वह अन्य प्राणियों के कल्याण की बात नहीं सोचे तो उसमें और पशु में क्या अन्तर रहेगा ? पूजा उसी की होती है जो परमार्थ का जीवन जीते है। हमारे तीर्थकर, भगवान एवं महापुरुष इसीलिए पूजे जाते हैं कि उन्होंने अपने जीवन का एक बड़ा भाग परमार्थ के लिए बिताया। ऐसा व्यक्ति खुद भी सुखी रहता है और अन्य प्राणियों को भी सुख पहुंचाने की कोशिश करता रहता है। इसके लिये पहली शर्त है कि हम पहले इसके योग्य बनें। अगर आपके पास धन नहीं तो प्राकृतिक प्रकोप से पीड़ित लोगों की मदद कैसे करोगे ? यदि आपने शिक्षा प्राप्त नहीं की है तो शिक्षा दान कैसे करोगे ? यदि आप शारीरिक रुप से स्वस्थ्य नहीं है तो शारीरिक रुप से श्रम सेवा कैसे करेंगे ? अतः परमार्थ अथवा पर कल्याण के क्षेत्र में उतरने से पहले आपको स्वस्थ्य रहना पड़ेगा, ज्ञान और शिक्षा का अर्जन करना पड़ेगा तभी आप जीवन के हर क्षेत्र में सफल हो सकोगे।

कैसे करें समय-प्रबंधन ?

इससे यदि हमारी सबसे बहुमूल्य कोई चीज खो गई है तो वह है-समय। हमारे पास समय नहीं है, शेष सब कुछ है परन्तु जो कुछ है, उसके होने न होने का अर्थ तो समय सापेक्ष हैं। जब जिसकी जरुरत है तो उसे होना या मिलना चाहिए और उसी क्षण उसका मूल्य है, समय के पहले या बाद में कोई अर्थ नहीं होता है। परिक्षार्थी नियत समय में अपना परचा लिखता है, वक्त अपना वक्तृत्व जनसभा में तय समय सीमा में प्रस्तुत करता है। प्रस्तुतीकरण की कला एवं शैली की बात तो बाद की बात है, सबसे पहले निर्धारित समय में वह कार्य किया जाए, यही महत्वपूर्ण होता है। यही समय का प्रबंधन है।

चीजों का मूल्य एवं महत्व तो होता है, परन्तु उपयुक्त समय में यह और भी बढ़ जाता है। समय का महत्व जानने-समझने वाले अपने समय को कभी भी बरबाद नहीं जाने देते। वे नियत समय में अपने कार्यों को अंजाम देते हैं। सफलता का एक मात्र यही राज और रहस्य है कि तय समय-सीमा के अंतर्गत निर्धारित कार्य को पूर्ण कर लिया जाए और यह तभी संभव है, जब हम अपने समय के प्रति पूर्ण रुप से सजग, सतर्क एवं सक्रिय होंगे। समय के साथ चलने वाला ही सफल होता है। सफलता समय के साथ अविच्छिन्न रुप से जुड़ी हुई है। वर्तमान व्यवसाय की लंबी छलांग समय के पंखों के संग लगाई जाती है। व्यवसाय ही नहीं, जीवन के सभी महत्वपूर्ण मोड़ समय के साथ मुड़ते हैं।

वक्त ही है, जो इनसान को अनेक रंगों की रंगपट्टी दिखाता है। इसे देख कोई मुस्कराता है तो कोई रोता है। रोना और हंसना, दोनों ही बदलते वक्त का परिणाम है। वक्त हंसाता है, वक्त रुलाता है। समय के मर्मज्ञ बताते है कि समय ही बलवान होता है। उपलब्ध समय का जो उचित रीति-नीति के साथ सदुपयोग करना जानता है, वह सफल होता है। समय का सही नियोजन सफलता का मूलमंत्र है। यदि समय का नियोजन ठीक ढंग से न हो सका तो संसाधन के अंबार में भी कुछ सार्थक हाथ नहीं लगेगा, परन्तु नियोजन एवं प्रबंधन ठीक से बन सका तो संसाधन के अभाव में भी असंभव समझे जाने वाले महत्वपूर्ण कार्य किए जा सकते हैं। गांधीजी को गीताजी के सभी श्लोक कंठस्थ थे। अपने अति व्यस्त जीवन में गीताजी को कैसे वे याद कर सके, यह रोचक विषय है।

गांधीजी उन दिनों स्वतंत्राता आंदोलन में अति व्यस्त रहा करते थे। अनेक कार्यों के दबाव के बावजूद उन्होंने एक नियत समय तय कर रखा था, जिसमें कि वे प्रतिदिन गीता के एक श्लोक को याद करेंगे एवं उसका चिंतन करेंगे। आश्चर्य की बात तो यह थी कि वह समय उनका दातून घिसने का समय था। वे ब्रुश नहीं करते थे, दातून से अपने दांत मांजते थे। जब तक वे मंजन करते थे, प्रतिदिन एक श्लोक याद कर लेते थे। यह क्रम उनका तब तक चलता रहा, जब तक कि गीता को उन्होंने पूरी तरह से कंठस्थ नहीं कर लिया। वे समय के बड़े निष्णात प्रबंधक थे। गांधीजी की यह घटना बताती है कि नियत समय में निरंतर किसी कार्य को करते रहने पर सफलता अवश्यंभावी है।

समय का प्रबंधन एक प्रोफेशनल (व्यावसायिक) कार्य है। यदि समय का प्रबंधन है तो आप प्रोफेशनल हो सकते हैं। प्रोफेशनल होने का अर्थ है नियत समय पर किसी कार्य को उसके मूल्य के अनुसार श्रेष्ठता के साथ सम्पन्न करना। वर्तमान समय की यही मांग है कि कम समय में कुशलता के साथ किसी कार्य को कर लिया जाए। यदि कार्य समय के साथ पूरा नहीं हुआ तो व्यावसायिक जगत में आप पिछड़ जाएँगे इसके अलावा उस समय में ही कार्य की गुणवत्ता का भी ध्यान रखा जाता है। दोनों ही बातें व्यावसायिक जगत के लिए अत्यन्त महत्वपूर्ण है। यदि यह न हो तो कड़ी प्रतिस्पर्द्धा में टिक पाना सहज नहीं है। सफलता का मानदंड इन्हीं बातों पर निर्भर करता है। यदि आपको इस क्षेत्र में सफल होना है तो समय के संग चलना ही पड़ेगा, अन्यथा समय अपनी चाल के साथ आपको पीछे छोड़ते हुए बहुत आगे बढ़ जाएगा।

समय व्यावसायिक हित से ही नहीं जुड़ा है, बल्कि यह सभी के साथ अविच्छिन्न रुप से संबंधित है। जो समय की महत्ता समझते हैं और समय की मांग के अनुरुप स्वयं को ढाल लेते है, वे ही सफल एवं समझदार हैं। इसका तात्पर्य यह नहीं है कि हम अनैतिकता के प्रवाह के संग ढल जाएँ। ऐसा नहीं है। नैतिकता-अनैतिकता का प्रश्न तो स्वयं की विवेक दृष्टि पर आधारित है। जो नैतिक मूल्यों को अपनाकर समय के अनुरुप उसका निर्वाह करता है, बात उसकी है। अनैतिक कार्य करने वाले अपने समय का मूल्य नहीं है, अवमूल्यवन करते हैं। बात तो मूल्यों एवं मानदंडों की है, जो सुनियोजित

एवं कालक्रम के संग किए जाते हैं। समझदार व्यक्ति इस तथ्य को समझता है और समय रहते अपनी योजना को क्रियान्वित करके निश्चित हो जाता है। आलसी और प्रमादी समय की घोर बरबादी करते हैं। आलसी कर्म से और प्रमादी मन से घोर लापरवाह होता है। दोनों ही समय का दुरुपयोग करते हैं।

समय के संग चलना बुद्धिमत्ता है परन्तु एक ही समय में ऐसे अनेक कार्य आ जाते हैं और हरेक कार्य का अपना ही महत्व होता है। ऐसे में हम असमंजस में रहते हैं कि किस कार्य को पहले किया जाए और किसे बाद में। किसी को पहले तो करना ही पड़ेगा। एक साथ अनेक कार्यों को क्रियान्वित नहीं किया जा सकता है। ऐसी स्थिति में सर्वाधिक महत्वपूर्ण कार्य को वरीयता प्रदान करनी चाहिए। फिर उसके बाद वाले कार्य को करना चाहिए। अंग्रेजी में कहावत है- **''फर्स्ट थिंग फर्स्ट।''** अर्थात् प्रमुख कार्य सर्वप्रथम किया जाना चाहिए।

समय की पहचान बड़ी बात है। पहचान न होने के कारण ही तो समय की घोर बरबादी होती है, उसका अवमूल्यन होता है। यदि समय की पहचान हो जाए और उपयुक्त समय पर क्रियान्वयन किया जाए तो सफलता असंदिग्ध है, पर पहचान तभी होती है, जब अंतर में विवेक दृष्टि पैदा होती है। समय का नियोजन जीवन के लिए अत्यावश्यक एवं अपरिहार्य है, इसलिए कहा जाता है कि जो समय के मूल्य को जानता एवं समझता है, वही जीवन को सही अर्थों में पहचान पाता है। जीवन का तात्पर्य ही है समय की पहचान एवं उसका सुनियोजन।

समय का मूल्य एवं महत्व इसके प्रबंधन से समझ में आता है। प्रबंधन का प्रारंभ कैसे किया जाए, यह बात बड़ी महत्वपूर्ण है। जीवनचर्या में यदि समय को समुचित ढंग से नियोजित किया जा सके एवं इसकी निरंतरता को बनाए रखा जा सके तो आश्चर्यजनक परिणाम उपलब्ध होते हैं। इसका प्रारंभ शाम को सोने के समय से प्रारंभ करना चाहिए। शाम को भोजन जल्दी लेकर जल्दी सोया जाए तो चार से छह घंटे की नींद के बाद प्रातःकाल स्फूर्ति के साथ उठा जा सकता है। प्रातःकाल उठकर सबसे पहले दिनभर की दिनचर्या का आकलन करना चाहिए। आकलन करते समय सबसे पहले उस कार्य को वरीयता देनी चाहिए, जिसको न करने से संकट खड़ा हो सकता है। कार्य समयबद्ध तरीके से सबको निर्धारित तय सीमा के अंतर्गत सुचारु रुप से करना चाहिए। दिनचर्या को संतुलित एवं सुव्यवस्थित रखा जाए तो समय-प्रबंधन संभव है।

समय अत्यन्त मूल्यवान वस्तु है। यह व्यर्थ ही न खोने पाए अतः अति सावधानी एवं सतर्कतापूर्वक इसका उपयोग करना चाहिए। समय का समुचित ढंग से सदुपयोग करने वाले समझदार होते है और वे ही जीवन में उन्नति एवं प्रगति कर पाते हैं। अतः हमें समय का ध्यान रखना चाहिए और इसके एक-एक पल का उपयोग करना सीखना चाहिए। इसी में जीवन का अर्थ एवं मर्म निखरता है।

बुद्धि-विलास धर्म नहीं है

❋ सत्यनारायण गोयनका

चिन्तन-मनन द्वारा धर्म की सैद्धांतिक जानकारी कर लेने मात्र से हमारा वास्तविक लाभ नहीं होता। यह जान और समझ लेने मात्र से कि रसगुल्ला मीठा है, हमारा मुंह मीठा नहीं हो सकता। उसके लिये तो हमें रसगुल्ला जीभ पर धरना ही होता है। केवल यह जान और समझ लेने से कि दूध पुष्टिकारक है, हमारी देह पुष्ट नहीं हो जाती। उसके लिये तो हमें दूध पीना ही होता है। जानना और समझ लेना हमारे कल्याण की पहली सीढ़ियां है परन्तु केवल जान और समझकर ही रुक जायें और जानी-समझी बात को जीवन में न उतारें तो ऐसा जानना समझना व्यर्थ गया। कोरा बुद्धि-विलास, कोरी दिमागी कसरत हुई और यही तो हम करते हैं।

धार्मिक और दार्शनिक सिद्धांतों के ऊहापोह, वाद-विवाद, चर्चा-परिचर्चा, बहस-मुबाहस, खंडन-मुंडन, तक-वितर्क, व्यंजना-विश्लेषण, समझने-समझाने, सुनने-सुनाने, पढ़ने-पढ़ाने, लिखने-लिखाने और बोलने-बतलाने में ही हम अपना सारा जीवन बिता देते है और दुर्भाग्य यह है कि इसी में अपने जीवन की सफलता मानते हैं। अतीव संतोष होता है हमें अपनी धर्म-जिज्ञासा पूरी कर लेने में तथा बौद्धिक स्तर पर जाने हुए उस धर्म-ज्ञान को लच्छेदार भाषा में व्यक्त करने की क्षमता प्राप्त कर लेने में। इस आत्म-संतुष्टि को ही हमने जीवन का अंतिम लक्ष्य मान लिया है। सचमुच, कैसा आकर्षक है यह मृगजाल जिसमें कि हम इतनी आसानी से फंस जाते है और फिर इस बंधन को ही आभूषण मानकर गर्व अनुभव करते हैं।

सहयोग-सद्भाव का एक अनूठा उदाहरण

स्वयं को गढ़ना और दूसरों को गढ़ने में सहयोग करना यदि युवाओं की जीवन-नीति बन जाए तो देश के यौवन में नए प्राण फूंके जा सकते हैं। युवा गुमराह होते ही इस कारण है, क्योंकि प्रतिभाशाली एवं सफल युवक-युवतियों को इन्हें निहारने एवं गढ़ने-तराशने की फुरसत नहीं होती है। ये तो सफलता के नए-नए शिखरों पर चढ़ने में इस कदर खो जाते हैं कि इन्हें गिरे कुओं को उठाने का होश ही नहीं रहता। युवा जीवन के पुरोधा युगाचार्य स्वामी विवेकानंद ने राष्ट्र के युवाओं से बीते युग में कहा था- 'इए अछऊ चअघए' अर्थात् ''बनो और बनाओ।'' स्वामीजी का यह वचन आज भी महामंत्र की तरह है। इसका अनुष्ठान करके राष्ट्र के युवा समस्याओं के कारण नहीं, बल्कि उनके निवारण व निराकरण के साधन बन सकते हैं।

एक युग में स्वामी विवेकानंद के दक्षिण भारतीय युवा शिष्य आलासिंगा तथा विजय कृष्ण गोस्वामी के शिष्य व डॉन पत्रिका के तत्कालीन संपादक सतीश चंद्र सुखोपाध्याय ने इसे एक अभियान का रुप दिया था। उन्होंने राष्ट्र के प्रतिभाशाली युवाओं का आव्हान करते हुए कहा था कि वे अपनी विशिष्ट प्रतिभा, समय व साधन के बड़े हिस्सों को अन्य युवाओं के प्रतिभा परिष्कार व उनके व्यक्तित्व निर्माण में लगाएं। उनके इस भावपूर्ण आव्हान को उस युग के युवाओं ने सुना था और वे इस महत्कार्य में संलग्न हुए थे। यही वजह थी कि स्वाधीनता के महासमर में दृढ़ चरित्र एवं दृढ़ प्रतिज्ञ बलिदानी युवाओं की कमी कभी आड़े नहीं आई। एक शहीद हुआ तो दूसरे ने क्रांति की मशाल थाम ली। सिलसिला चला और चलता गया। आज यदि युवाओं की समस्याएं घेरे हैं, उनकी प्रतिभा का उफान थमा है तो इसके पीछे प्रतिभाशाली एवं व्यक्तित्ववान युवाओं का दूसरों का सहयोग न करना है।

सहयोग की प्रक्रिया चल पड़े तो एक के बाद एक नए प्रतिभाशाली एवं व्यक्तित्ववान युवा राष्ट्र व समाज को मिलते रहेंगे। आज के माहौल में नकारात्मक एवं स्वार्थी वृत्तियां बढ़ी जरुर हैं, फिर भी ऐसे लोग हैं, जो अपने प्रेरक कार्यो से प्रकाशदीप बने हुए हैं। रामानुजम स्कूल एवं सुपर-30 ग्रुप का संचालन करने वाले गणित विशेषज्ञ आनंद कुमार इन्हीं में से एक हैं। आनंद कुमार बिहार प्रांत के पटना शहर में कुम्हारा क्षेत्र में रहने वाले हैं। गरीबी की टीस को इन्होंने अपने अध्ययन काल में अनुभव किया था। यह दरद ही इनकी प्रेरणा बन गया और इन्होंने निश्चय किया कि गरीब युवा छात्र-छात्राओं की प्रतिभा निखारने में कोई कोर-कसर न रखेंगे। इसी संकल्प के साथ इन्होंने रामानुजम स्कूल एवं सुपर-30 ग्रुप की स्थापना की।

उनका यह रामानुजम स्कूल बारहवीं कक्षा तक के विद्यार्थियों से सामान्य शुल्क लिया जाता है। इस शुल्क से जो धन जुटता है, उससे सुपर-30 योजना चलाई जाती है। इस सुपर-30 के लिए हर वर्ष तीस निर्धन प्रतिभाशाली छात्र-छात्राओं का चयन किया जाता है। ये निर्धन प्रतिभाएं समाज के हर वर्ग से होती है। इनमें अनुसूचित जाति, जनजाति, पिछड़े वर्ग और सुवर्ण सभी जातियों के नवयुवा होते हैं। जातिवंश एवं मानव मात्र की समानता आनंद कुमार का प्रथम गणितीय सूत्र हैं। सुपर-30 के लिए प्रतिभाशाली और निर्धन होना ही योग्यता की कसौटी है। आनंद कुमार का कहना है कि अमीरों के लिए बहुत से कोचिंग इन्स्टीट्यूट है पर गरीब प्रतिभाएं तो यों ही विनष्ट हो जाती है। हमें इन्हें किसी भी कीमत में बचाना है।

आरक्षण के इस दौर में जब जातीयता के भेदभाव की दीवारें समाज को बांट रही है, ऐसे में आनंद कुमार के प्रयत्न प्रेरक हैं। आनंद कुमार के इस कार्य में बिहार पुलिस बल के अतिरिक्त महानिदेशक श्री अभयानंद वरिष्ठ सहयोगी की भूमिका निभा रहे हैं। भारतीय पुलिस सेवा (आई.पी.एस.) के वरिष्ठ अधिकारी अभयानंद विलक्षण लोकसेवी है। ये अपनी व्यस्त दिनचर्या में से समय निकालकर सुपर-30 के छात्रों को भौतिक विज्ञान का शिक्षण देते हैं। आनंद कुमार इन्हें गणित का शिक्षण देते है। सुविधाओं से रहित इस पाठशाला के विद्यार्थी एवं शिक्षक दोनों को अपने श्रम-पुरुषार्थ एवं ईश्वर की कृपा पर संपूर्ण विश्वास है। इन सबके पुरुषार्थ एवं ईश्वरनिष्ठा के समन्वय का ही सुफल है कि सुपर-30 शुरु होने के साल ही 30 छात्रों में 18 का चयन आई.आई.टी. के लिए हुआ। एक साल बाद यह संख्या 30 में से 26 पहुंच गई। इस साल यह बढ़कर 30 में से 28 हो गई है।इसमें आधे से अधिक छात्र अन्य पिछड़े वर्ग एवं अनुसूचित जाति के हैं। इन सफल छात्रों में एक दिव्यांशु ने सी.बी.एस.ई.

की 12 वीं परीक्षा 91 प्रतिशत अंकों में उत्तीर्ण करने के साथ आई.आई.टी. की प्रवेश परीक्षा में 10 वां स्थान प्राप्त किया है। आनंद कुमार एवं अभयानंद के प्रयोग से प्रायः सभी समाचार माध्यमों ने प्रमुखता से प्रकाशित किया है। जापान के राष्ट्रीय टी.वी. ने तो इस पर डाक्यूमेंटी फिल्म बनाने की प्रक्रिय भी प्रारंभ कर दी है। इस प्रक्रिया के तहत जापान ब्रॉडकास्टिंग के निदेशक सुजुकी और सुमोतोमो ट्रस्ट बैंक रिसर्च इन्स्टीट्यूट टोकियो के मुख्य अर्थशास्त्री योचोहितो पहुंचे थे। यहां उन्होंने देखा कि पांच-पांच छात्रों की टीम किस तरह एक टीन की छत के नीचे अपनी प्रतिभा को निखार रही है। यहां के पत्रकारों के दल से बातचीत में उन्होंने यह बताया कि आनंद कुमार एवं अभयानंद द्वारा किये जा रहे इस कार्य की पहली जानकारी उन्हें एक जापानी पत्रिका से प्राप्त हुई थी। इसका ब्यौरा बड़ी प्रमुखता से प्रकाशित किया था। यहां आकर वे आश्चर्यचकित हैं कि भारत देश का भावी इंजीनियर कितने कठिन संघर्ष से तैयार हो रहा है। उसकी इस कठिन साधना का ही सत्परिणाम है कि भारतीय इंजीनियर विश्व के हर कोने में अपनी सर्वोत्कृष्टता साबित कर रहे हैं।जापानी टीम के दोनों प्रमुख सदस्य इस बात से भी भावविव्हल थे कि अपनी कठिन आर्थिक स्थिति के बावजूद आनंद कुमार ने सुपर-30 समूह की पढ़ाई, रहना, खाना, निःशुल्क कर रखा है। वह अपने तन-मन-धन सभी का नियोजन करके युवा पीढ़ी को निखारने-तराशने में जुटे हैं। योचोहितों का मानना यह है कि इस तरह का प्रयोग न केवल भारत देश के लिए, बल्कि विश्व के सभी देशों के लिए महत्वपूर्ण हैं। दुनिया के हर देश में युवा पीढ़ी को गढ़ने के लिए इसी तरह के प्रयोग किये जाने चाहिए और आनंद कुमार की ही तरह और भी प्रतिभाशाली युवाओं को आगे आना चाहिए। सहयोग का यह सिलसिला चल पड़े तो कारवाँ बढ़ता जाएगा और मंजिल आसान हो जाएगी।

युवा पीढ़ी को किसी एक क्षेत्र में नहीं, बल्कि उन्हें जीवन के सभी क्षेत्रों में आगे बढ़ना है। हर क्षेत्र में उन्हें अपनी प्रतिभा और व्यक्तित्व की यशस्वी छाप छोड़नी है। इस महत् कार्य के लिए उनके जीवन को संवाहने-निखारने की प्रक्रिया तेज होना चाहिए। प्रतिभाशाली युवा व्यक्तित्व इस कार्य के लिए समय एवं धन का नियोजन करने में पीछे न रहें। दीप से दीप जलाने की यह प्रक्रिया यदि चल पड़ी तो पूरा देश जगमग हुए बिना न रहेगा। युवाओं को इसे राष्ट्र कर्त्तव्य के रुप में स्वीकार करना चाहिए।

अध्यात्म न्यायी राजा है...

एक नगर में एक बड़े सेठ की मृत्यु हुई। उसे कोई पुत्र न होने पर उसका पूरा धन राजा के खजाने में जमा करना था। राजा वहां गया। सेठ की माता और पत्नी का करुण रुदन सुनकर राजा करूणा से द्रवित हो उठा- अरेरे.... एक तो इन स्त्रियों का पति-पुत्र मर गया है.... फिर मैं धन ले जाऊंगा.... तो हालत कैसी होगी ? यह तो जले हुए पर डाम ! जख्म पर नमक ! ना.... नहीं चाहिए ऐसा पैसा ! राजा ने उस सेठ का अरबों रुपये का धन छोड़ दिया। अरे.... इतना ही नहीं, पुत्रहीन का धन राजा ग्रहण करें- ऐसा कानून ही रद्द कर दिया। इससे वर्षभर में होनेवाली 72 लाख की आय छोड़दी। उस समय से यह प्रथा पूरे देश में से निकल गई।

वह न्यायी राजा था कुमारपाल !

सचमुच न्यायी राजा के राज्य में प्रजा को किसी भी प्रकार का उपद्रव नहीं होता। दुष्टों को दंड और सज्जनों की सेवा होने से प्रजा शान्ति से जीती है।

उपाध्यायजी म. कहते हैं कि -अध्यात्म भी ऐसा ही न्यायी राजा है। वह जब हृदय में राज्य करता है, तब किसी भी तरह का उपद्रव नहीं होता है। क्रोध लोभ आदि गुंडे सताते नहीं है, शम-दम-संतोष आदि सज्जन दिन ब दिन परिपुष्ट होते ही रहते हैं। सारे उपद्रव अध्यात्म के अभाव में है। सारे उपद्रवों का नाश अध्यात्म की उपस्थिति में है।

अध्यात्म सूर्य जैसा है। सूर्य उगते ही जैसे अंधकार का नाश, कमलों का विकास, सन्मार्ग का प्रकाश, कादव-कीचड़ का शोषण, वातावरण में गर्मी इत्यादि एक साथ होते हैं। ठीक वैसे ही हृदय में अध्यात्म का सूर्य ऊगते ही दोषों का नाश, गुणों का विकास, सन्मार्ग का प्रकाश, पाप का शोषण इत्यादि एक साथ होते हैं। इसलिए ही अनुभवीओं ने गाया है-

''अध्यातम रवि उग्यो मुज घट मोह-तिमिर हर्यु जुगते''

सन्मार्ग का दर्शन होते ही आदमी कहीं भी भूला नहीं पड़ता। मेरी अपनी बात करुं तो जब से अध्यात्म समझा, उसका सार भक्ति में है, ऐसा समझा, तब से कानजी आदि के बहुत भक्त मिले हैं, लेकिन मैं कभी भी उनके प्रति आकर्षित नहीं हुआ हूं।

चारित्र से युक्त तप ही निर्जरा रुप है

✲ शन्तिलाल सगरावत, मंदसौर

चारित्र संवर प्रधान है, अशुभ-आस्रव ने निवृत्ति रुप है। तप निवृत्ति जन्य गुणों का पोषक होता है।

सीयलंते जले कत्तो, होई पक्का घड़े कहं।
विणेव अग्नि-तावेण, तवेण उ तहाणरो ॥

अग्नि के ताप के बिना घड़ा पक्का नहीं होता और जल में शीन्लता आना संभव नहीं। ऐसे ही तप के बिना मनुष्य में भी परिपक्वता और समता नहीं आती।

पंचास्रव से निवृत्ति याने सावद्य योग का त्याग चारित्र का प्रारंभिक रुप है, यह तप का बाह्य रुप है और आभ्यन्तर तप से समता का आविभवि होता है। तप द्वारा चारित्र में दृढ़ता और समता ये दोनों विशेषताएं उत्पन्न होती है। साधना का उत्कर्ष साधने के लिये बाह्य और अभ्यन्तप तप अति आवश्यक है। वैसे तप करते हुए साधक साधना से गिरे है फिर भी तप साधक जीवन को धन्य बनाते हैं।

भेयाय मिस्सियं धाडं, जंतं लुद्धं खु सिप्पणा।
नत्थि कम्मस्स भेयायं, जंतं च णिज्जरं विणा ॥

वैज्ञानिकों ने मिश्रित धातु को पृथक करने के लिये यंत्र का आविष्कार कर लिया, किन्तु कर्म को आत्मा से पृथक करने के लिये निर्जरा के सिवाय कोई यंत्र नहीं।

रत्नत्रय से ही तप सार्थक सिद्ध होता है। चारित्र में सम्यग्दर्शन और सम्यग्ज्ञान की नियमा है। ऐसे चारित्र से युक्त तप ही निर्जरा रुप है। अतः इस अपेक्षा से तप में भी ज्ञान-दर्शन की नियमा है।

मरुदेव माता के द्वारा शुक्ल ध्यान रुप आभ्यन्तर तप आचारित था। उस आभ्यन्तर ध्यानाग्नि रुप प्रचण्ड तप से कर्म अंतमुर्हूत में नीरस हो गये, जिससे कर्मो की निर्जरा हुई और वे मुक्त हो गई। मरुदेवी माता की मुक्ति से सिद्ध है कि साधना पद्धति को भंग नहीं किया जा सकता है।

दशरथ आत्मज श्री राममुनि ने श्री लक्ष्मण के वियोग के बाद प्रव्रज्या अंगीकार की। लम्बे समय तक तपश्चरण ध्यान में आरुढ़ थे, तब सीतेन्द्र ने उन्हें मुक्ति योग्य निर्जरा से रोकने का प्रबल प्रयास किया, लेकिन प्रचण्ड ध्यानाग्नि से अवशिष्टमोहनीय कर्म पूर्णतः निर्जरा गया। यथाख्यात चारित्र की प्राप्ति हो गई। केवल ज्ञान और केवल दर्शन की प्राप्ति हो गई। सीतेन्द्र का प्रयास विफल हो गया।

कर्मो का तप के माध्यम से थोड़ा-थोड़ा खिरना निर्जरा है। सभी साधकों को कर्म की निर्जरा करनी होती है।

✲ व्यक्ति का आंतरिक जगत जितना ऊपर उठ जाता है उसका तुलनात्मक भाव उतना ही क्षीण होता जाता है।

अनावश्यक न बोलें...!

अनावश्यक रुप से बोलनेवाला ज्यादा बक-बक करने वाला, उचित विचार किये बिना बोलने वाला, जिस विषय का ज्ञान न हो उस विषय में बोलनेवाला झूठ बोलनेवाला और गलत बात बोलनेवाला अकसर लज्ञित एवं अपमानित हुआ करता है। इन दोषों से बचा रहनेवाला पर-निंदा और आत्म प्रशंसा करने के दोष से बचा रहता है। मनुष्य को बहुत सोच-विचार कर उतना ही बोलना चाहिये जितना आवश्यक और उपयोगी हो। जो या तो बोलता ही नहीं और बोलता है तो सोच समझकर बोलता है, उसे न तो लज्जित होना पड़ता है और न पछताना ही पड़ता है अतः कम बोलना और उचित बोलना ही अच्छा होता है।

एक उच्च शिक्षित और विविध विषयों का प्रकाण्ड पंडित युवक विद्वानों की सभा में बहुत कम बोलता था और प्रायः चुप ही रहता था। एक व्यक्ति ने उससे इसका कारण पूछ लिया तो वह युवक बोला- गलत और बुरा बोलने की अपेक्षा न बोलना अच्छा होता है।

एक उच्च शिक्षित और विविध विषयों का प्रकाण्ड पंडित युवक विद्वानों की सभा में बहुत कम बोलता था और प्रायः चुप ही रहता था। एक व्यक्ति ने उससे इसका कारण पूछ लिया तो वह युवक बोला- गलत और बुरा बोलने की अपेक्षा न बोलना अच्छा होता है। हम जो कुछ भी बोलते हैं वह व्योम में हमेशा के लिए अंकित हो जाता है क्योंकि शब्द ''अक्षय'' है, ''अविनाशी''है। और ''नाद ब्रह्म'' है। सही और बहुत अच्छा ज्यादा नहीं बोला जा सकता। कौए की भांति कांव-कांव करते रहने की अपेक्षा कोयल की तरह कभी-कभी मधुर कूक करना अच्छा होता है। प्रकृति ने हमें कान दो दिये है जबकि जीभ एक ही दी है। जो इस बात का संकेत है कि हम सुनें अधिक और बोलें कम। जैसे कम खाना और गम खाना स्वास्थ्य रक्षा के लिये हितकारी और बुद्धिमानी का काम होता है वैसे ज्यादा खाना और ज्यादा बोलना अहितकारी और मूर्खता का काम होता है।

* डॉ. सुभाष जैन

प्रभु श्री पार्श्वनाथ दर्पण है

शिखरस्थ आचार विचार चेतना परम प्रधान महापुरुष पुरुषादानीय श्री पार्श्वनाथ प्रभु चरम तीर्थंकर भगवान श्री महावीर स्वामी की उस शांत क्रांति की मशाल के ही प्रतीक है जिसने इस धरती को अपने पावन प्रकाश से अलोकित किया था। परम परमेश्वर श्री पार्श्वनाथ प्रभु के जीवन का यशोविस्तार और आपश्री की आदार पद्धति का अनुसरण आज भविका की भक्ति का आधार बन गया है। प्रभु श्री पार्श्वनाथ दादा ने अपने समय में ऐसी नई सरंचना की जिसने प्राणीमात्र की सोच को नये आयाम दिये, नई धर्म शक्ति प्रदान की। नया मन दिया, नई संवेदना ही और नया संबोधन भी दिया।

परमत्मा श्री पार्श्वनाथ प्रभु ऐसे प्राज्ञ महापुरुष थे जिन्होंने मानवीय की हर समस्या का समाधान दिया। यही कारण है कि प्रभु श्री महावीर स्वामीजी के शासनकाल में भी आपश्री का साम्राज्य बहु आयामी विस्तार प्राप्त कर रहा है, आपश्री ऐसे दीपक है जिससे सबके पथ आलोकित हो रहे है। दादा का जन्मदिन हमारे लिये उपहार बन गया है, इसलिये आज आपकी आरती उतार रहा है, अभिनंदन कर रहा है। प्रभु के द्वारा सर्वहितकारा, सबके उदय का मार्ग प्रशस्त करने वाला प्ररुपित यह जिन धर्म सर्वोदय तीर्थ के रुप में हम पृथ्वी पुत्रों को प्राप्त हुआ है, प्रभु ने हिंसा को हराकर "अहिंसा परम धर्म" की स्थापना की।

वीतराग संस्कृति को जन्म देनेवाले हमारे तीर्थंकर परमात्मा श्री पार्श्वनाथ प्रभु ने रागी और त्यागी दोनों ही वर्गों के लिये हितकारी देशना दी है। यह परम्परा जैन धर्म की विरासत स्वरुप है। क्योंकि यह अतिब्रह्मा श्री ऋषभदेव प्रभु से प्रवृर्तित हुई है और आगे बढ़ते हुए श्री महावीर प्रभु तक पहुंची है। मानवता का निर्माण जिस प्रधान आचरण और चरित्र से सुलभ है उसका व्यवहारिक स्वरुप विस्तार से हमें प्रभु के जीवन में दिखाई देता है।

प्रभु की अमृत देशना में संसार से अशांति मिटाने के अयूक उपाय है, आज चारों ओर हिंसा और अशांति का जो विस्तार दिखाई देता है उसका एक मात्र कारण यही है कि मानव ने अपने ह्रदय में प्रभु की सच्ची वाणी को प्रतिष्ठित नहीं किया है, यही कारण है कि मनुष्य समाज में गंभीर आत्मपतीत, अनैतिक स्थिति हमें दिखाई देती है। प्रभु की वाणी-देशना पर यही मनुष्य चलने लगे तो देवता भी स्वर्ग को छोड़कर पृथ्वी पर आने लगेंगे। कथनी और करनी का भेद मिटाकर मन-वचन-काया की एक वाक्यता सिद्ध करने पर कल्पवृक्ष का युग हम ला सकते हैं।

जैन-धर्म की परम्परा शाश्वत एवं अनादिकालिन है,जो सदाकाल से चली आ रही है एवं सदाकाल तक चलती रहेगी। प्रत्येक युग में चौबीस तीर्थंकर जिनशासन के सिद्धांतों को प्रर्वतक करते है एवं मानवीय संस्कृति के साथ-साथ धर्म और मोक्ष के मार्ग का भी उत्तम रीति से जनमानस के लिये निरुपण करते है। वर्तमान युग की चौबीसी में तैवीसवें तीर्थंकर परमात्मा प्रभु पार्श्वनाथजी ने भी उसी अक्षुण्य परम्परा का उसी रुप में आगे बढ़ाया है। आज 3000 वर्ष बाद भी प्रभु का जन्म मनाने का यह संयोग हमें इस काल में प्राप्त हुआ है इससे सिद्ध होता है कि प्रभु श्री पार्श्वनाथ दादा देशतीत और कालातीत है, वे हमारे लिये प्रणमय है। देखा जाये तो प्रभु दर्पण है जिसमें हमें अपना प्रतिबिम्ब देख सके और अपने आप को समझ सकें। प्रभु के कल्याणक मनाने का यही अर्थ है कि आत्मा निरक्षण करे। हम पूजा करना, महोत्सव करना, प्रभु की स्तुति करना तो अच्छी तरह से जानते है, यह उनकी बात को बहुत कम मानते है। यदि प्रभु की पूजा के साथ उनकी आज्ञा को शिरोधार्य करते, उनके पद चिन्हों पर चलते तो हमारी जीवन कहानी कुछ ओर ही होती है।

✻ सज्जन सुख में सबको भागीदार बनाता है, दुःख एकाकी भोगना पसन्द करता है।

पंन्यास प्रवर श्री अभ्युदयसागरजी महाराज

महा मनस्वियों का जीवन संसार में आकाश की तरह अनंत सागर की तरह गंभीर एवं कल्पतरु कामधेनू की तरह अभीष्ट हुआ करता है। उनमें धरा-सी, धीरता, हिमाचल-सी अचलता, सूर्य की तेजस्विता, चन्द्र-सी, शीतलता और गंगा-सी पवित्रता समाविष्ट हुआ करती है। श्री शंखेश्वर आगम मंदिर के संस्थापक पूज्य पन्यासप्रवर श्री अभ्युदयसागरजी म.भी उन्हीं महामुनियों में एक है।

आपका जन्म वि.संवत् 1982 कार्तिक वदी-1 के शुभ दिन सूरत के एक सुखी-सम्पन्न झवेरी परिवार में हुआ था। आपके पिताश्री का नाम उत्तमचंदभाई झवेरी एवं मातुश्री का नाम श्रीमती भूरीदेवी था। आप अमरचन्द्र भाई के नाम से पुकारे जाते थे। आपका परिवार धर्मपरायण एवं सुसंस्कारी था।

आपका व्यवहारिक और धार्मिक अध्ययन मुंबई में हुआ। प्रकृति से आप चिन्तनशील व्यक्तित्व के धनी थे। परिणामस्वरुप पूज्य मुनिश्री महिमाविजयजी म. के परिचय से आप में धर्म का बीजारोपण हो गया और इसे पल्लिवित किया मालवोद्धारक पूज्य आचार्यदेव श्री चन्द्रसागर सूरीश्वरजी म. के पावन संसर्ग ने।

वैराग्य भाव जागृत होने से आप सदैव "सस्नेही प्यारा हो संयम कब ही मिले" की भावना में रमण करने लगे। भाई-बहनों में आप सबके लघु-अनुज होने के कारण माता-पिता आदि स्वजनों के अत्याधिक लाड़ले थे। अत: महाभिनिष्क्रमण में अवरोध तो आना ही था। किंतु आपकी महदेच्छा का आदर कर माता-पिता ने खुशी-खुशी स्वीकृति प्रदान की।

24 वर्ष की युवावय में वि.सं.2006 वैशाख शुक्ल 13 के शुभ दिन सुरत में महोत्सवपूर्वक आगमोद्धारक पूज्य आचार्यदेवश्री आनंदसागर सूरीश्वरजी म. के सानिध्य में संयम स्वीकार कर आप पूज्य आचार्यदेव श्री चन्द्रसागर सूरीश्वरजी म. (तत्कालीन पन्यास) के शार्गिद बन गये। दीक्षा पश्चात आप मुनिश्री अभ्युदयसागरजी म. के नाम से विख्यात हुए। पूज्य आगमोद्धारक आचार्यश्री का अंतिम वासक्षेप ग्रहण करने का सौभाग्य आपके ही सिर है।

ज्ञान का क्षयोपशम तीव्र होने से आपने गुरुदेव की निश्रा में अल्प समय में ही जैन दर्शन के साथ-साथ अन्य दर्शनों का भी विस्तृत ज्ञान प्राप्त किया। आप संस्कृत, हिंदी, गुजराती एवं अंग्रेजी भाषा के विद्वान थे।

योग्यता और पर्याय की अभिवृद्धि देख, पूज्य आचार्यदेव श्री चन्द्रसागर सूरीश्वरजी म. ने अपने लघु वयस्क शिष्य मुनि श्रीनवरत्नसागरजी म.सा.को आपके साथ घाटकोपर (मुंबई) चातुर्मासार्थ भेज दिया गया। यह आपका स्वतंत्र रुप से प्रथम चातुर्मास था जो कि ऐतिहासिक रहा। बम्बई के विख्यात घाटकोपर जिनालय के निर्माण में आपकी ही प्रेरणा, तप एवं त्याग जुड़ा हुआ है। आपश्री शासन के अनेकानेक कार्यों में यशभागी बने। आप जैन शासन के प्रखर वक्ता के रुप में उभरे थे। आपके प्रभावशाली प्रवचनों में छोटी से छोटी बातों की तल स्पर्शी विवेचना सुनने को मिलती थी। आपने अपनी जादूई वाणी द्वारा कई ऐतिहासिक कार्य किये। वलसाड़ेर नौगामा, राजोदा, घाटकोपर (बम्बई) आदि अनेक संघों में एकता जिसके ज्वलन्त उदाहरण है।

आपके यशस्वी जीवन की अमर यादगार श्री शंखेश्वर तीर्थ में बना भव्य आगम मंदिर है। परमाराध्य गुरुदेवों की स्मृति में आपने मुनि अवस्था में ही कठोर अभिग्रह धारण कर, दिन-रात अथक प्रयास पूर्वक इसका निर्माण करवाया। अलबत्ता इस पुण्य कार्य में आपके सामने कई विघ्न-विरोध उपस्थित हुए, यहां तक कि कोर्ट-कचहरी तक भी पहुंचना पड़ा। किंतु आप निर्भीक अडिग होकर अपने संकल्प में डटे रहे और अंत में विजयी हुए। आगम मंदिर के एकाध कोने तक मे भी आपने अपना नाम अंकित करने का प्रयास नहीं किया। यह आपकी निस्पृहता का ही एक आदर्श उदाहरण है।

30 वर्ष के संयम पर्याय के पश्चात आपको वि.सं.2036 कार्तिक शुक्ल 5 के दिन अहमदाबाद में पूज्य पन्यास श्री प्रबोधसागरजी म. की पुनीत निश्रा में गणिपद तथा वि.सं. 2039 वैशाख शुक्ल-3 के शुभ दिन शंखेश्वर में गच्छाधिपति पूज्य आचार्यश्री देवेन्द्रसागर सूरीश्वरजी म. के वरदहस्त पन्यासपद से अलंकृत किया गया।

गुजरात के साथ-साथ मालवा प्रांत में भी आपने विचरण कर वहां के निवासियों सुषुप्त निद्रा से जागृत किया। वहां अनेक जिनमंदिरों का जीर्णोद्धार, प्रतिष्ठाएं, दीक्षा, आयंबिल शाला, धार्मिक पाठशाला आपकी अमी -ष्टि से ही सम्पन्न हुई। आपने अपने लघुगुरु भ्राता मालव भूषण पं.श्री नवरत्नसागरजी (उस समय उपाध्यायश्री) आदि शिष्यमंडल के साथ ग्रामानुग्राम विचरण कर जैन धर्म की महान प्रभावना की। आप स्वास्थ की -ष्टि से अस्वस्थ थे। किंतु आपने जैन शासन के लिये कभी स्वास्थ्य की चिन्ता नहीं की। आप शासन के प्रति पूर्ण रुप से समर्पित थे।आपके निश्रावर्ति कुल 12 साधु थे।

वि.सं. 2044 फाल्गुन वदी 9 के दिन राजगढ़ से निकले मांडवगढ़ तीर्थ छ:री पालित संघ के तिरला मुकाम पर संध्या में प्रतिक्रमण पश्चात रात्रि 08.07 मिनिट पर आप ब्रह्मलीन हो गये।

आपकी अंतिम संस्कार भूमि धार में अभ्युदय धाम का निर्माण हुआ है तथा शंखेश्वर आगम मंदिर में आपश्री के गुरुमंदिर का निर्माण हुआ है।

भगवान श्रीआदिनाथ का जीवन परिचय

आदिनाथ भगवान (Adinath Bhagwan) को जैन धर्म का संस्थापन तथा प्रथम तीर्थंकर कहा जाता है प्रभु का जन्म भारत भूमि में हुआ था। परमात्मा श्रीऋषभदेव (RishabhDev Bhagwan) तथा श्रीवृषभदेव के नाम से भी जाना जाता है। जैन धर्म की पवित्र पुस्तक आदि पुराण में इनका विस्तृत रुप से उल्लेख है जैसे कि इनका जन्म, तपस्या, केवल्य ज्ञान तथा मोक्ष प्राप्ति (Jain Dharm Ke Pratham Tirthankar) इत्यादि।

भगवान श्रीआदिनाथ का जीवन परिचय (Bhagwan Adinath Ka Jeevan Parichay):-

भगवानआदिनाथ का जन्म (Rishabhdev Jainism in Hindi):-

भगवान श्रीऋषभनाथ का जन्म भारत के पावन शहर अयोध्या की भूमि पर हुआ था। वही अयोध्या भूमि जहां मर्यादा पुरुषोत्तम **भगवान श्रीराम** ने माता **कौशल्या** के गर्भ से जन्म लिया था। श्रीआदिनाथ का जन्म चैत्र माह के कृष्ण पक्ष की नवमी तिथि को उत्तरषाढ़ा नक्षत्र में हुआ था। जैन धर्म के अनुसार तृतीय काल था। इनका जन्म इश्वाकु वंश में हुआ था।

जैन धर्म की मान्यता के अनुसार किसी भी तीर्थंकर (Bhagwan Rishabh Dev) का जन्म उसकी माता को शुभ स्वप्न आने से होता है। इसी कारण श्रीआदिनाथजी की माता को भी उनके जन्म से पहले 14 शुभ स्वप्न आये थे और उसके पश्चात ही उनका जन्म हुआ था।

भगवान श्रीआदिनाथ का परिवार (Bhagwan Adinath Ka Parivar):-

श्रीआदिनाथ के पिता का नाम राजा नाभि था जो अयोध्या के राजा थे। श्रीआदिनाथ की माता का नाम मरुदेवी था। जैन मान्यता के अनुसार श्रीआदिनाथ के दो विवाह हुए थे जिनके नाम सुमंगला तथा सुनंदा (Adinath Bhagwan Ki Patni Ka Naam) थे। सुमंगला से उन्हें 99 पुत्र (चक्रवर्ती राजा भरत सहित) तथा एक पुत्री ब्राह्मी हुए थे। सुनंदा से उन्हें एक पुत्र बाहुबली तथा एक पुत्री सुंदरी हुए थे। स्वयं के मुनि बन जाने के बाद उन्होंने अपने पुत्र भरत को अयोध्या का राजा घोषितकर दिया था और बाकी 99 पुत्रों और उनके पुत्रों में भारत के अन्य राज्य बांट दिये थे। जैन मान्यता के अनुसार भरत के नाम पर ही इस देश का नाम **भारत** पड़ा था।

श्रीआदिनाथ भगवान के नाम (Adinath Bhagwan Ke Naam) **:-**

भगवान श्रीआदिनाथ के कई अन्य नाम थे। यहां तक कि श्रीआदिनाथ नाम भी उनका बाद में पड़ा था। बचपन में उनका नाम श्रीऋषभदेव (Rishabhdev Bhagwan) था। आइए उनके अन्य नाम और उनका अर्थ जानते हैः-

ऋषभदेव/ऋषभनाथ - असली नाम (माता-पिता द्वारा दिया गया)।

आदिनाथ- जैन धर्म के संस्थापक होने के कारण (अर्थात् जिसने इस सृष्टि की शुरुआत की हो)

वृषभनाथ- वृषभ (बैल) का चिन्ह होने के कारण।

नाभिया- पिता नाभि के कारण।

आदिपुरुष- जैन धर्म की स्थापना करने वाले प्रथम पुरुष।

आदिब्रह्मा- मनुष्य को प्रथम बार ज्ञान देने के कारण उन्हें आदिब्रह्मा कहा गया।

प्रजापति- प्रजा को सब सिखाने के लिए उन्हें प्रजापति कहा गया।

इसके अलावा उन्हें पुरुदेव, आदिश्वर, युगादिदेव, प्रथम राजेश्वर, आदिजिन, आदर्श पुरुष, आदीश इत्यादि नाम से भी जाना जाता है।

''जिस देश में धर्म और नैतिकता का स्तर जितना ऊंचा होगा वह उतनी ही उन्नति कर पाएगा। जिस देश की प्रजा न्यायनीति से चलेगी, जहॉं धर्म के विरुद्ध कोई आचरण नहीं होगा, वहां शांति का साम्राज्य फैलेगा। नीति के प्रचलन और धर्म के आचरण से प्रजा का चारित्र ऊपर उठेगा सुखी प्रजा का यही रहस्य है।''

आईए लोगस्स को जाने

प्रश्न-1 लोगस्स का पाठ कौन से शास्त्र में आया है ?

उत्तर-आवश्यक सूत्र में।

प्रश्न-2 इस पाठ के अन्य नाम क्या है ?

उत्तर-चतुर्वि शांतिस्त्व, नामस्तव, चउविस्तव एवं उत्कीर्तन है।

प्रश्न-3 इस पाठ को चतुर्विशतिस्तव का पाठ क्यूं कहते है ?

उत्तर-क्योंकि 24 तीर्थकर की स्तुति की जाती है।

प्रश्न-4 लोगस्स में द्रव्य की अपेक्षा का किस प्रकार वर्णन किया है ?

उत्तर-24 तीर्थकरों के नाम है।

प्रश्न-5 लोगस्स में क्षेत्र की अपेक्षा का किस प्रकार वर्णन किया है ?

उत्तर-इस भारत क्षेत्र के तीर्थंकरों के नाम है।

प्रश्न-6 लोगस्स में काल की अपेक्षा का किस प्रकार वर्णन किया गया है ?

उत्तर-इस अवसर्पणी काल के हैं।

प्रश्न-7 लोगस्स में भाव की अपेक्षा का किस प्रकार का वर्णन किया गया है ?

उत्तर-24 तीर्थकरों की वंदना स्तुति एवं प्रार्थना है।

प्रश्न-8 लोगस्स में कितनी गाथाएं हैं ?

उत्तर-7 गाथाएँ हैं।

प्रश्न-9 लोगस्स में कितने चरण हैं?

उत्तर- 28 चरण हैं।

प्रश्न-10 लोगस्स में कितने अक्षर हैं ?

उत्तर- 256 अक्षर हैं।

प्रश्न-11 लोगस्स की पहली गाथा में क्या है ?

उत्तर- प्रतिज्ञा।

प्रश्न-12 लोगस्स की दूसरी, तीसरी, चौथी गाथा में क्या है ?

उत्तर-24 तीर्थकरों के नाम।

प्रश्न-13 लोगस्स की पाँचवीं, छठी और सातवीं गाथा में क्या है ?

उत्तर-प्रार्थना।

प्रश्न-14 लोगस्स की प्रथम गाथा कौन से छंद में है?

उत्तर-अनुष्टूप छंद में है।

प्रश्न-15 लोगस्स की दूसरी से सातवीं गाथा कौन से छंद में है ?

उत्तर-आर्या छंद में।

प्रश्न-16 लोगस्स के पाठ में तीर्थकर से क्या-क्या मांगा है ?

उत्तर- तीर्थंकरों से आरोग्य, प्रसन्नता, बोधि, समाधि और सीधी सुख की मांग की गई है।

प्रश्न-17 तीर्थंकरों को प्रकृति के माध्यम से किस-किस से श्रेष्ठ बताया है ?

उत्तर-तीर्थंकरों को सूर्य, चंद्र और सागर से श्रेष्ठ बताया गया है।

प्रश्न-18 लोगस्स के पाठ में ज्ञान कहा आता है ?

उत्तर-आइच्चेसु अहियं पयसायरा।

प्रश्न-19 लोगस्स में दर्शन कहां आता है ?

उत्तर-चन्देसु निम्मलयरा।

प्रश्न-20 लोगस्स में चारित्र कहां आता है ?

उत्तर-सागर वर गंभीरा।

प्रश्न- 21 लोगस्स पाठ के बोही शब्द से कौन से कर्म का उल्लेख होता है ?

उत्तर-ज्ञानवरर्णिय और दर्शनावर्निय कर्म।

प्रश्न-22 लोगस्स में आरुग्न से कौन से कर्म का उल्लेख होता है ?

उत्तर- वेदनीय कर्म।

प्रश्न-23 लोगस्स में समाहि से कौन से कर्म का उल्लेख होता है ?

उत्तर-मोहनीय कर्म।

प्रश्न-24 लोगस्स में पहिण जर मरणा से कौन से कर्म का उल्लेख होता है ?

उत्तर-आयुष्य कर्म।

प्रश्न-25 लोगस्स में उत्तमा के कौन से कर्म का उल्लेख होता है ?

उत्तर-उच्च गोत्र का।

प्रश्न-26 लोगस्स में वर से कौन से कर्म का उल्लेख होता है ?

उत्तर-शुभ नाम का।

प्रश्न- 27 लोगस्स में लाभ से कौन से कर्म का उल्लेख होता है ?

उत्तर-अंतराय कर्म।

प्रश्न-28 लोगस्स में तीर्थकर की क्या विशेषता बताई गई है ?

उत्तर-तीर्थकर भगवान बढ़ापा एवं मृत्यु से मुक्त है।

प्रश्न-29 तीर्थकर किस से अधिक निर्मल हैं ?

उत्तर-तीर्थकर चंद्रों से अधिक निर्मल है।

प्रश्न-30 तीर्थकर किससे अधिक प्रकाशमान है ?

उत्तर-तीर्थकर सूर्या से अधिक प्रकाशमान है।

प्रश्न-31 तीर्थकर किसके समान गंभीर हैं ?

उत्तर-तीर्थकर महासागर के समान गंभीर है।

लोभ

बहुत पहले की बात है। एक गरीब और एक अमीर दोनों पास पास रहते थे। अमीर के महल के पास ही गरीब की झौपड़ी थी।

एक बार गर्मी के मौसम में एक अवाबील (पक्षी) गरीब के घर पहुंची। उसने गरीब के घर में घौंसला बनाया। शाम को जब गरीब थक कर घर पहुंचता तो अवाबील उसे मीठे-मीठे गीत सुनाती। इससे गरीब को बड़ा आनन्द आता और वह अपनी थकान को भूल जाता था।

एक दिन गरीब खेत में काम कर रहा था। उसने अचानक अपने ऊपर मण्डराती अवाबील को देखा। अवाबील चीख रही थी। उसकी चीख से गरीब परेशान हो गया। उसे संदेह हो गया कि कोई अशुभ बात हो गई है। वह शीघ्र ही अपने घर गया। उसने देखा कि अवाबील का बच्चा घोसले से नीचे गिर गया है। उसकी एक टांग टूट गई थी। उसने बहुत सावधानी से बच्चे को उठाया और धागे से उसके टूटे हुए पैर को बांधा। उसने बच्चे को फिर से घोसले में रख दिया। कुछ ही दिनों के पश्चात अवाबील का पैर ठीक हो गया। शरद का मौसम आने पर अवाबील अपने बच्चों के साथ दक्षिण की ओर अपने निवास पर वापिस चली गई। बसंत आने पर वही छोटा अवाबील फिर से आया। वह आकर गरीब के हाथ पर बैठ गया। उसने अपनी चोंच से कद्दू का बीज उसकी हथेली पर गिराया। गरीब ने बीज को बो दिया। बेल बड़ी हुई और उसमें कद्दू लगे। गरीब ने एक कद्दू तोड़ा और घर ले जाकर सब्जी बनाने के लिये उसे काटा। काटने पर गरीब ने देखा कि उसके अन्दर सोना ही सोना भरा था। गरीब को यह देखकर बड़ा आश्चर्य हुआ। इस प्रकार सोना मिलने पर उसकी गरीबी दूर हो गई। गरीब की गरीबी दूर होने पर अमीर का माथा ठनका। गरीब के अचानक अमीर हो जाने पर अमीर को बहुत बुरा लगा। अपने हृदय की जलन को छिपाते हुए अमीर ने बनावटी बातों के द्वारा गरीब से इस रहस्य को पूछा। गरीब की बातें सुनकर अमीर ने भी वैसा करने का सोचा।

अपने घर वापिस आकर अमीर ने अवाबील के बच्चे को घोंसले से निकाला और उसका एक पैर तोड़ दिया। इसके पश्चात उसके पैर को धागे से बांधकर उसको घोंसले में रख दिया। कुछ दिनों के बाद अवाबील का पैर ठीक हो गया। जाड़े का मौसम आते ही अवाबील अपनी माँ के साथ दक्षिण की ओर चला गया। अगले बसंत में अवाबील का बच्चा अमीर के लिए कद्दू का बीज लेकर आया। अमीर ने खुश होकर उस बीज को बोया और कद्दू ने फल देना शुरु किया।

अमीर को विश्वास था कि उसमें सोना भरा होगा। वह उसे तोड़कर अपने महल में ले गया। उसने चाकु से कद्दू को काटा। काटने पर कद्दू के अन्दर से धुंआ और लपटें निकली। वह अमीर आग की लपटें एवं धुंए को देखकर घबरा गया। देखते ही देखते पूरे महल में आग फैल गई। महल जलने लगा और कुछ ही घंटों में वह जलकर राख हो गया। यह देखकर अमीर रोने लगा कि नाहक ही उसने लोभ किया। लोभ कितना बुरा है, यह इस कथा का सार है।

बेटों का दुःख, इक्तीस का दुःख....

✻ एस.सी.कटारिया, रतलाम

शाम को घुमते हुए मुझे स्थानीय झाली तलाब के पास मेरे पुराने हमझोली मित्र शर्माजी बहुत दिनों के बाद अचानक मिल गए। बड़े उदास प गमगीन थे। उनकी चर्चा के लहजे को देखकर लगा कि थोड़े में बहुत अधिक मुझे कहना चाहते थे। उनकी बातों के बीच में अर्धविराम देते हुए मैंने कहा- आओ, गुरु सामने रखी बेंच बैठकर तसल्ली से बात करेंगे तब हो जाना विस्तार से शुरु। बातों का रुख और स्वाद में बदलाव लाने के लिए मैं पास के ठेले पर से मुंगफली ले आया। मुंगफली को छिलते हुए अपनी बात को पूरी करते हुए शर्माजी बोले- सुरेश। जैसा तुने सुझाया था, वैसा ही मैंने किया। लेकिन मेरे यहां का घमासान रुकता ही नहीं। तेने तो मेरे दोनों लड़कों के बीच पन्द्रह-पन्द्रह दिन बांट दिये थे। लेकिन जिस माह में 31 दिन हो तो उसका क्या ? कल ही 31 तारीख थी लेकिन कोई श्रवणभाई मुझे झेलने को तैयार नहीं। मधुमेह का मरीज हूं, भूखा न रहना है, फिर भी उपवास करना पड़ा। आगे भी फिर 31 तारीख आएंगी तो क्या करना ? भला हो सरकार का जो पेंशन दे रही है, दो रोटी का इंतजाम तो हो जाएगा। संसार है, सब चलता है और मैं भी चलता हूं, सुरेश भाई- राम-राम !

✻ ईश्वरेच्छा के अनुसार जो हो उसे होने देना, यह भक्तिमान के लिए सुखदायक है।

वर्ग पहेली क्रमांक-334

✽ प्रस्तुति :- जयंतीलाल जैन, रतलाम (म.प्र.)

1	■	2	■	3	4		5	■
6	7		8	■		■	9	10
■		■	11	12		■	■	
13		■	■		■	14		
	■	15					■	
16			■		■	17	18	
	■	■	19		20	■		■
21	22	■		■	23	24		25
■	26				■		■	

बाएं से दाएं:-

3- अंतरिक्ष पार्श्वनाथ का तीर्थ यहां है----(4)

6- संस्कृत नाटक अभिज्ञान शाकुंतलम के रचियता है---- कालिदास (4)

9- श्रेणिक का जीव पद्मनाभ नामक---- चौवीसी के प्रथम तीर्थंकर होंगे (2)

11-एक दिवस रात में होते है आठ----(3)

13-तू जिन्दा है तो जिन्दगी की जीत में यकीन---- अगर कहीं है स्वर्ग तो उतार ला जमीन पर (2)

14-सम्मेतशिखर की तलहटी में स्थित आत्मिक विकास का केन्द्र एक जैन संस्थान----तन (3)

15-धार जिले में अति प्राचीन भोयरा वाला आदिनाथ भगवान का मंदिर है यहां---- (5)

16-भगवान अभिनंदन स्वामी का लांछन----(3)

17-मनमुटाव का पर्याय----स्य (3)

19-राजा सुदर्शन व रानी महादेवी के तीर्थंकर पुत्र का का नाम---- थे (3)

21-है प्रीत जहां की---- सदा मैं गीत वहां के गाता हूं, भारत का रहनेवाला हूं भारत की बात सुनाता हूं (2)

23-अद्भूत तर्कवादी, तर्किक शिरोमणि जैन आचार्य---- सूरी (4)

26-श्रीपाल राजा और मयणासुंदरी ने ओलीजी व्रत करते हुए इनकी आराधना की थी---- (4)

ऊपर से नीचे:-

1- बारह चक्रवती में से एक सु---- (2)

2- इंद्र का निवास स्थान स्वर्ग ----(2)

4- केसरियाजी तीर्थ के निकट भ.आदिनाथ का एक तीर्थ डूंग---- (3)

5- भारत सरकार का एक अभियान-स्वच्छ भारत, सुन्दर----रत (1,1)

7- जामनगर के---- देश उद्धारक कहलाते है आचार्य कुंदकुंद विजयजी (3)

8- ब्राह्मण के लिए प्रयुक्त शब्द---- (2)

10-नालंदा में पहाड़ियों के बीच आचार्य चंदनाजी द्वारा स्थापित जैन संस्थान---- (5)

12-भगवान श्रीशांतिनाथ का जन्म कल्याणक स्थल ----(5)

13-गणधार कदंब की मोक्षस्थली----(5)

14-तस्मै श्री---- नमः (3)

15-समता, समान का पर्याय बरा---- (2)

18-वीरचंद राघवजी गांधी की जन्म स्थली---- (3)

19-जो पढ़ने लिखने में असमर्थ हो---- ढ़(3)

20-राजा सिद्धार्थ भ.महावीर के पिता का---- था (2)

22-देश, मूल्य का पर्यायः व ----(2)

24-पांच सौ आचार्यो द्वारा यहां प्रथम बार आगम लिखे गए थेः व---- पुर (2)

25-चैत्री आठम भ.श्रीआदिनाथ की---- कल्याणक तिथि है (2)

वर्ग पहेली क्रमांक-333 का परिणाम

पी	■	ओ	■	य	का	रि	णी	■
ला	ल	घा	टी	■	लि	■	ती	न
■	की	■	का	क	न्दी	■	■	लि
वी	र	म	■	ल्या	■	अ	शिव	नी
रा	■	ज	म	ण	पु	र	■	गु
य	क्षा	■	■	मं	■	ज	ज	■
त	■	■	आ	दि	ना	■	य	■
न	दी	■	र्यि	■	म	हा	से	न
■	व	र	का	णा	■	थी	■	न्दा

ज्ञानगंगोत्री क्रमांक-334

✲ आचार्य प्रवर श्री मृदुरत्नसागरजी म.सा.

नीचे दिये गये वाक्यों का उत्तर जीवविचार एवं नौ तत्व आधारित लिखें ?

1- मेरे कारण शांत सूर्य का प्रकाश उष्ण लगता है।
2- हम ब्रह्म देवलोक निवासी और एकावतारी है।
3- मैं त्रस जीवों के विचरण क्षेत्र की सीमा रेखा हूं।
4- दो आकृतियां छोड़कर हम सभी आकृतियां धारण करते है।
5- मैं कर्मो के राजा के रुप में पहचाना जाता हूं।
6- मैं चलता-फिरता हूं, फिर भी मैं त्रस नहीं।
7- चॉद व प्रकाश की अशुचि हमारी जन्मभूमि है।
8- मैं निर्मल संयमी महापुरुषों का संदेशवाहक हूं।
9- मेरे अस्तित्व के कारण ही आप चलते-फिरते हो।
10-मेरे अक्तित्व के कारण ही आप चलते फिरते हो।
11-हम कमजोर है पर आप हमें सत्य नहीं कर सकते।

✲ दूध के कण-कण में घी समाया होता है। हाथ डालकर उसे किसी एक स्थान से नहीं निकाला जा सकता। इसके लिये समूचे दूध का मंथन करना पड़ता है। जीवन इसी तरह एकांगी नहीं है। उसके किसी अवयव-विशेष को या प्रकृति-विशेष को उभारने से काम नहीं चलेगा। आवश्यक है कि अंतरंग और बहिरंग जीवन के हर पक्ष में उत्कृष्टता का समावेश किया जाए। ईश्वर का निवास किसी एक स्थान पर नहीं है। वह सत्प्रवृत्तियों का समुच्चय समझा जा सकता है। ईश्वरोपासना के लिये जरुरी है कि व्यक्तित्व के समग्र पक्ष को श्रेष्ठऔर समुन्नत बनाया जाए।

नोट- पोस्टकार्ड पर अपने पते के साथ शहर के पिनकोड नंबर अवश्य डालें।

प्रिय पाठकों! उपर्युक्त प्रश्नों के उत्तर हमें पोस्टकार्ड पर लिखकर हमें दिनांक 25-2-2023 तक भेज दीजिये। सही उत्तरों में से लक्की ड्रा निकालकर प्रथम तीन को क्रमशः51/-, 31/-, 21/- रूपये की राशि से सम्मानित किया जायेगा साथ ही उत्तीर्ण होने वालों के नाम ''आगमोद्धारक'' मासिक में प्रकाशित किये जायेंगे। भेंट राशि एम.ओ. द्वारा भेजी जायेगी। - सम्पादक

वर्ग पहेली क्रमांक-332 के परिणाम

विजेता:-

1- सौ. प्रेमलता कोचर, वर्धा (महा.) -प्रथम
2- रेशम कोठारी, नीमच (म.प्र.) -द्वितीय
3- भारती जैन, देवास (म.प्र.) - तृतीय

इनके भी उत्तर सही थे:-

स्नेहलता जैन, मंदसौर, श्रीमती चंदनबाला जैन, देवास, प्रीति हिंगड़, नरवर, श्रीमती प्रभा जैन, देवास, सुधा लोढ़ा, उज्जैन, लेखारानी, नीमच।

ज्ञानगंगोत्री क्रमांक-332 के परिणाम

नोटः- ज्ञान गंगोत्री-332:- 5 वां उत्तर सभी का गलत होने से पुरस्कार नहीं दिया जा रहा है।

वर्ग पहेली क्रमांक-333 के परिणाम

नोटः- वर्ग पहेली-333 अधूरी छपने से निरस्त की गई है।

ज्ञानगंगोत्री क्रमांक-333 के परिणाम

विजेता:-

1- श्रीमती शशि भाण्डावत, शाजापुर (म.प्र.) -प्रथम
2- श्रीमती प्रभा जैन, देवास (म.प्र.) -द्वितीय
3- प्रेक्षा प्रीसा धारीवाल,शुजालपुरसिटी(म.प्र.)- तृतीय

सही उत्तर-

1- ना 2- हां, 3- हां, 4- हां, 5- ना, 6- ना, 7- ना, 8- हां, 9- हां, 10- ना, 11- ना।

इनके भी उत्तर सही थे:-

सुधा लोढ़ा, उज्जैन, स्नेहलता जैन, मंदसौर।

✲ प्रतिदान की अपेक्षा बिना, अनासक्ति से दिया गया दान ही उत्कृष्ट दान है।

सूचना- अब पहेली के लिये ड्रा द्वारा प्रोत्साहन राशि पुरस्कार में दी जायेगी। इसके लिये ड्रा निकालकर क्रमशः तीन पुरस्कार तीन विजेताओं को रुपये 31/-, 21/-, 11/- एम.ओ.भेजे जावेंगे। सही उत्तरवाले नाम हम छापेंगे ही। आप सहयोग बनाये रखिये। धन्यवाद।

शासन समाचार

जैनं जयति शासनम्

गुजरात के बाद अब मालवा और राजस्थान में युवा जैनाचार्यश्री के अनेक जिनशासन प्रभावना के प्रभावी आयोजन

❋ 21 फरवरी को महामांगलिक हुई। ❋ मध्यप्रदेश- राजस्थान के संघों में अनेक आयोजन। अंजन प्रतिष्ठा-दीक्षा में निश्रा रहेगी। ❋ गुरु मंदिर प्रतिष्ठा महोत्सव प्रतापगढ़ में होगा। ❋ अनेक प्रांतों से चार्तुमास की विनंती मुबई में हो सकता है अगला चार्तुमास।

शिवगढ़-महाराष्ट्र-गुजरात प्रांतों में अनेकाविध शासन प्रभावना के कार्य जैसे भूमिपूजन, अंजन-प्रतिष्ठा महामांगलिक सम्पन्न करवाने के साथ छःरिपालित संघों के आयोजन से परमात्मा प्रभुवीर के शासन में चार चांद लगाकर गुरु श्री नवरत्न का नाम जैन जगत में रोशन करने वाले युवा जैनाचार्य श्री विश्वरत्नसागर सूरीश्वरजी म.सा. स्वयं और अपने शिष्य परिवार के साथ श्रमण जीवन का जोरदार निर्वाहन करते रहे हैं। अब युवा जैनाचार्यश्री की अपने गुरुकुल के युवा मुनि भगवंत प.पू. मुनि श्रीकीर्तिरत्न सागरजी म. सा. ,प.पू. मुनि श्रीतीर्थरत्नसागरजी म. सा. प.पू. मुनि श्रीउदयरत्नसागरजी म. सा. ,प.पू.मुनि श्री उत्तमरत्नसागरजी म. सा. ,प.पू.मुनि श्रीउज्ञवलरत्न सागर जी म. सा.,प.पू. मुनि श्री,प.पू. मुनि श्रीरम्यरत्न सागरजी म. सा.,प.पू. मुनिश्रीलब्धि रत्न सागर जी म. सा.मुनिश्री शौर्यरत्न सागरजी म.सा. मुनिश्री ऋषभरत्न सागरजी म.सा.मुनिश्री सिध्दरत्न सागरजी म.सा. आदि ठाणा के साथ मालवा पधार गये है। शिवगढ़में दिनांक 17 से 22 फरवरी तक अंजन प्रतिष्ठा का आयोजन हुआ। यहां जीर्णोद्धार के उपरांत श्री शीतलनाथ प्रभु का जिनालय निर्मित हुआ है। दिनांक 19 फरवरी को शिवगढ़ में प्रभु की यादगार भव्य रथयात्रा का आयोजन हुआ। प्रभु का जन्म कल्याणक के बाद 21 फरवरी को महाप्रभावी महामांगलिक का आयोजन तथा कुमारपाल राजा की भव्य आरती हुई। रात्री में अंजन उपरांत प्रातःकाल शुभबेला में दिनांक 22 फरवरी को प्रतिष्ठा सम्पन्न हुई इसके साथ ही मालवा के अन्य नगरों में भी आपके प्रवास विहार के साथ विभिन्न धार्मिक आयोजन होंगे इसके लिये विभिन्न संघों के द्वारा विनंती की गई है। यहां से आपका विहार तनोड़िया की ओर हुआ जहां 28 फरवरी से 4 मार्च तक प्रतिष्ठा महोत्सव का आयोजन हुआ। यहां से विहार राजस्थान के प्रतापगढ़ की ओर हुआ जहां 10 मार्च को पूज्यपाद मालव भूषण गुरुदेव आचार्य भगवंत श्री नवरत्नसागर सूरी जी महाराजा के 80 वें जन्मदिन पर गुणानुवाद सभा तथा गुरु प्रतिमा की प्रतिष्ठा होगी। यहां से जोधपुर 108 पार्श्वचंदन मंदिर का प्रतिष्ठा महोत्सव 3 मई को है। दिनांक 12 मई को बांद्रा में अंजन-प्रतिष्ठा महोत्सव में निश्रा रहेगी। विहार यात्रा में अनेक श्रीसंघों, नगरों में विविध शासन प्रभावक कार्य भी होंगे। अनेक स्थानों की विभिन्न प्रांतों से आगामी चार्तुमास की विनंति है। इसकी घोषणा मार्च-अप्रेल में हो सकती है। अन्य कार्यक्रमों की रुपरेखा बन रही है। मुंबई में भी पुनः आगामी चार्तुमास की विनंती है।

साध्वीश्री सौम्यवंदना श्रीजी का चार्तुमास

उज्जैन- सागर समुदाय की साध्वीवर्या श्री सौम्यवंदना श्रीजी म.सा. आदि ठाणा का चार्तुमास ऋषभदेव छगनीराम पेढ़ी पर होने की संभावना है। इस संदर्भ में दिनांक 26 जनवरी 2023 को रिंगनोद में होनेवाले दीक्षा महोत्सव में पूज्य ओली आराधक आचार्य श्री चंद्ररत्नसागरजी म.सा. आदि ठाणा की निश्रा में घोषणा हुई

परम पूज्य युवा जैनाचार्य श्री विश्वरत्नसागर सूरी जी म. सा. के आगामी संभावित आयोजनः-

✻ शिवगढ़ नगर में अंजनशलाका प्रतिष्ठा महोत्सव-22 फरवरी 2023 हुई।✻ प्रतापगढ़ नगर में परम पूज्य आचार्यदेव श्री नवरत्नसागर सूरीश्वरजी म.सा. का 80 वां जन्म महोत्सव- दिनांक 10 मार्च 2023।✻ प्रतापगढ़ नगर में पोरवालो का मंदिर में भव्यातिभव्य प्रतिष्ठा महोत्सव- दिनांक 12 मार्च 2023।✻ सूर्यनगरी जोधपुर के समीप स्थित 109 पार्श्वचंदन प्रभावती मंदिर में 109 पार्श्वनाथ भगवान की प्रतिमाओं की भव्य अंजनशलाका प्राण प्रतिष्ठा महोत्सव- दिनांक 3 मई 2023।✻ हाड़ौति क्षेत्र में स्थित लोकप्रिय धर्मानुरागी राजस्थान केबिनेट मिनिस्टर श्री प्रमोद जैन भाया के द्वारा बारा नगर में निर्मित भव्य जिनालय की प्राण प्रतिष्ठा अंजनशलाका महोत्सव में निश्रा उपस्थिति- दिनांक 23 मई 2023।

वचनसिद्ध प्रतिष्ठाचार्य श्री नरदेवसागर सूरीजी महाराजा भोपावर में गणिपदवी और ध्वजारोहण के मुख्य निश्रादाता रहे

✻ मुनिश्री अक्षतरत्नसागरजी को गणि पदवी दी गई।
✻ पंच दिवसीय आयोजन में अंजनशलाका भी हुई।

भोपावर - पूज्यपाद आचार्य भगवंत प्रतिष्ठाचार्य श्री नरदेव सागर सूरीजी महाराजा, आचार्य भगवंत आयंबिल आराधक श्री चन्द्ररत्नसागर सूरीजी महाराजा एवं आचार्य भगवंत श्री मतिचंद्रसागर सूरीश्वरजी म.सा. पूज्यपाद गणिवर्य श्री आदर्शरत्नसागर जी म.सा. आदि ठाणा के साथ आयंबिल आराधक वैयावच्च प्रेमी मुनि श्री पद्म कीर्तिसागरजी म.सा. के साथ बड़ी संख्या में साधु-साध्वी भगवंतों का मंगल प्रवेश 18 फरवरी को हुआ था। गणिवर्य श्री आदर्शरत्नसागरजी म.सा. की 21 फरवरी को महामांगलिक का आयोजन हुआ यहां गुरु भगवंतों की निश्रा मे मुनिपुंग शतायधानी श्री अक्षत रत्नसागरजी म.सा. का गणिपद पर प्रतिष्ठित किया गया। भोपावर महातीर्थ में श्री शांतिनाथ प्रभु की तृतीय वर्षगांठ के शुभ प्रसंग पर आपको गणि पद प्रदान किया गया इसके साथ ही भोपाल में मार्च में होनेवाले प्रतिष्ठा महोत्सव में विराजित होने वाले परमात्मा की अंजन शलाका भी इस प्रसंग पर होने जा रही है।

गुरु मंदिर की वर्षगांठ 4 मार्च को हैदराबाद में

हैदराबाद- यहां के चैतन्यपूरी स्थित योगीराज शांतिसूरीजी महाराजा के गुरु मंदिर की वर्षगांठ 4 मार्च को आयोजित हुई इसके पूर्व 26 जनवरी को गुरुदेव का 133 वीं जन्म जयंति तथा 118 वां दीक्षा दिवस मनाया गया। पूज्य मुनिश्री तीर्थसुन्दर विजय जी म.सा. की निश्रा में यह आयोजन हुआ, इसमें भव्य रथयात्रा भी निकाली गई।

जीरावला महातीर्थ में 6 टी वर्षगांठ पर ध्वजारोहण हुआ

जीरावला- अंजन प्रतिष्ठा महोत्सव में स्मरणीय ऐसे श्री जीरावला पार्श्वनाथ प्रभु के पंच शिखरी पार्श्व वल्लभ महा जिनप्रसाद का 6 टा वार्षिक ध्वजारोहण महोत्सव पूज्य आचार्य भगवंत श्री प्रबोधचंद सूरीजी म.सा. आदि ठाणा की निश्रा में हुआ। दिनांक 25 जनवरी को श्री पार्श्व पंचकल्याणक पूजन तथा 26 जनवरी को स्नात्र महोत्सव मनाया गया। दिनांक 27 जनवरी माघ शुक्ल-6 को प्रातःकाल ध्वजा का वरघोड़ा निकाला गया। सत्तर भेदी पूजन पढ़ाने के साथ ध्वजारोहण का मंगल आयोजन हुआ। मुख्य ध्वजा के लाभार्थी श्रीमती भवरीबाई घेवरचंदजी सुराणा परिवार बैंगलोर थे।

आचार्यश्री महासेनसूरीजी म. सा. का चार्तुमास बेंगलोर में

प.पू. दादा गुरुदेव आ.श्री लब्धि सूरीजी म. के पूज्य शंखेश्वर प्रेमी आ. महासेन सूरीजी ठाणा-4 का **वि.सं. 2079 का चार्तुमास विनंति अनेक संघों की, इसमें अक्की पेठ बेंगलोर श्री वासुपूज्य संघ की जय बुलाई गई।**

भोपावर-तृतीय ध्वजारोहण वर्षगांठ एवं महामांगलिक का आयोजन हुआ

भोपावर- 87000 हजार वर्ष प्राचीन श्री शांतिनाथ प्रभु का महातीर्थ अब विश्व ख्याति प्राप्त कर चुका है। दो वर्ष पूर्व फाल्गुन सुदी-3 को भव्य प्रतिष्ठा महोत्सव सम्पन्न हुआ था। मोन्टेक्स ग्रुप के श्री रमणभाई मुथा के नेतृत्व में यादगार महोत्सव का आयोजन आज भी धर्मिष्ठों को याद आता है। महातीर्थ का तृतीय ध्वजारोहण महोत्सव पूज्यपाद आचार्य भगवंत प्रतिष्ठाचार्य श्री नरदेव सागर सूरीजी महाराजा, आचार्य भगवंत आयंबिल आराधक श्री चन्द्ररत्नसागर सूरीजी महाराजा एवं आचार्य भगवंत श्री मतिचंद्रसागर सूरीश्वरजी म.सा. पूज्यपाद गणिवर्य श्री आदर्शरत्नसागर जी म.सा.आदि ठाणा श्रमण-श्रमणी वृंद की पावन निश्रा में फागुन सुदी-2 दिनांक 21फरवरी को पूज्यश्री महामांगलिक एवं फागुन सुदी-3 दिनांक 22 फरवरी को श्री शांतिनाथ प्रभु के भव्य जिनालय एवं गुरु मंदिर पर ध्वजारोहण सम्पन्न हुआ।सत्तर भेदी पूजन पढ़ाई गई। चैन्नई निवासी श्री तेजराज कोठारी परिवार ध्वजा के लाभार्थी रहे। इस अवसर पर पूज्यपाद गुरुदेवश्री के मंदिर पर भी ध्वजा चढ़ाई गई। श्री रमणभाई, श्री विजयजह मेहता आदि के साथ अनेक विशिष्ट अतिथियों का आगमन हुआ।

द्वारिका में नेमिजिन तीर्थ की अंजन प्रतिष्ठा आचार्य पद महोत्सव

मुंबई- द्वारिका में पूज्य आचार्य भगवंत श्री ललितशेखर, श्री मनमोहन श्री रविशेखार,श्री हेमप्रभ,श्री धर्म शेखर श्री जयधर्म सूरीश्वरजी म. सा. आदि विशाल संख्या में साधु-साध्वी भगवंतों की निश्रा में श्री नेमिजिन तीर्थ की अंजन प्रतिष्ठा महोत्सव के साथ आचार्य पद प्रदान एवं दीक्षा महोत्सव का भव्य आयोजन होने जा रहा है। दिनांक 19 से 24 फरवरी 2023 तक आयोजित महोत्सव में बावन जिनालय प्रतिष्ठा हुई और पंन्यास श्री हर्षशेखर विजय जी म.सा. का आचार्य पद प्रदान किया गया इसके लिये एक स्पेशल ट्रेन से धर्मिष्ठ लाभार्थी भीवड़ी से द्वारिका पहुंचें।

मुनिश्री विशुद्धरत्न सागरजी का हिमालय की ओर प्रयाण

उज्जैन- पूज्यपाद गुरुदेव मालव भूषण आचार्यदेवेश श्री नवरत्नसागर सूरीजी महाराजा के गुरुकुल के रत्न मुनिश्री विशुद्ध रत्नसागरजी एवं मुनिश्री समकित रत्नसागरजी म.सा. ने हिमालय की ओर प्रयाण किया है, नाम के अनुरुप शुद्ध सात्विक चारित्र का पालन करने वाले मुनिश्री एकांत में रहते हुए साधना करते रहे है, मोबाईल आदि से सम्पर्क से दूर रहने वाले मुनिश्री का विहार झांसी से लखानऊ होते हुए चल रहा है।

सुव्रत उदय उपधान महोत्सव

चैन्नई- पूज्यपाद गच्छाधिपति आचार्य भगवंत श्री उदयप्रभ सूरीश्वर जी म.सा. आदि ठाणा की निश्रा में चैन्नई में श्रावक से श्रमण बनने धर्म क्रिया आराधना का आयोजन होने जा रहा है। उपधान तप में प्रवेश का प्रथम मुर्हूत 23 अप्रेल 2023 को है। उपधान तप की माल दिनांक 11 जून 2023 को होगी। उपधान तप के लाभार्थी संघवी सरोज बहन कोठारी परिवार है।

श्री गिरनार महातीर्थ का संघ

रावणगिरी- पंकुबहन परमार परिवार के द्वारा प्राचीन वंथली तीर्थ से श्री गिरनार महातीर्थ का छःरिपालित यात्रा संघ का आयोजन दिनांक 11 से 14 फरवरी तक किया गया। संघ पूज्य जैनाचार्यश्री रश्मिरत्नसूरीजी म.सा., आचार्यश्री संयमरत्नसूरीजी म.सा., आचार्य श्री हेमवल्लभ सूरीजी म.सा. आदि विशाल संख्या में श्रमण-श्रमणीवृंद की निश्रा में निकला।

पू.पं. विरागसागरजी को आचार्य पदवी

मुंबई- पूज्यपाद गच्छाधिपति संघ स्थविर आचार्य भगवंत श्री दौलतसागर सूरीजी महाराजा की आज्ञा से आचार्य भगवंत श्री हर्षसागरसूरीजी म.सा. के सुशिष्य क्रांतिकारी पूज्य पंन्यास प्रवर श्री विरागसागरजी म.सा. को आचार्य पद पर प्रतिष्ठित किया जायेगा। आपकी आचार्य पदवी इसी वर्ष होगी।

✲ अपने अपमान से बचना हो तो मर्यादित बोलें।

।। श्री परमात्माय नमः ।।

शेठ नगीनचंद कपुरचंद झवेरीना प्रयासथी

जीवदया फंड

श्री नगीनचंद कपुरचंद झवेरी

सुभाष चौक, गोपीपुरा, सुरत - 1
मो.: 09825414470 / 9820078772
स्थापना वि. सं. 1962
इ.स. 1906 रजि. नं.- 1744
PAN : AAATS8024L

पैसा भेजने का पता :

प्रफुल अमीचंद झवेरी
26, खटाऊवाडी, गोरेगांवकर लेन,
सेन्ट्रल सिनेमानी पाछळ,
मुंबई - 400 004.
ऑफिस फोन : 2387 8476
मोबाईल : 98200 78772

धर्मप्रेमी सद्‌गृहस्थश्री, सादर प्रणाम !

जीवदया फंड संस्था सुरत के दानवीर शेठ श्री नगीनचंद कपुरचंद झवेरी के प्रयासो के द्वारा स्थापित एक रजीस्टर्ड ट्रस्ट है। यह जीवदया फंड संस्था के द्वारा कतल के लीये जानेवाले ओर बीन उपयोगी जीवो को छुडवाकर के सुरत की पांजरापोल में भेजा जाता है। यह कार्य पीछले ११४ सालो से यह संस्था कर रही है। ओर शेठश्री के उत्तम पुण्यबल की वजह से यह कार्य के अंदर लगातार प्रतिवर्ष प्रगति हो रही है। जैसे की पीछले पांच सालो के दौरान (एप्रील - २०१४ से मार्च - २०१९) १०७९८ जीवो को छुडाया / बचाया गया है।

हमारे आंगन में आनेवाले बेझुबान जीवो को पांजरापोल के अंदर ट्रस्टीओ के द्वारा नीगरानी करके सोंपा जाता है। ओर पशु के संपूर्ण जीवनकाल तक उसको संभालकर रखा जाता है।

अनंत दया के सागर भगवान श्री महावीर प्रभु के शासन के दो स्तंभ है। अहिंसा ओर जीव के उपर मैत्री। सर्वज्ञश्री के यह संदेश को सार्थक करने के लिये दोनो का भी बहुत बडा महत्व है। जैसे की

आपके परिवार के कोई भी सभ्य का जन्मदिन
पशु परिवार के एक सभ्य को जीवनदान देकर मना सकते है।

आपके परिवार मे आये हुए शुभ लग्नोत्सव के दीन
एक पशु युगल को जीवनदान देकर उनका जीवन उत्सवमय बना सकते है।

कर्मसंयोग के कारन आई हुई बीमारी का दुःख ओर अशाता को टालने के लीये
कोई पशु को अभयदान प्रदान करके महाशाता का सुख प्रदान करे।

अपने स्वजन के मृत्यु के दुःखद समय में एक पशु को
मृत्यु के मुखमें से छुडवाने से आपश्री को सांत्वना भी प्राप्त होती है ओर आपके स्वजन की सदगति प्राप्ती की प्रार्थना भी कर सकते है।

पवित्र पर्व के धर्मोत्सव के समय एक जीवको
जीवनदान देकर पर्व उपासना को दया ओर करुणामय बनाये।

आपश्री हंमेशा के लीये तिथि का भी चयन कर सकते है। यह तिथि के दीन दान में दी गई रकम का जो ब्याज मीलता है उसमें से जीव को छुडवाया जायेगा।

यह संस्था के द्वारा एप्रील २०२० से मार्च २०२१ के एक वर्ष के समय जो की लोकडाउन था, उस समय में कुल २५९१ जीवो को छुडवाया गया है।

आपश्री चेक या ड्राफ्ट जीवदया फंड के नाम का बनाए। रोकड रकम में भी आप योगदान दे सकते है। (आपश्री का अनमोल योगदान सुरत ओर मुंबई में उपर दिये गये पते पर भीजवा सकते है।)

आपश्री आपका योगदान हमारे बेन्क खाते के अंदर भी जमा करवा सकते है। जीसकी जानकारी नीचे दी गई है। हमारी संस्था का 80-G नंबर AAATS 8024 LF 20210 है।

Bank Name	:	AXIS BANK LTD.	Bank Name	:	BANK OF INDIA
A/c. Name	:	JIVDAYA FUND	A/c. Name	:	JIVDAYA FUND
IFSC	:	UTIB0002274	IFSC	:	BKID000001
A/c. No.	:	921010033621820	A/c. No.	:	00120100001219
Branch	:	Charni Rd, Mumbai	Branch	:	Mumbai Main Branch

जीवदया की शुभ भावना से कीये हुए कार्य से अक्षय सुख ओर मोक्षमार्ग की प्राप्ति होती है ओर नरकगति के कर्म का ओर अनेक भवो के पापो का क्षय भी जीवदया का कार्य करने से होता है। जीवदया का कार्य तीनो लोकमें श्रेष्ठ ओर सर्वोत्तम कार्य है।

दान अेज सफल जीवन

लि. ट्रस्टीगण

प्रफुल अमीचंद झवेरी
पुष्पसेनभाई पानाचंद झवेरी
विरेन्द्र नेमचंद झवेरी

नलीनभाई फकीरचंद
शरदभाई गुलाबचंद कांटावाला
उषाकांत साकेरचंद झवेरी

वरिष्ठतम जैनाचार्य श्री नंदीवर्धनसूरीजी के 90 वें जन्मदिवस पर 21 दिवसीय आयोजन

पूना- सागर समुदाय के वरिष्ठ-तम जैनाचार्य श्री नंदीर्धनसागरसूरीजी महाराज 90 वर्ष की वय को प्राप्त कर रहे है। आपकी अनुमोदनार्थ संपूर्ण भारत के जैन संघों में 21 दिवसीय जिन भक्ति गुरुभक्ति आयोजन किया जायेगा। पूज्यपाद अज्ञात शत्रु आचार्य भगवंत श्री नंदीवर्धनसागरसूरीजी म.सा. के 90 वें जन्म दिवस पर 90 जिनालयों में 18 अभिषेक, महाराष्ट्रकी 90 पाठशाला के शिक्षकों का बहुमान, 900 साधर्मिक परिवारों को कीट अर्पण करने के साथ जीवदया-अनुकंपा के भारत भर में 90 छोटे-बड़े कार्य किये जा रहे है। सर्वाधिक संयम जीवनवाले ऊर्जाप्रदाता आपश्री 5 वें आचार्य है। सूरत के श्री रतनलाल पानाभाई मद्रासी की गच्छाधिपति श्री माणिक्यसागर सूरीजी के वरद हस्ते सूरत में आगमोद्धारकश्री की मूर्ति प्रतिष्ठा दिनांक 9 फरवरी 1951 को शुक्रवार के दिन हुई थी उसी दिन आपकी दीक्षा सम्पन्न हुई। आपको पूज्यपाद मालव देशोद्धारक श्री चंद्रसागरसूरीजी की देशना पुन वैराग्य उत्पन्न हुआ था और पूज्यपाद गच्छाधिपति श्री देवेन्द्रसागर सूरीजी महाराजा के शिष्य घोषित किया गया था।

उज्जैन में चैत्रमास ओली जैनाचार्यश्री वीररत्न सूरिजी और गणिवर्य आदर्शरत्नसागरजी की निश्रा में होगी

✻ गणिवर्य श्री की निश्रा में दीक्षा भी होगी।

✻ 29 मार्च से 6 अप्रेल तक आयोजन में 400 आराधक भाग लेंगे।

उज्जैन- 2023 वर्ष के चैत्र माह में नवकार ओलीजी की आराधना अनुयोगाचार्य श्री वीररत्नविजयजी म.सा. जो 5 फरवरी को आचार्य पद पर प्रतिष्ठित हुवे है आप एवं गणिवर्य श्री आदर्शरत्नसागरजी म.सा. की निश्रा में होने जा रही है। ओली आराधना 29 मार्च से 6 अप्रेल तक श्री ऋषभदेव छगनीराम पेढ़ी खाराकुआ में होगी। आराधना में लगभग 400 आराधकों के भाग लेने की संभावना है। ओलीजी की तैयारी आरंभ हो गई है। भाग लेने वाले आराधक 90090 26932 पर सम्पर्क कर फार्म भरें, 10 मार्च तक फार्म भरने वाले को ही प्रवेश दिया जायेगा।

आचार्यश्री रत्नचंद्र सूरीजी का चार्तुमास नवसारी में

नवसारी- दक्षिण गुजरात की डायमंड नगरी नवसारी नगर की पावन धरा पर श्री महावीर नगर जैन श्री संघ एवं श्री चिंतामणी जैन श्री संघ नवसारी के तत्वावधान में वर्ष 2023 व विक्रम संवत् 2079 का चार्तुमास परम गच्छाधिपति आचार्य भगवंत श्री राम सूरीश्वरजी म.सा. (डहेला वाला) के शिष्यरत्न परम पूज्य आचार्य भगवंत श्रीमद् विजय रत्नचंद्र सूरीश्वरजी म. सा., परम पूज्य आचार्य भगवंत श्रीमद् विजय उदयरत्नसूरीश्वरजी म. सा. आदि विशाल श्रमण-श्रमणीवृंद का होगा।

बंधु त्रिपुटी मुनिश्री की पालीताना में योग क्रिया

पालीताना- पालीताना- सागर समुदाय के बंधु त्रिपुटी मुनि भगवंत श्री आगम-प्रशम-व्रजरत्नसागरजी म.सा. आदि ठाणा गोवा से विहार करते हुए महाराष्ट्र से प्रसार कर गुजरात पहुंचे थे। अंकलेश्वर संघ ने आपकी अगवानी की, यहां से आपका विहार श्री शत्रुंजय महातीर्थ की ओर हुआ। यहां आपकी निश्रा में छःरि पालित यात्रा संघ मुछाला महावीर सोश्यल ग्रुप धाणेराव के द्वारा का आयोजन 15 फरवरी से 18 फरवरी 2023 तक हुआ। संघ माल 19 फरवरी 2023 को हुई। पालीताना में आप की यांग क्रिया चल रही है साथ ही आगे के जिनशासन प्रभावना के आयोजन तथा चार्तुमास के बारे में निर्णय लिया जायेगा।

श्री शांतिनाथ जिनालय की वर्षगांठ

सूरत- पाल में श्री शांतिनाथ प्रभु के जिनालय और गुरुचरण पादुका की तृतीय वर्षगांठ पूज्य गच्छाधिपति आचार्य देवेश श्री विजय हेमप्रभ सूरीश्वरजी म.सा.आदि ठाणा की निश्रा में दिनांक 12 फरवरी को आयोजित हुई परमात्मा के 18 अभिषेक ध्वजारोहण एवं सत्तरभेदी पूजन पढ़ाई गई।

श्री आचारंग सूत्र पर वाचना हुई

हैदराबाद-पूज्य वर्धमान तपोनिधि आचार्य भगवंत श्री नयचंद्र सागरसूरीजी म.सा. के सुशिष्य महाशतावधानी मुनिश्री अभिनंदन सागरजी म.सा. के द्वारा दिनांक 16 से 20 फरवरी तक आचारंग सूत्र पर आगम वाचना दी गई। आयोजन पार्श्व पद्मावती आराधना भवन में हुआ।

महातीर्थ अयोध्यापुरम् की वर्षगांठ और प्रसन्नता से विराग की ओर प्रयाण आचार्य पद प्रदान हुआ

✻ पंचान्हिका महोत्सव ने रंग जमाया।
✻ सागर समुदाय को तीन माह में चार आचार्य मिले।
✻ आगमोद्धारक परिवार की अनुमोदना।

अयोध्यापुरम्- जैन जगत के भव्य प्रतिष्ठावान महातीर्थ अयोध्यापुरम् में बंधु जैन जगत में ख्यातिनाम श्री अयोध्यापुरम् महातीर्थ में संस्थापक बंधुबेलड़ी आचार्य भगवंत पूज्यपाद जिनचंद्रसागरसूरीश्वरजी एवं पूज्यपाद श्री हेमचंद्रसागरसूरीजी महाराजा आचार्य श्री लब्धिसागर सूरीजी म.सा.आदि विशाल संख्या में साधु-साध्वी भगवंतों की अमृत निश्रा में यहां महातीर्थ की 20 वीं वर्षगांठ के साथ दो नूतन आचार्य भगवंत श्री प्रसन्न चंदसागरसूरीजी एवं श्री विरागचंद्र सागर सूरीजी म.सा.पद प्राप्ति के बाद जैन जगत के लिये कल्याणकारी शासन प्रभावना के दायित्व की ओर निष्ठा से निभायेंगे। पंच दिवसीय महोत्सव 8 से 12 फरवरी तक आयोजित हुआ। महावद-3 दिनांक 8 फरवरी को पंच कल्याणक पूजन दिनांक 9 फरवरी को परमात्मा के 18 अभिषेक एवं 10 फरवरी को भव्य रथयात्रा के साथ कृपासूत्र नाम से ज्ञान को समर्पित विशिष्ट आयोजन हुआ। दिनांक 11 फरवरी को शक्रस्तव महाभिषेक एवं सूरीमंत्र महिमा महोत्सव का आयोजन हुआ। महावद-6 दिनांक 12 फरवरी को दादा के जिनालय पर 20 वीं ध्वजा फहराई गई इसके बाद आचार्य पद प्रदान की क्रियाविधि का शुभारंभ हुआ, शुभ मंगल वेला में पद प्रदान गुरु भगवंतों ने किया। नूतन आचार्य श्री प्रसन्नचंद्र सागर सूरीजी म.सा., आचार्य भगवंत श्री जिनचंद्रसागर सूरीजी महाराजा के सुशिष्य है, आपका संयम जीवन 33 वर्ष का है, सन् 1989 को सूरत में मगसर सुद-5 वि.सं. 2046 को आप दीक्षित हुए। नूतन जैनाचार्य श्री विराग चंद्रसागरसूरीजी म.सा., आचार्य भगवंत श्री हेमचंद्रसागरसूरीजी महाराजा के सुशिष्य है, आपका संयम जीवन 32 वर्ष का है एवं आपकी दीक्षा महासुद-2 वि.सं. 2047 सन् 1990 को सूरत में सम्पन्न हुई थी, आपके सांसारिक पिताश्री भी मुनिराज श्री कैलाशचंद्र सागरजी म.सा.के नाम से दीक्षित है, आपका संयम जीवन 26 वर्ष का है, आगमोद्धारक परिवार इस मंगल प्रसंग की अनुमोदना करता है।

वाणी के जादूगर श्री जितरत्नसागरसूरीजी पालीताना संध में निश्रा पदान करेगें

✻ आगामी चार्तुमास पूना निश्चित हुआ।

भोपावर- पूज्यपाद आचार्य भगवंत श्री जितरत्नसागर सूरीजी महाराज 266 ओली आराधक श्री आचार्य श्रीचन्द्ररत्न सागरसूरीजी, मुनिश्री ज्ञानेशरत्नसागरजी मुनि श्री चैत्यरत्नसागरजी, मुनि श्री गोयम सागर जी म.सा. आदि ठाणा सूरत में दिनांक 16 मार्च को पूज्य साध्वीवर्या श्री सम्यरत्ना श्रीजी के 100 ओली पारणा तपोत्सव में निश्रा प्रदान करेंगे। पूज्य जैनाचार्य आचार्य श्री चन्द्ररत्नसागर सूरीजी भोपावर ध्वजारोहण ओर गणि पदवी के बाद सूरत की ओर विहार करेगें। वाणी के जादूगर श्री जितरत्नसागर सूरीजी म.सा. आदि ठाणा का विहार श्री गिरनार तीर्थयात्रा सम्पन्न कर पुनः पालीताना पधारेंगे, यहां अयोध्यापुरम से 6 अप्रेल से आप की निश्रा में छः रि पालित संघा यात्रा का आयोजन होनेवाला है,इसके बाद आपश्री सूरत में दिनांक 16 मार्च को पूज्य साध्वीवर्या श्री सम्यरत्ना श्रीजी के 100 ओली पारणा तपोत्सव में निश्रा प्रदान करेंगे। यहां से आपश्री आदि ठाणा का विहार पूना की ओर होगा। यहां आप चार्तुमास करेंगे, पूर्व में आपका चार्तुमास नागपुर निश्चित हुआ था किन्तु पूना गच्छाधिपति के 85 वें संयम जीवन पूर्ण होने पर आयोजित संयोमोत्सव में निश्रा प्रदान करेंगे।

चार्तुमास....

✻ पूज्य आचार्य श्री राजशेखार सूरीजी म.सा. की आज्ञा से एवं आचार्य श्री रत्नाकरसूरीजी म.सा. की निश्रा में सांचोर में दिनांक 12 फरवरी को पूज्य आचार्य श्री राजरत्न सूरीश्वरजी म.सा. आदि ठाणा का चार्तुमास श्री गोठीवाला ओसवाल जैन संघ पूना में होने की घोषणा की गई है।

पूज्य साध्वीवर्या श्री रम्यरत्नाश्रीजी ने सागर समुदाय का 100 ओली कर गौरव बढ़ाया

✻ आचार्य और पंन्यास पदवी भी हुई।

सूरत- यहां अठवा लांईस जैन श्री संघ में सागर समुदाय के गौरव को बढ़ाने वाला आयांबिल तपोत्सव यादगार बन गया। पूज्य साध्वीवर्या श्री रम्यारत्ना श्रीजी म.सा. को 100 वीं वर्धमान तप ओली आराधना पूर्ण होने पर दिनांक 28 फरवरी से 16 मार्च तक आयोजित तपोत्सव में आचार्य भगवंत श्री चन्द्रानन सागरसूरीजी, जैनाचार्य श्री जितरत्न सागरसूरीजी, आचार्य श्री चन्द्ररत्न सागर सूरीजी, आचार्य श्री सागरचंद्र सागर सूरीजी, आचार्य श्री पूर्णचंद्रसागर सूरीजी म.सा. के साथ विशाल संख्या में साधु-साध्वी भगवंतों की अमृत निश्रा रही। सोने में सुगंध रुप पू. पंन्यास श्री अपूर्वचंद्रसागरजी म.सा. को 36 गुण भण्डारी आचार्य पदों पर प्रतिष्ठित किया गया। गणिवर्य श्री आगमचंद्र सागरजी एवं श्री रम्यचंद्रसागरजी म.सा. को पंन्यास पद पर आरुढ़ किया गया। तपोत्सव में आगम ग्रंथ और तप को भी बधाया गया। दिनांक 14 मार्च को विशाल रथयात्रा का आयोजन होगा एवं 15 मार्च को परमात्मा का भव्य अभिषेक का आयोजन होगा। पूज्य साध्वीवर्या श्रीका पारणा धूमधाम से 16 मार्च को सम्पन्न होगा।

श्री ऋषभदेव मंदिर में अंजन प्रतिष्ठा जैनाचार्य श्री जिनपीयूषसागरसूरीजी की निश्रा में हुई

रायपुर- श्री ऋषभदेव मंदिर ट्रस्ट के अंतर्गत जीर्णोद्धार के उपरांत निर्मित श्री धर्मनाथ जिनप्रसाद के साथ जिन कुशल सूरी दादावाड़ी में अंजन प्रतिष्ठा का भव्य आयोजन 23 फरवरी से 4 मार्च तक आयोजित किया गया। प्रतिष्ठा दादावाड़ी में हुई। गुरु भगवंतों के मंगल प्रवेश के बाद 1 मार्च को मुमुक्षुभाई श्री संदीप कोचर तथा मुमुक्षु बहन प्रज्ञा बोहरा की दीक्षा विधि सम्पन्न हुई। परमात्मा के पंच कल्याणक की जोरदार मंचीय प्रस्तुति हुई। 3 मार्च को मंगल वेला में प्रतिष्ठा सम्पन्न हुई। 4 मार्च को द्वारोद्घाटन के साथ महोत्सव पूर्ण हुआ।

संयम महोत्सव

अहमदाबाद- साबरमती के श्री परमानंद जैन श्री संघ में पूज्यपाद गच्छाधिपति आचार्य देवेश श्री अभयदेवसूरीजी महाराजा आदि विशाल संख्या में साधु-साध्वीजी की अमृत निश्रा में दिनांक 18 फरवरी को मुमुक्षु बहन की दीक्षा सम्पन्न हुई। इस अवसर पर साध्वीश्री ह्रींकारप्रिया श्रीजी म.सा. की बड़ी दीक्षा भी हुई।

✻ प्रत्यक्ष योग होने पर बिना समझाये भी स्वरुप स्थति होनी संभावित मानता हूं और इससे यही निश्चय होता है कि उस जोग का और प्रत्यक्ष चिंतन का फ ल मोक्ष होता है क्योंकि मूर्तिमान मोक्ष वह सत्पुरुष ही है।

99 वीं ओली आरंभ

अहमदाबाद- मालव भूषण प.पू.आ.भ.श्री नवरत्नसागरसूरीश्वरजी महाराजा के शिष्यरत्न प.पू.मुनिश्री मोक्षरत्न सागर जी म.सा. वर्धमान तप की 99 वीं ओलीजी फाल्गुन वदी-13 (गुज. महा वद 13) शनिवार दिनांक 18 फरवरी से आरम्भ हुई है।

प्रतिमाजी का गभारा प्रवेश हुआ

अरसीकेरे- दक्षिण नाकोड़ा तीर्थ के श्री संकट मोचन पार्श्व भैरवधाम में 111 इंच के श्री संकटमोचन पार्श्वनाथ प्रभु 108 इंच की श्री पद्मावतीजी देवी प्रतिमा का मूल गभारे में प्रवेश पर दो दिवसीय आयोजन किया गया। दिनांक 16 फरवरी को प्रतिमाओं का मूल गभारे में प्रवेश तथा नवीन धर्मशाला का उद्घाटन भी किया गया। अंतर्राष्ट्रीय जैन विधिकारक भाई श्री मनोजकुमार बाबूमलजी हरण सिरोहीवाला की प्रेरणा मार्गदर्शन अनुष्ठान सम्पन्न हुए।

80 वर्ष पुराने उपाश्रय का नवीनीकरण

अहमदाबाद- साबरमती श्री संघ में स्थित 80 वर्ष पुराने भूरीबा जैन उपाश्रय का नवीनीकरण हेतु खात मुर्हूत दिनांक 16 फरवरी को किया गया। पूज्य पंन्यास श्री धर्मविजयजी डहेला वाला के द्वारा प्रस्थापित उपाश्रय का भूमि-खनन पूजन विधि शुभवेला में पूज्य गच्छाधिपति आचार्य देवेश श्री अभयदेवसूरीजी म.सा., आचार्यश्री मोक्षरत्नविजयसूरीजी म.सा. आदि ठाणा की निश्रा में सम्पन्न हुई।

अनुयोगाचार्य वीररत्नविजयजी अब वीररत्नसूरीश्वरजी कहलाएंगे

* जैन समाज : शिवपुर जैन तीर्थ में पांच दिनी आचार्य पद समारोह हुआ : बड़ी संख्या में समाजजन हुए शामिल

चापड़ा- जैन तीर्थ शिवपुर में पांच दिवसीय आचार्य पद समारोह हुआ। 5 फरवरी को अनुयोगाचार्य श्री वीररत्न विजयजी महाराजा का सूरी पद प्रदान उत्सव सकल श्रीसंघ की उपस्थिति में हुआ। अनुयोगाचार्य का नूतन आचार्य भगवंत नाम अब आचार्यदेव श्री वीररत्न सूरीश्वरजी महाराज घोषित हुआ।

सूरी पदवी शुभ विधान का प्रारंभ तपस्वी रत्न पूज्य आचार्य देवश्री पद्म भूषण रत्नसूरीजी महाराज ने करवाया। आचार्य पदवी के समय पूज्य गच्छनायक राजेन्द्रसूरीजी महाराज द्वारा प्रेषित सूर्य मंत्र पट आसन आदि लाभार्थी परिवारों द्वारा लाभ लेकर प्रदान किया गया। सूरी पद प्रदान के बाद सभी श्रद्धालु एवं श्रीसंघ ने चंदन के चूर्ण एवं चावलों से साधु-साध्वियों समेत नूतन आचार्य को बधाया। आचार्य श्री वीररत्न सूरीश्वरजी महाराज ने पदवी के बाद अपने उद्बोधन में कहा- कि मालवावासियों ने आज तक मुझे उंचा उठाया है। आगे भी और ऊंचा उठाना है, नीचे गिरने नहीं देना है। पूज्यश्री ने आगे के महत्वपूर्ण कार्यक्रमों एवं योजनाओं का प्रारुप समझाया। आज तक शेर सोया हुआ था। अब जाग गया है और पूरी सेना के साथ मौजूद है। आचार्यश्री ने बताया कि गुरु की कृपा से व्यक्ति आगे बढ़ सकता है। पूज्यश्री के ऊपर बड़े गुरुओं की असीम कृपा रही है। इसके फलस्वरुप आज इतने प्रभावकारी सम्पन्न हुए हैं। मुनिश्री ऋषभविजयजी, मुनिश्री तीर्थरत्न, मुनिश्री निरागरत्न विजयजी, मुनिश्री त्रिपदोरत्नविजयजी, मुनिश्री जिनागम रत्न विजयजी आदि सभी ने प्रवचन दिये।

आंबली प्रतिष्ठा में श्री महा विदेह धाम तथा गुरु समाधि मंदिर की प्रतिष्ठा

सूरत-पूज्यपाद जयघोषसूरि समाधि मंदिर प्रतिष्ठा के प्रसंग पर पूज्य दीक्षादानेश्वरी आ.श्री गुणरत्न सूरीश्वरजी म.सा. के दिव्य आर्शीवाद से और आजीवन गुरुगुण चरणोपासक श्रमणी गणनायक आचार्य श्री रश्मिरत्न सूरीश्वरजी म.सा. के मार्गदर्शन में सूरत -वेसू में विशाल वैयावच्च संकुल निर्माण हुआ है। श्री दीक्षा दानेश्वरी संयम तीर्थ महाविदेहधाम में शंखेश्वर पार्श्वनाथ जिनालय अंजनशलाका प्रतिष्ठा व पूज्य गुणरत्नसूरीजी समाधि मंदिर प्रतिष्ठा का मुर्हूत तपागच्छाधिपति आ.श्री मनोहरकीर्तिसागरसूरि म.सा. पू.आ.श्री जगच्चंद्रसूरि म.सा. आदि 40 भगवंतों एवं 1200 साधु-साध्वी भगवंतों की निश्रा में पूज्यपाद सरस्वती लब्धप्रसाद राजप्रतिबोधक पद्मभूषण आचार्य श्री रत्नसुंदर सूरीश्वरजी म.सा. ने स्वर्ण स्याही में लिखे मुहूर्तपत्र का वांचन किया। वि.सं. 2080 महा सूद-13 दिनांक 22-2-2024 गुरुवार को प्रतिष्ठा है।

शेरड़ी में दीक्षा महोत्सव हुआ

शेरड़ी- कच्छ जिलान्तर्गत मांडवी तालुका स्थित शेरड़ी में श्री शेरड़ी जैन महाजन व संघमाता नवलबेन भाणजी माणेक पासड़ परिवार शेरड़ी के संयुक्त तत्वावधान में शेरड़ी अंजन-प्रतिष्ठा अंतर्गत 31 जनवरी से 4 फरवरी 2023 तक दीक्षा पंचान्हिका महोत्सव राजस्थान अचल गच्छाधिपति प. पू. आ. भगवंत श्री कलाप्रभसागर सूरीजी म.सा. आदि शताधिक श्रमण-श्रमणी वृंद की पावनतम निश्रा में बड़े ही उत्साह के साथ सम्पन हुआ। राजस्थान पचपदरा निवासी ब्राह्मण कुलभूषण मुमुक्षु राजकुमार कन्हैयालालजी देवेरा (शर्मा) एवं राजस्थान विजयनगर अजमेर निवासी मुमुक्षु ज्योतिकुमारी कमलेश कुमारजी पोखरना की भागवती दीक्षा 4 फरवरी को सम्पन्न हुई। मुमुक्षु राजकुमार गुरुदेव जिन शासन शिरोमणी, अचल गच्छाधिपति आचार्य देव श्री गुणोदय सागर सूरीजी म. सा.के अंतिम शिष्यरत्न मुनिराज श्री गच्छोदय सागरजी म.सा. के श्री चरणों में अपना जीवन समर्पण करेंगे। मुमुक्षु ज्योतिकुमारी पोखरना पू. गुरुवर्या श्री आर्य रक्षिता श्रीजी म.सा.के गुरुकूल वास में अपना जीवन अर्पण करेगी।

गिरनारजी में 108 नव्वांणु यात्रा होगी

चैन्नई- श्री आदिनाथ जैन ट्रस्ट के तत्वावधान में श्री गिरनार महातीर्थ में 108 नव्वांणु यात्रा का भव्य आयोजन होने जा रहा है। अध्यात्म योगी श्री महेन्द्रसागरजी म.सा. आदि ठाणा की निश्रा में यात्रा का आरंभ दिनांक 22 फरवरी 2023 को होगा। संघमाल 26 मार्च को होगी।

85 वें संयम वर्ष में 8 हजार 500 आयोजन देशभर के जैन श्री संघ में कर वर्ल्ड रिकार्ड बनेगा संयम मेरु महोत्सव

* पूना में 200 साधु साध्वी भगवंत के साथ भव्य चार्तुमास का आयोजन।
* सम्पूर्ण देश से विहार कर साधु-साध्वी पूना पहुंचेंगे।
* संघ हितचिंतक जैनाचार्य श्री हर्षसागरसूरीजी के प्रयास की अनुमोदना।

पूना-परम पावन जिनशासन की शान सागर समुदाय के जैन जगत में सर्वोच्च रुप से वरिष्ठतम संघ स्थविर सुविशाल सागर समुदाय के गच्छाधिपति गीतार्थ मूर्घनय जिनागाम सेवी आचार्य भगवंत श्री पूज्यपाद श्री दौलतसागरसूरीजी महाराजा के 85 वर्ष संयम जीवन के पूर्ण होने पर एक वर्ष तक संयम मेरु महोत्सव में 8 हजार 500 जिनशासन प्रभावक कार्यो से वर्ल्ड रिकार्ड बनेगा ऐसा युग प्रभावक महोत्सव मनाने की भव्य तैयारियां चल रही है। आगामी चार्तुमास उपरांत अति भव्य रुप से ऐसा परम शासन प्रभावक पूज्यश्री का 85 वां विराट संयमोत्सव मनाया जायेगा। यह आयोजन आगामी चार्तुमास की पूर्णाहुति के उपरांत लगभग अक्टूबर-नवंबर 2023 में होने के संबंध में व्यापक विचारण चल रहा है। इसके पूर्व आपश्री की निश्रा में पूना में सागर समुदाय के लगभग 200 से अधिक गुरु भगवंतों, साधु-साध्वीजी का भव्य चार्तुमास होने के लिये व्यापाक तैयारियां पत्र व्यवहार आदि चल रहा है। चार्तुमास से जुड़ने के लिए भारत के चारों कोने से साधु-साध्वी भगवंतों 100 से 1000 किलोमीटर का विहार कर पूना पहुंचने के लिये तत्पर है। जैनत्व के इतिहास में स्वर्णाक्षरों से अंकित हो ऐसा ऐतिहासिक और भव्य चार्तुमास के साथ पूज्यपादश्री का 85 वां संयमोत्सव मनाने के भव्य संघ हित चिंतक पूज्यपाद आचार्य भगवंत श्री हर्षसागर सूरीजी महाराजा के मन में आया और अब वह क्रियान्वित भी होने जा रहा है। पूना के श्री संघ इस संयमोत्सव के लिये जी-जान से जुड़ रहे है और तन-मन-धन से पूर्ण समर्पित जिन शासन संरक्षण हित की भावना से जाग्रत होकर तैयारी में जुड़ गये हैं।

आगम मंदिर पूना में 27 वां ध्वजारोहण हुआ

पूना- श्री वर्धमान जैन आगम मंदिर तीर्थ पूना कात्रज में प्रभुवीर के भव्य जिनप्रसाद पर 27 वें ध्वजारोहण का आयोजन 3 से 5 फरवरी तक किया गया। पूज्यपाद श्रमण परम्परा संवाहक संघावत्सल, संघ हितैषी, संघ कौशल्यधार संघ स्थिवर, परम अप्रमत्तयोगी, निर्ग्रन्थ शिरोमणी, पूज्यपाद जिनागम सेवी सुविशाल सागर समुदाय के गच्छाधिपति आचार्य भगवंत श्री दौलतसागर सूरीश्वरजी महाराजा अजात शत्रु पूज्यपाद आचार्य भगवंत श्री नंदीवर्धनसागर सूरीश्वरजी पूज्य आचार्य भगवंत श्री हर्षसागरजी महाराजा आदि विशाल संख्या में साधु-साध्वीवृंद की अमृत निश्रा में महासुद-15 दिनांक 5 फरवरी को लाभार्थी परिवार के द्वारा ध्वजा चढ़ाई गई।

गणिवर्य श्री जिनरत्न विजयजी को पंन्यास पद प्रदान किया

पाली-श्रीमद् विजय जिनोत्तम सूरीजी म.सा. के सन्तेवासी सुशिष्य गणिवर्य श्री जिनरत्नविजयजी म.सा. को पाली में श्री जैन शासन सेवा ट्रस्ट के तत्वावधान में 16 फरवरी को पंन्यास पद पर आरुढ़ किया गया। दिनांक 12 फरवरी को आयोजित पद प्रदान महोत्सव में श्री नाकोड़ा पार्श्व भैरव महापूजन महाभिषेक श्री शंखेश्वर पार्श्वनाथ महापूजन के आयोजन हुए। दिनांक 16 फरवरी को पूज्य आचार्यश्री के द्वारा प्रातः काल शुभबेला में पद प्रदान की क्रिया विधि सम्पन्न करवाकर पंन्यास पद प्रदान किया गया। 17 फरवरी को द्वारोद्घाटन और सत्तरभेदी पूजन के साथ कार्यक्रम की पूर्णाहुति हुई।

वचनसिद्ध प्रतिष्ठाचार्य श्री नरदेवसागर सूरीजी ने तनोड़िया में श्री शांतिनाथ प्रभु जिनालय की प्रतिष्ठा करवाई

तनोड़िया- श्री शांतिनाथ प्रभु के प्राचीन जिनमंदिर का जीर्णोद्धार के उपरांत भव्य पंचान्हिका प्रतिष्ठा महोत्सव दिनांक 28 फरवरी से 4 मार्च के मध्य सम्पन्न हुआ। पूज्यपाद प्रतिष्ठाचार्य वचनासिद्ध आचार्य भगवंत श्री नरदेवसागर सूरीश्वरजी म.सा., आचार्यदेव श्री विश्वरत्नसागर सूरीश्वर जी म.सा., मुनिश्री पद्मकीर्ति सागरजी म.सा., मुनिश्री उज्जवलरत्न सागरजी म.सा., मुनिश्री लब्धिरत्न सागरजी म.सा. आदि ठाणा के साथ साध्वीवर्या श्री स्वर्णज्योति श्रीजी म.सा. आदि ठाणा की मंगल निश्रा रही। दिनांक 28 फरवरी को गुरु भगवंतों का मंगल प्रवेश के बाद 1 मार्च फाल्गुन शुक्ल-10 के कुंभदीप स्थापना आदि कार्यक्रम हुए। 1 मार्च को पाअला नंदापति वीशस्थानक पूजन हुई। 3 मार्च फाल्गुन शुक्ल-(द्वि.) 11 को प्रातःकाल शुभ वेला में पूज्य गुरु भगवंत के वरद हस्ते पावनकारी प्रतिष्ठा सम्पन्न हुई। दिनांक 4 मार्च को प्रातःकाल द्वारोद्घाटन और सत्तरभेदी पूजन के साथ महोत्सव की पूर्णाहुति हुई।

लखनऊ में श्री माणिभद्रजी की प्रतिमा प्रतिष्ठित की गई

लखनऊ- लखनऊ के चौक में स्थित श्री पद्मप्रभस्वामीजी के जिनालय में श्री माणिभद्रवीर की मंगल मूर्ति एवं कलश की प्रतिष्ठा एवं जिनालय का ध्वजारोहण त्रिदिवसीय महोत्सव का आयोजन किया गया। शासनरत्न श्री मनोजकुमार बाबूमलजी हरण सिरोहीवाला की प्रेरणा मार्गदर्शन में दिनांक 16 से 18 फरवरी तक आयोजित महोत्सव में उत्थापन विधि कुंभ स्थापना पाटला पूजन हुई। 18 अभिषेक भी हुए। दिनांक 18 फरवरी को ध्वजारोहण, वरघोड़ा आयोजित किया गया। शुभबेला में प्रतिष्ठा विधान सम्पन्न हुआ, सत्तरभेदी तथा श्री शांतिस्नात्र महापूजन पढ़ाई गई।

✻ दीनबन्धु की दृष्टि ही ऐसी है कि छूटने की इच्छावाले को बांधना नहीं और बंधने की इच्छावाले को छोड़ना नहीं।

कलोल में श्री सुमतिनाथ प्रभु जिनालय की प्रतिष्ठा हुई

कलोल- श्री नित्य-आनंद मूर्तिपूजक जैन संघ में नवनिर्मित श्री सुमतिनाथ प्रभु के भव्य शिखरबंध जिन प्रसाद का प्रतिष्ठा महोत्सव विगत दिनों सम्पन्न हुआ। तपागच्छ प्रवर समिति कार्यवाहक पूज्यपाद गच्छाधिपति आचार्य भगवंत श्री अभयदेवसूरीजी महाराज, आचार्यदेव श्री मोक्षरत्न सूरीश्वरजी म.सा. आदि विशाल संख्या में उपस्थित साधु-साध्वी भगवंतों की अमृत निश्रा में प्रतिष्ठा महावद-4 (द्वि.) दिनांक 10 फरवरी को प्रातःकाल शुभवेला में पूज्यश्री के वरद हस्ते सम्पन्न हुई। सामायिक मंगल प्रवचन हुए।

करोड़ों की संपत्ति त्याग कर मुमुक्षु अरिहा बने साध्वी श्री आत्मज्ञानीरेखाश्रीजी

पानसरतीर्थ- यहाँ भगवान श्री महावीर स्वामी के मंगल तीर्थ सानिध्य में पूज्य 451 दीक्षा दानेश्वरी आ.भ.श्री गुणरत्नसूरीश्वरजी म.सा. के दिव्य आर्शीवाद से उनके आजीवन चरणो पासक श्रमणीगणनायक आ.भा रश्मि रत्न सूरीश्वरजी म.सा. आदि 100 साधु-साध्वीजी भगवंत की मंगल निश्रा में चाणस्मा निवासी सेठ श्री चंपकलाल शांतिलाल शाह द्वारा आयोजित मुमुक्षु अरिहा भद्रेशभाई शाह की दीक्षा का पंचान्हिका महोत्सव शासन प्रभावना पूर्वक हुआ। मुनि श्री यशरत्नविजयजी म.सा.की गणि पदवी हुई। मुमुक्षु परिवार की एक ही मंगल भावना थी कि जैन प्राचीन तीर्थ में जुड़े और तीर्थवासी जैन धर्म के प्रति अहोभाव हो, इस लक्ष्य को ध्यान में रखते हुए परिवार ने महोत्सव के शुरु होने से पहले 2700 जैनेतर घरों में एक स्टील की बरणी, 500 ग्राम मिठाई, पूंजणी, गरणु और प्रेमभरा निमंत्रण दिया। समैया में 200 बालिकाओं ने सिर पर कलश लिए और 100 बालकों ने शासन ध्वज लेकर आए। वर्षीदान वरघोड़ा में दस हजार से अधिक ग्रामवासी शामिल हुए। प्रतिदिन 1000-2000 लोगों को महावीर प्रसादी दी जाती थी। हर दिन भव्य महापूजा हुई। 700 लोग विदा करने आए।

चार्तुमास- पूज्य पंन्यास प्रवर श्री लब्धिवल्लभविजयजी म.सा. का वर्ष 2023 का चार्तुमास ईटला जैन संघ मुंबई में होगा।

श्री केशरियाजी महातीर्थ में चैत्र ओली वागड़ भूषण जैनाचार्य श्री मृदुरत्नसागर सूरी जी की निश्रा में

*** देशभर के ओली आराधकों को भावभरा आमंत्रण । * ओली 29 मार्च से 6 अप्रेल तक । * सभी का बहुमान होगा : प्रभुवीर का जन्म कल्याणक मनाया जायेगा । * आगामी चार्तुमास कांदिवली मुंबई में होगा ।**

अहमदाबाद- 21 फरवरी कलिकुंड तीर्थ में आपश्री की महामांगलिक हुई । 24-25 फरवरी अदाणी शांतिग्राम जैन देरासर अहमदाबाद में श्रीपरेशभाई तथा अल्केशभाई की स्मृति में श्री सिद्धचक्र महापूजन हुई। 26 फरवरी रविवार को निर्णयनगर जैन संघ नवा वाडज अहमदाबाद में स्थिरता रही। यहां मुनि श्री ऋषभरत्नसागरजी म.सा. की बड़ी दीक्षा हुई। पूज्यश्री की 10 मार्च तक अहमदाबाद में स्थिरता है इसके बाद चैत्री ओली की आराधना श्री केशरियाजी तीर्थ में करवाने के लिये विहार होगा।

श्री पाल मयणा सुन्दरी ने जिन परमात्मा के समक्ष नवपद आराधना की थी, ऐसे श्रीकेशरियाजी प्राचीन महातीर्थ में चैत्र मास की शाश्वती नवपद ओली आराधना का आयोजन केशरियाजी तीर्थ में होने जा रहा है। आराधना 29 मार्च से आरंभ होकर 6 अप्रेल को पूर्ण होगी। दिनांक 4 अप्रेल को वर्तमान शासन अधिपति श्री महावीरस्वामीजी का जन्म कल्याणक भी भव्य रुप से मनाया जायेगा । आराधना पूज्यपाद गुरुदेव मालव भूषण आचार्य भगवंत श्री नवरत्न सागरसूरीजी महाराजा के सुशिष्य आचार्य देवेश वागड़ नरेश श्री मृदुरत्न सागरसूरीजी म.सा., उपाध्याय प्रवर श्री वैराग्यरत्नसागरजी म.सा. पू. मुनिश्री मोक्षरत्न सागरजी म.सा. पू. मुनिश्री पदमरत्न सागरजी म.सा. आदि ठाणा के साथ पूज्य साध्वीवर्या श्री शशिप्रभा श्रीजी म.सा. की सुशिष्या साध्वी चारुधर्मा श्रीजी म.सा. साध्वी श्री विपुलप्रज्ञा श्रीजी म.सा.आदि ठाणा की अमृत निश्रा रहेगी। सभी आराधकों का बहुमान किया जायेगा । सम्पर्क- 9414105166-8770884897

गोवा में भव्य जैन भवन का भूमि पूजन हुआ

मड़गांव-श्री सुमतिनाथ जैन श्वेतांबर मंदिर पांजिफोड़ा में दिनांक 4 फरवरी को भव्य जैन भवन के निर्माण के लिये भूमि पूजन का आयोजन अंतर्राष्ट्रीय जैन विधिकारक भाई मनोज कुमार बाबूमलजी हरण के मार्गदर्शन और प्रेरणा से श्रीमती अजबदेवी गणेशलाल दावरा परिवार के श्री शेखर दावरा के द्वारा किया गया। यह भवन बहुउद्देश्य को ध्यान में रखकर निर्माण किया जायेगा। पूज्य गुरु भगवंतों का मंगल आर्शीवाद इस हेतु प्राप्त हुआ है।

पूज्य जैनाचार्यश्री पूर्णचंद्र सूरीजी का संयम के 52 वर्ष में प्रवेश

मुंबई-पूज्यपाद श्री कलापूर्ण सूरीजी महाराजा के 5 वें सुशिष्य, 35 हजार गाथा श्लोक को कंठस्थ करनेवाले, 100 पुस्तक के रचित भारत भर में जिनशासन की प्रभावना करने वाले पूज्य जैनाचार्य श्री पूर्णचंद्र सूरीजी म.सा. ने संयम जीवन के 52 वें वर्ष में विगत दिनों प्रवेश किया । डोंबिवली ईस्ट में श्रीमुनि सुव्रत स्वामी जिनालय की 9 वीं ध्वजा भी चढ़ाई गई इसके साथ ही श्री नमिनाथ जिनालय डोबिंवली वेस्ट में भी आपका आगमन 7 फरवरी को हुआ। इन प्रसंगों पर पूज्य आचार्य श्री कीर्तिरत्नसूरीजी, श्री हेमचंद्रसूरीजी,श्री आनंदवर्धन सूरी जी, श्री आत्मदर्शनसूरीजी आदि ठाणा के साथ साध्वी श्री इन्द्रवंदिता श्रीजी म.सा. आदि ठाणा की निश्रा रही।

अयोध्यापुरम् से श्री सिद्धाचल महातीर्थ का छ:रि पालित संघ निकलेगा

पूज्य आचार्य भगवंत श्री जितरत्न सागरसूरीजी म.सा.आदि ठाणा और साध्वीवर्या श्री शासनज्योतिश्रीजी म.सा. आदि ठाणा की निश्रा में अयोध्यापुरम् से श्री सिद्धाचलजी महातीर्थ के लिये छःरिपालित यात्रा संघ का आयोजन 6 से 12 अप्रेल तक किया जायेगा।

**** परन्तु वह ध्यान आत्मा सत्पुरुष के चरण कमल की विनयोपासना किये बिना पा नहीं सकता।***

हमारे तीज-त्यौहार

1- फाल्गुन सुदी-13	रविवार	05-3-2023	श्री सिद्धाचलजी की छः गांव यात्रा
2- फाल्गुन सुदी-14	सोमवार	06-3-2023	चौमासी चवदस
3- चैत्र वदी-3	शुक्रवार	10-3-2023	पूज्यपाद गुरुदेव श्री नवरत्नसागरसूरीजी महाराजा का 80 वां जन्म दिन
4- चैत्र वदी-4	शनिवार	11-3-2023	श्री पार्श्वप्रभु का चयवन एवं केवलज्ञान कल्याणक
5- चैत्र वदी-6	सोमवार	13-3-2023	पूज्यपाद मालवोद्धारक जैनाचार्य श्री चन्द्रसागर सूरीजी महाराजा देवलोकगमन दिन (सं.2018)
6- चैत्र वदी-7	मंगलवार	14-3-2023	मीनार्क कुमुर्हूता आरंभ
7- चैत्र वदी-8	बुधवार	15-3-2023	श्री ऋषभदेव प्रभु का जन्म दीक्षा कल्याणक वर्षीतप आरंभ
8- चैत्र वदी-9	गुरुवार	16-3-2023	पूज्य पंन्यास प्रवर श्री अभ्युदयसागरजी म.सा. का देवलोक दिन (सं.2044)
9- चैत्र सुदी-8	बुधवार	29-3-2023	नवपद ओली आरम्भ
10- चैत्र सुदी-10	शुक्रवार	31-3-2023	गुरु पश्चिम में अस्त

पुष्प नक्षत्र :- **आरम्भः-** फाल्गुन सुदी-11, शुक्रवार, दिनांक 3-3-2023, समय- 15.44 बजे से
समाप्तः- फाल्गुन सुदी-14, शनिवार, दिनांक 4-3-2023, समय- 18.43 बजे तक

पंचक :- **1- आरम्भः-** चैत्र वदी-12, रविवार, दिनांक 19-3-2023, समय- 11.18 बजे से
समाप्तः- चैत्र सुदी- 2, गुरुवार, दिनांक 23-3-2023, समय- 14.09 बजे तक
3- आरम्भः- चैत्र सुदी-9, गुरुवार, दिनांक 30-3-2023, समय- 23.00 बजे से
समाप्तः- चैत्र सुदी- 13, शनिवार, दिनांक 04-4-2023, समय- 01.58 बजे तक

आगमोद्धारक का अप्रेल 2023 अंक महावीर जन्म कल्याणक विशेषांक होगा। आपकी रचनाएं भजिए।

सारे देश में आगमोद्धारक प्रतिनिधि नियुक्त करना है

जैन जगत की प्रतिष्ठित, प्रसिद्ध मासिक पत्रिका आगमोद्धारक के सदस्यता अभियान के लिये सारे देश में प्रतिनिधियों की नियुक्ति की जा रही है। सक्रिय युवा भाई-बहन जो जिनशासन के प्रचार-प्रसार हेतु अपनी सेवा देना चाहते है वे तुरन्त निम्न पते पर संपर्क करें।

प्रतिनिधि को कम से कम 25 सदस्य बनाना आवश्यक है। आपकी सहमति प्राप्त होने पर रसीद कट्टे एवं प्रचार-प्रसार सामग्री आपको भेजी जायेगी। सम्पादक से सम्पर्क करें।

सादर आमंत्रण

✻ पूज्य साधु-साध्वीजी से विनंती है कि आपके चार्तुमास एवं सभी धार्मिक कार्यक्रमों की जानकारी एवं धार्मिक महोत्सव की सूचना आगमोद्धारक तक पहुंचाने का कष्ट करें, ताकि अंक आपको लगातार भेजा जा सके तथा समाचार प्रकाशित किया जा सकें।

✻ आगमोद्धारक के लिये आपकी रचनाएं भी प्रकाशन के लिये निरंतर भेजते रहे। आपकी रचना से हम प्रोत्साहित होंगे।

✻ पत्रिका को और अच्छा बनाने के लिये आपके सुझाव, मार्गदर्शन भी भेजते रहे ताकि आगमोद्धारक की गुणवत्ता बढ़ाई जा सके।

✻ अंक आपके तक नियमित रुप से नवीन स्वरुप के साथ 10 तारीख तक पहुंचे ऐसा हमारा प्रयास रहता है, अंक अप्राप्ति पर शीघ्र सूचित करें।

- सम्पादक

वर्ष 28 | फाल्गुन–चैत्र | मार्च–2023 | अंक 3 (मासिक) | प्रकाशन उज्जैन

आर.एन.आई. नं. 0048570/29/30/1982
पोस्ट मालवा डिवीजन पी.आर.एन.नं.एम.डी. 08/2021–2023

प्राप्त न होने पर कृपया लौटायें-

डॉ. सुभाष जैन (संपादक)
46, सखीपुरा, उज्जैन – 456001 (म.प्र.)
मो. 94250-91012, 8770884897
Email : subash_3333@yahoo.co.in, subhashjain@gmail.com

बुक पोस्ट

प्रति,

श्रीमान् ....

....

....

स्टाम्प टिकिट

श्री अभ्युदय फाउण्डेशन उज्जैन के लिये डॉ. सुभाष जैन – संपादक द्वारा प्रकाशित एवं एम.बी. ऑफसेट प्रिंटर्स, 285, एम.जी.रोड, इन्दौर से मुद्रित। फोन : 0731-2412232, संपादक मो. 94250-91012, 8770884897